New Release

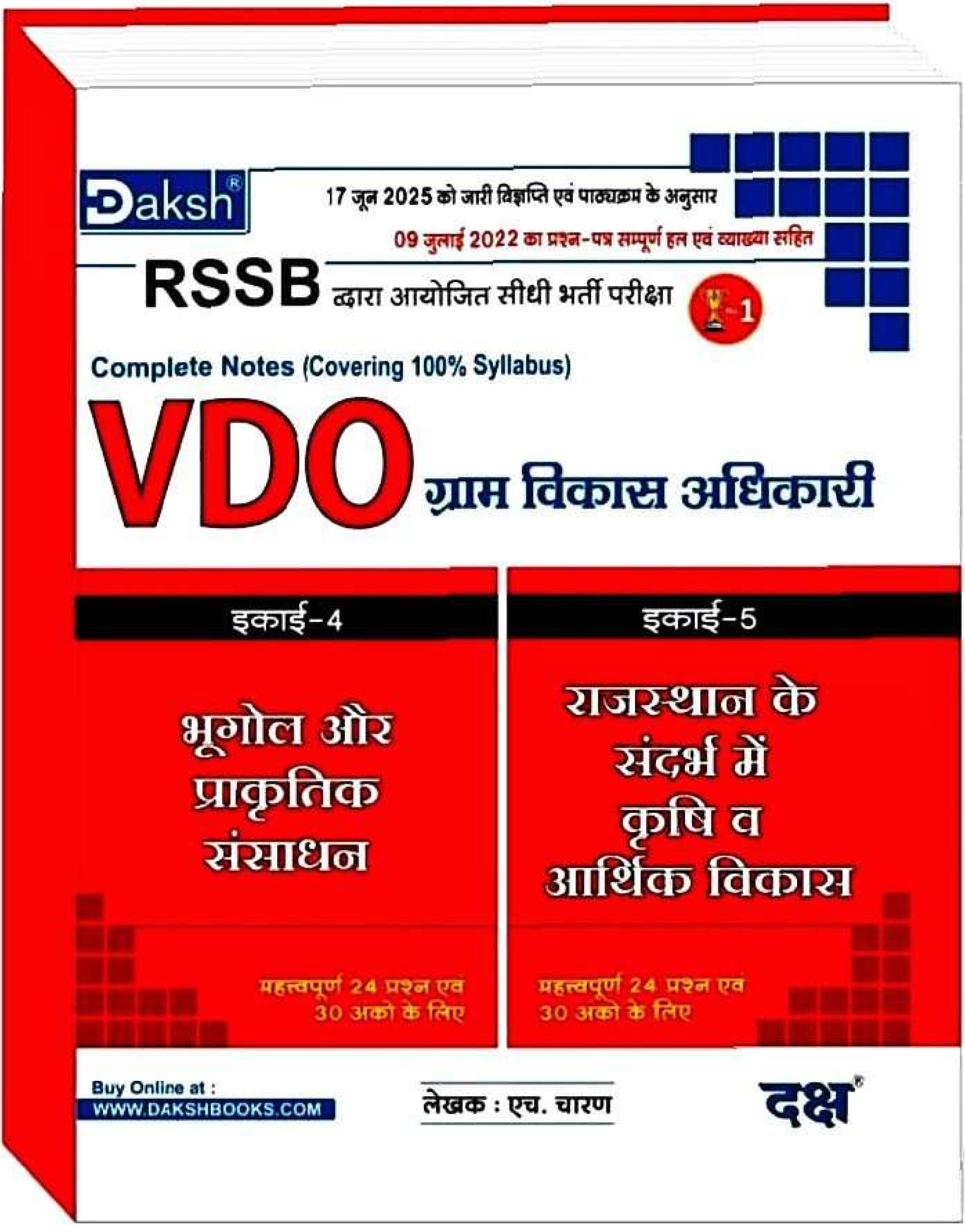
Daksh®
17 जून 2025 को जारी विज्ञप्ति एवं पाठ्यक्रम के अनुसार
09 जुलाई 2022 का प्रश्न-पत्र सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित
RSSB द्वारा आयोजित सीधी भर्ती परीक्षा
1
Complete Notes (Covering 100% Syllabus)
VDO ग्राम विकास अधिकारी
इकाई-4
भूगोल और प्राकृतिक संसाधन
महत्त्वपूर्ण 24 प्रश्न एव 30 अको के लिए
इकाई-5
राजस्थान के संदर्भ में कृषि व आर्थिक विकास
महत्त्वपूर्ण 24 प्रश्न एव 30 अको के लिए
Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM
लेखक : एच. चारण
दक्ष®

1 संसार के व्यापक भौगोलिक क्षेत्र, महत्त्वपूर्ण स्थान, नदियाँ, पहाड़ व महाद्वीप [Wide Geographical Area of the World, Important Places, Rivers, Mountains and Continents]

- सर्वप्रथम वेगनर महोदय महाद्वीप एवं महासागर की उत्पत्ति की स्पष्ट व्याख्या करने में सफल हुए। वेगनर के अनुसार कार्बोनीफेरस युग में संसार के सभी देश आपस में जुड़े हुए थे, जो एक महान स्थल खण्ड **पेंजिया** के रूप में विद्यमान था, पेंजिया के चारों ओर एक विशाल सागर था, जिसे वेगनर ने **पैंथालासा** कहा।
- आस्ट्रेलिया, अंटार्कटिका, प्रायद्वीपीय भारत, अफ्रीका एवं दक्षिणी अमेरिका मिलकर इस स्थलखंड के दक्षिणी भाग का निर्माण करते थे, जिसे वेगनर ने **गोंडवानालैंड** कहा है। उत्तरी अमेरिका, यूरोप एवं एशिया इस स्थलखंड के उत्तरी भाग थे, जिसे **अंगारालैंड** या **लारेशिया** कहा जाता है। इन दोनों खण्डों के बीच टेथिस सागर स्थित था।
- कार्बोनीफेरस युग में पेंजिया का विखण्ड़न प्रारंभ हुआ। महाद्वीपों का वर्तमान रूप पेंजिया के विखण्ड़न एवं इस विखंडित स्थल खण्डों के विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होने के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है।

विश्व के महाद्वीप एवं महासागर (Continents and Oceans of the World)

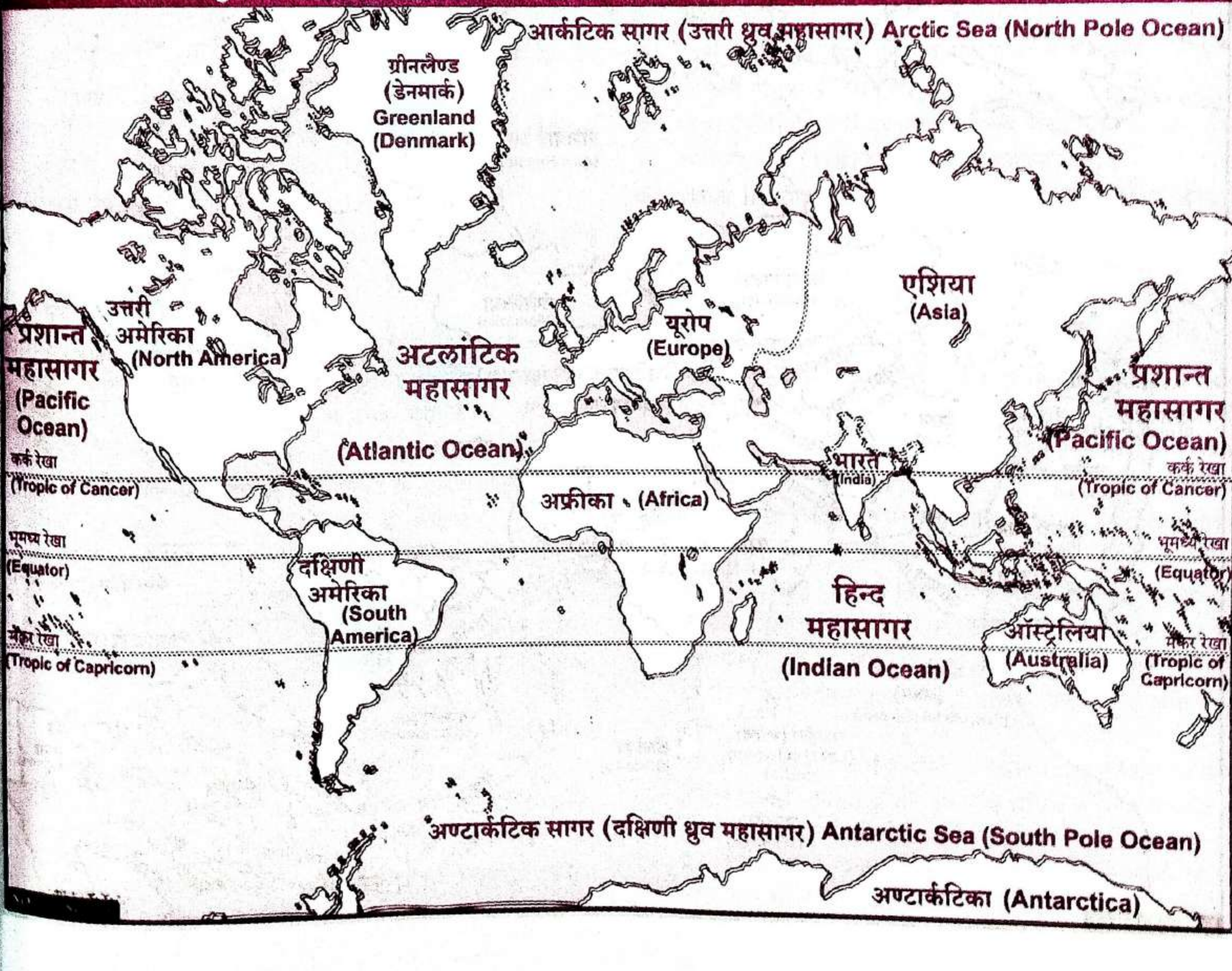

एशिया महाद्वीप में स्थित प्रमुख पठार एवं बेसिन

क्र.सं.	नाम (अवस्थिति)	विशेषता/तथ्य/महत्व
1.	**तिब्बत का पठार** (अन्तरापर्वतीय पठार)-चीन [VDO प्री 2021]	● यह पठार दक्षिण में **हिमालय** से एवं उत्तर में **क्युनलुन शान** पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। ● **विश्व का सबसे बड़ा पठार** (औसत ऊँचाई 4250 मीटर) है।
2.	**पामीर का पठार** (पामीर की गांठ, मध्य एशिया) कजाकिस्तान एवं किर्गिस्तान में स्थित	● यह भारतीय उप-महाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में अवस्थित है। यह पठार मध्य एशिया की पर्वत श्रेणियों के मिलन बिन्दु के रूप में विद्यमान है। यह महादेशीय क्षेत्रों में बिल्कुल ढांचागत रूप में विस्तारित है। ● यह **विश्व का सबसे ऊँचा पठार** है, इसलिए इसे **'विश्व का छत'** भी कहा जाता है। (औसत ऊँचाई 4,900 मीटर)।
3.	**आर्मेनियन पठार** (अर्मेनियन गांठ)	● यह **काला सागर** एवं **कैस्पियन सागर** के मध्य अवस्थित है।
4.	**यून्नान का पठार** (चीन)	● तिब्बत पठार के दक्षिण-पूर्व में स्थित यह पठार सियुआन के उपजाऊ मैदान से पर्वत श्रेणी के द्वारा अलग होता है।
5.	**तकला-मकान मरूभूमीय पठार** (चीन)	● यह एक अन्तरापर्वतीय मरूभूमीय-बेसिन का उदाहरण है। ● यह **तियान शान** (उत्तर में) एवं **क्युनलुन शान** एवं **तारीम बेसिन** (दक्षिण में) के बीच अवस्थित है।
6.	**लद्दाख का पठार** (अन्तरापर्वतीय पठार) भारत	● यह पठार काराकोरम (उत्तर दिशा में) एवं हिमालय (दक्षिण दिशा में) पर्वतमालाओं के मध्य भारत के लद्दाख क्षेत्र में अवस्थित है।
7.	**ईरान का पठार**	● यह एक केंद्रीय मरूभूमीय पठार है, जिसकी अवस्थिति उत्तर में **एलबुर्ज पर्वत** एवं दक्षिण पश्चिम में **जाग्रोस पर्वत** के मध्य में है।
8.	**मंगोलिया का पठार** (मंगोलिया-चीन)	● यह एक ऊँचा पठार है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 1,500 मीटर से 1,800 मीटर तक है। यह चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है इसके पूर्व में **खिंगन पर्वत**, दक्षिण में **अल्टाई शान** एवं **तियान शान पर्वत**, एवं पश्चिम में **अल्टाई** एवं उत्तर में **याब्लोनीवी पर्वत** में अवस्थित है।
9.	**शान का पठार** (म्यांमार)	● म्यांमार के पूर्वी क्षेत्र में **पेगु योमा** एवं **अरकान योमा पर्वत** के मध्य अवस्थित, इस पठार से होकर साल्वीन नदी बहती है। ● इस क्षेत्र में मुख्य रूप से **कीमती पत्थर (मानिक), चाँदी, शीशा, टिन** एवं **टंगस्टन** का भंडार है।
10.	**इन्डो-चीन का पठार** (द.पू. एशिया)	● दक्षिण-पूर्व एशिया में अवस्थित, इस पठार के अन्तर्गत **वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, थाइलैंड** एवं **म्यामांर** के कुछ भू-भाग सम्मिलित हैं।
11.	**दक्कन का पठार** (भारत)	● यह गंगा के मैदान के दक्षिण में पूर्वी घाट एवं पश्चिम घाट के मध्य अवस्थित है। ● दक्कन-पठार का उत्तर-पश्चिम भाग, **लावा निर्मित पठार** का एक उदाहरण है।
12.	**पोटवार का पठार** (पाकिस्तान) [VDO प्री 2021]	● यह पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी पंजाब प्रांत में स्थित है। यह सिंधु एवं झेलम नदियों के बीच स्थित है।
13.	**ब्लूचिस्तान का पठार** (पाकिस्तान)	● यह एक मरूभूमीय पठार है (900 मीटर ऊँचाई) एवं इसकी अवस्थिति किरथर श्रेणी के पश्चिमी में है।
14.	**अनातोलिया** (एशिया माइनर) या **तुर्की का पठार**	● **पोंटिक पर्वत श्रेणी** (उत्तर-पश्चिम में) एवं **टॉरस पर्वत श्रेणी** (दक्षिण-पश्चिम में) के मध्य अवस्थित है। इस पठार से होकर **दजला-फरात** नदियाँ बहती हैं।
15.	**लोएस पठार** (चीन)	● हवा द्वारा लाये गये बालू के महीन कण **लोएस** कहलाते हैं जो मरूभूमि सीमा से दूर भी निक्षेपित होते हैं ये कण चूनायुक्त लोम मिट्टी के रूप में बहुत उपजाऊ होते हैं। **ह्वांग-हो नदी** लोएस मैदान से होकर बहती है।लोएस पठार का **शांसी एवं शेसी क्षेत्र** एक विशाल कोयला भंडार के रूप में प्रसिद्ध है।
16.	**गोबी का पठार** (मंगोलिया-चीन)	● मंगोलियन पठार के दक्षिण-पूर्व में अवस्थित, इस का विस्तार क्षेत्र चीन के अंतर्गत भी आता है।
17.	**मेसोपोटामिया का मैदान** (ईरान)	● **टिग्रीस** एवं **यूफ्रेट्स नदी** द्वारा निर्मित मैदान, जो गेहूँ, बाजरा, तंबाकू एवं सूती वस्त्र उत्पादक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।
18.	**जुंगारियन बेसिन** (चीन)	● यह बेसिन क्षेत्र मंगोलिया के **अल्टई पर्वत** एवं **तिआन-शान पर्वत** क्षेत्र के मध्य में स्थित है।

✧ यह दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे लंबी नदी है जो चीन, म्यांमार, लाओस-थाइलैंड (प्राकृतिक सीमा बनाती हुई), कंबोडिया एवं वियतनाम से होकर बहती है।

❖ **इरावदी नदी—**
✧ यह म्यांमार की मुख्य नदी है। यह म्यांमार की उत्तरी पहाड़ियों से निकलकर दक्षिण में अंडमान सागर में गिरती है।
✧ इसकी सहायक नदी चिन्दविन है।
✧ **मांडले** नगर इसके किनारे पर स्थित हैं।

❖ **सालविन नदी—**
✧ म्यांमार की सबसे लम्बी नदी है।
✧ इसके पूर्व में एक सुनहरी त्रिभुज नाम का क्षेत्र है जो अफीम की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

❖ **यांगत्सी नदी—(यांग्टी-सी नदी)—**
✧ इसका उद्गम तिब्बत का पठार से होता है। यह **एशिया की सबसे लम्बी नदी** (5557 किमी.) है, जो सिचुआन बेसिन क्षेत्र से होकर गुजरती है।
✧ इस नदी के किनारे बसे चीन के प्रमुख नहर **शंघाई** एवं **वुहान** है।

❖ **सिंधु नदी—**
✧ इसका उद्गम मानसरोवर झील (तिब्बत, चीन) से होता है।
✧ यह विश्व की सबसे लम्बी नदियों में से एक, जो कैलाश श्रेणी (तिब्बत) के गार्ज से होकर बहती हुई भारत से होते हुए पाकिस्तान में बहकर अरब सागर में मिल जाती है।

❖ **गंगा नदी—**
✧ इसका उद्गम गंगोत्री हिमानी (उत्तराखंड) से होता है।
✧ अलकनंदा एवं भागीरथी नदी देवप्रयाग नामक स्थान पर संयुक्त होकर गंगा का निर्माण करती है।
✧ गंगा नदी की लंबाई 2525 किमी. है, जो भारत, बांग्लादेश में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

❖ **ब्रह्मपुत्र (सांगपो)—**
✧ इसका उद्गम स्थान तिब्बत का पठार है। भारत में प्रवेश करने के पहले तिब्बत में यह **सांग-पो नदी** के रूप में जानी जाती है।
✧ जो भारत में '**ब्रह्मपुत्र**' एवं बांग्लादेश में '**जमना**' कहलाती है।
✧ इसके किनारे भारत के शहर डिब्रूगढ़, तेजपुर, गुवाहाटी स्थित है।

❖ **दजला और फरात नदियाँ—**
✧ इनका उद्गम तुर्की के पठार से होता है। यह **ईराक** की दो प्रमुख नदियाँ है, जो दक्षिण-पूर्व की दिशा में बहते हुए नदमुख से होकर फारस की खाड़ी में गिरती है।

नोट—
✧ प्रशान्त महासागर में गिरने वाली एशिया की प्रमुख नदियाँ **ह्वागहों, आमूर, सीक्यांग एवं यांगटी-सी-क्यांग है।**
✧ आर्कटिक सागर में गिरने वाली एशिया की प्रमुख नदियाँ—**लीना, ओबे एवं येनेसी है।**

एशिया के प्रमुख सागर

❖ कारा सागर, लापतेव सागर, पूर्वी साइबेरियन सागर (आर्कटिक महासागर)
❖ बेरिंग सागर, आखोटस्क सागर, पीला सागर, पूर्वी चीन सागर, दक्षिण चीन सागर, सुलू सागर, फ्लौं सागर, तिमोर सागर (प्रशान्त महासागर)
❖ अराफुरा सागर (दक्षिण-प्रशांत महासागर)
❖ **लाल सागर** (हिंद महासागर) एशिया को अफ्रीका महाद्वीप से अलग करता है।

एशिया में स्थित प्रमुख झीलें

क्र.सं.	नाम	विशेषता/तथ्य/महत्व
1.	अरल सागर	● **कजाकिस्तान** एवं **उजबेकिस्तान** के मध्य अवस्थित। ● दो मुख्य मध्य एशियाई नदियाँ **अमूदरिया** एवं **सिरदरिया** अरल सागर में जाकर गिरती है।
2.	बाल्कश झील	● इस झील के उत्तर में **कारागन्डा कोयला** क्षेत्र स्थित है। यह झील कजाकिस्तान में स्थित है।
3.	बैकाल झील (रूस)	● पूर्वी साइबेरियाई क्षेत्र के दक्षिण और रूस के याब्लोनोवी पर्वत श्रेणी के पश्चिम में अवस्थित यह **विश्व की सबसे गहरी झील** (गहराई 1,620 मीटर) है। यह **लीना नदी** का उद्गम स्थल भी है।
4.	कैस्पियन सागर	● **संसार की सबसे बड़ी झील** (सुपीरियर झील से पाँच गुना बड़ी), जो यूरोप को एशिया से पृथक करती है।
5.	वान झील (टर्की)	● **विश्व की सर्वाधिक लवणीय झील** व तुर्की की सबसे बड़ी झील।
6.	टुर्नूल झील	● पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी के सुदूर उत्तर में स्थित।
7.	असद झील	● सीरिया में अवस्थित मध्य पूर्व की प्रमुख झील।
8.	मृत सागर (Dead sea) (जॉर्डन-इजरायल)	● यह जार्डन के पश्चिमी किनारे तक विस्तारित झील है। यह एक **भ्रंश घाटी** निर्मित झील का उदाहरण है। ● इसमें एशिया एवं विश्व का सबसे निम्नतम स्थान (बिन्दु) स्थित है। जार्डन नदी मृत सागर में गिरती है।
9.	लॉपनॉर झील	● चीन की खारे पानी की झील जो परमाणु परीक्षण का स्थल भी है। **तारीम नदी** इस झील में गिरती है।
10.	टोबा झील	● सुमात्रा (इंडोनेशिया) में स्थित, क्रेटर या कैल्डेरा झील का उदाहरण है।
11.	टोनले सैप झील	● कम्बोडिया के केन्द्रीय निम्न भूमि पर अवस्थित, दक्षिण पूर्वी एशिया की महत्त्वपूर्ण झील।

एशिया के प्रमुख खनिज

कोयला

- ❖ एशिया में कोयले के विशाल भंडार है। एशिया में कोयला भंडारों की दृष्टि से रूस, चीन, यूक्रेन एवं भारत का प्रमुख स्थान है।
- ❖ कोयला उत्पादन की दृष्टि से विश्व में **चीन** का प्रथम स्थान है।
- ❖ एशिया के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्र निम्न है—
  - ✧ शांसी व शेंसी, मंचूरिया एवं फूसान क्षेत्र — **चीन**
  - ✧ इर्कुटस्क, अंगारा-इलिम, पिचोरा क्षेत्र — **रूस**
  - ✧ डोनवास क्षेत्र — **यूक्रेन**
  - ✧ कारागेंडा क्षेत्र — **कजाकिस्तान**

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस

- ❖ विश्व के कम से कम दो तिहाई ज्ञात कच्चे तेल (पेट्रोल) और प्राकृतिक गैस के भंडार एशिया में पाए जाते हैं। पश्चिमी एशिया में सबसे बड़े ज्ञात तेल भंडार है, जो सऊदी अरब, इराक, कुवैत, कतर, ईरान एवं UAE में स्थित है।
- ❖ ईरान का **'अबादान'** विश्व का सबसे बड़ा तेल शोधक केन्द्र है।
- ❖ ईरान के खनिज तेल भंडार जैग्रोस पर्वतीय प्रदेश में पाए जाते हैं।
- ❖ विश्व का लगभग 20% पेट्रोलियम आरक्षित क्षेत्र सऊदी अरब में है। यहाँ के देहरान, धावर क्षेत्र, कातिफ, अवफेक क्षेत्र आदि प्रसिद्ध है।
- ❖ पश्चिमी एशिया में सर्वप्रथम पेट्रोलियम की खोज सुनेमान क्षेत्र, ईरान में हुई थी।

टंगस्टन

- ❖ चीन विश्व का प्रमुख टंगस्टन उत्पादक देश है। चीन में कियांग्सी प्रांत टंगस्टन उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र है।
- ❖ भारत में राजस्थान टंगस्टन का प्रमुख उत्पादक राज्य है।

टिन

- ❖ एशिया में चीन टिन के उत्पादन एवं भंडार की दृष्टि से बृहतम् देश है। चीन में **यून्नान का पठार** टिन का प्रमुख उत्पादन क्षेत्र है।
- ❖ चीन के अलावा मलेशिया, इंडोनेशिया, थाइलैंड प्रमुख टिन उत्पादक देश है। मलेशिया की **पेराक घाटी** एवं **सेलांगर प्रदेश** टिन के लिए विश्वविख्यात है।

सोना

- ❖ विश्व का सर्वाधिक सोना **चीन** की खानों से निकाला जाता है।
- ❖ एशियाई रूस का काकेशस क्षेत्र प्रमुख सोना-चाँदी उत्पादक क्षेत्र है।
- ❖ भारत में सर्वाधिक सोना कर्नाटक राज्य में पाया जाता है। कर्नाटक में कोल्लार व हट्टी की खानें प्रसिद्ध है।

अभ्रक

- ❖ विश्व में अभ्रक उत्पादन में **चीन** प्रथम स्थान पर है।
- ❖ भारत में झारखंड की **कोडरमा खान** अभ्रक के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

जस्ता

- ❖ विश्व का सबसे बड़ा जस्ता उत्पादक देश **चीन** है।

क्रोमियम

- ❖ एशिया में क्रोमियम उत्पादन के लिए **कजाकिस्तान** प्रमुख है। कजाकिस्तान की **कोमताऊ खान** क्रोमियम के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

लोहा

- ❖ एशिया का सबसे बड़ा लोहा उत्पादक देश **चीन** है। चीन का दक्षिण मंचूरिया क्षेत्र प्रमुख लौह उत्पादक क्षेत्र है, जहाँ चीन के कुल संचित भंडार का 50% लोहा पाया जाता है।
- ❖ रूस के प्रमुख लौह उत्पादक क्षेत्रों में यूराल प्रदेश, गोरनाया शोरिया, पश्चिमी साइबेरिया एवं आमूर घाटी प्रमुख है।

एशिया के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

चीन के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

- ❖ **दक्षिण मंचुरिया औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—फुशुन, अंशान, मुकडेन, डेरेन, पिंकी आदि
  - ✧ यह लौह इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।
  - ✧ **अंशान-मुकडेन** को लौह इस्पात उद्योग के कारण **चीन का पिट्सवर्ग** कहा जाता है।
- ❖ **यांग्टिसी घाटी प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—शंघाई, बुहान
  - ✧ सूती वस्त्र, लौह इस्पात, रसायन, मशीनरी उद्योग के लिए प्रसिद्ध।
  - ✧ **शंघाई** को **चीन का मैनचेस्टर** (सूती वस्त्र उद्योग के कारण) कहा जाता है।
- ❖ **कैंटन प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**— कैंटन, गुवाग्जू शहर
  - ✧ ऑटोमोबाइल, वस्त्र उद्योग, जूट सामान, मिट्टी के बर्तन हेतु प्रसिद्ध है।
- ❖ **बीजिंग-टिंटशीन औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—बीजिंग, टिंटशीन
  - ✧ कागज, वायुमान, लौह इस्पात, सीमेंट उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।

जापान के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

- ❖ **कांटो (क्वांटा) प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**— टोक्यो, याकोहामा, कावासाकी
  - ✧ इस प्रदेश में लौह इस्पात उद्योग, जलयान निर्माण, इंजीनियरिंग आदि उद्योग स्थापित है।
- ❖ **नगोया प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—नगोया (जापान का ड्रेटायट)
  - ✧ ऑटोमोबाइल, एयरक्राफ्ट, मशीनरी, ऊनी वस्त्र उद्योग हेतु प्रसिद्ध है।
- ❖ **ओसाका-किंकी प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—ओसाका (जापान का मैनचेस्टर), किंकी, हिमेजी नगर, कोबे एवं क्योटा।
  - ✧ इस क्षेत्र में ओसाका सूती वस्त्र, जलपोत, लौह इस्पात के लिए प्रसिद्ध है। वहीं किंकी — जहाज निर्माण, हिमेजी नगर — लौह इस्पात एवं कोबे एवं क्योटो — सूती वस्त्र, जलपोत के लिए प्रसिद्ध है।
- ❖ **उत्तरी क्यूशू प्रदेश औद्योगिक प्रदेश**—
  - ✧ **प्रमुख स्थान**—यावाता, टोबेता, नागासाकी
  - ✧ लौह इस्पात, जहाज निर्माण, इंजीनियरिंग उद्योग के लिए प्रसिद्ध।

✧ टंगानिका का पठार
✧ अबीसीनिया का पठार
✧ अदामावा का पठार
✧ जॉस का पठार
✧ बाई का पठार

अफ्रीका के मरुस्थल

❖ अफ्रीका के लगभग 1/3 भाग पर मरुस्थल है, जो निम्न हैं—

✧ **सहारा**—यह संसार का सबसे बड़ा व गर्म मरुस्थल है। जो अफ्रीका के उत्तरी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल 84,00,000 वर्ग कि.मी. है। चाड झील इस मरुस्थल की प्रमुख झील है।

✧ **कालाहारी**—बोत्सवाना, नामीबिया व दक्षिण अफ्रीका में विस्तृत यह अफ्रीका का दूसरा प्रमुख मरुस्थल है। इस मरुस्थल में बड़े आकार का पक्षी शुतुरमर्ग पाया जाता है।

✧ **नामिब मरुस्थल**—नामीबिया के पश्चिम में अटलांटिक महासागर के तटीय प्रदेश में फैला हुआ है।

✧ **नूबियन मरुस्थल**—यह सूडान में स्थित है। नील नदी के द्वारा लीबिया मरुस्थल से पृथक होता है।

✧ **लीबिया मरुस्थल**—लीबिया में स्थित है।

अफ्रीका महाद्वीप के प्रमुख अंतरीप

✧ अगुल्हास केप
✧ सेंट फ्रांसिस केप
✧ वर्डी केप
✧ गुआडीफुल केप
✧ गुड होप केप
✧ फरिया केप

अफ्रीका के प्रमुख द्वीप

1. **मेडागास्कर**—इसकी खोज 1500 ई. में एक पुर्तगाली नागरिक डियागा डायर द्वारा की गई। यह द. अफ्रीका के समीप हिंद महासागर में स्थित है। जो अफ्रीका तट से मोजाम्बिक चैनल द्वारा पृथक होता है। यह अफ्रीका का सबसे बड़ा एवं विश्व का चौथा सबसे बड़ा द्वीप है।

नोट—विश्व के सबसे बड़े द्वीप **ग्रीनलैंड, न्यूगिनी** और **बोर्निओ** हैं।

2. **जंजीबार और पेंबा द्वीप**—तंजानिया के पूर्वी भाग में हिन्द महासागर में स्थित यह द्वीप संसार में अत्यधिक लौंग उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्हें **'क्लोव आईलैण्ड'** भी कहा जाता है। ये तंजानिया के भाग है।
3. **केनेरी केप वर्डे व मदीरा द्वीप समूह**—उत्तरी अटलांटिक महासागर में स्थित है।
4. **सेंट हेलेना (U.K.)**—दक्षिणी अटलांटिक महासागर में स्थित है।
5. **प्रिंसेप व सावटोमे**—गिनी की खाड़ी में स्थित है।
6. **मॉरीशस और रियूनियन**—ज्वालामुखी प्रक्रिया से उत्पन्न द्वीप हैं जो अफ्रीका के दक्षिणी-पूर्वी भाग में स्थित हैं।

अफ्रीका में सर्वाधिक ऊँचा एवं बड़ा

अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी	किलीमंजारो (तंजानिया)
अफ्रीका की सबसे बड़ी झील	विक्टोरिया
अफ्रीका व विश्व की सबसे लंबी नदी	नील नदी
भूमध्य रेखा को दो बार पार करने वाली नदी	जायरे या कांगो नदी
अफ्रीका व विश्व का सबसे बड़ा जलप्रपात	विक्टोरिया
अफ्रीका व विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल	सहारा
पानी की सर्वाधिक मात्रा वाला जलप्रपात	स्टेनले(कांगो नदी पर)

अफ्रीका की प्रमुख नदियाँ

❖ नील नदी—

✧ यह **विश्व की सबसे लम्बी नदी (6650 कि.मी.)** है, जो **विक्टोरिया झील** से निकलकर **युगांडा, सूडान** एवं **मिस्र** में बहते हुए **भूमध्य सागर** में गिरती हैं।

✧ **खार्तूम** (सूडान) एवं **काहिरा** (मिस्र) दोनों राजधानियाँ नील नदी के किनारे अवस्थित हैं।

✧ इस नदी पर मिस्र में **आसवान बाँध** बना हुआ है।

✧ **ब्लू नील** एवं **सफेद नील** इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

✧ **'मिस्र'** को नील नदी का वरदान कहा जाता है।

❖ **कांगो या जायरे नदी**—

✧ यह नदी (अफ्रीका की दूसरी सबसे लम्बी नदी) कटिंगा के पठार से निकलकर दक्षिणी अटलांटिक महासागर में गिरती हैं।

✧ यह नदी **भूमध्यरेखा** को **दो बार** काटती हैं।

✧ इस नदी पर स्टेनले एवं लिविंगस्टोन जल प्रपात प्रसिद्ध हैं।

✧ अफ्रीका की नदियों में सबसे अधिक जल यही नदी बहाकर ले जाती है।

✧ जायरे की राजधानी **किंशासा** व कांगो की राजधानी **ब्राजीविले** इस नदी पर स्थित है।

✧ इस नदी को **'मध्य अफ्रीका का हाइवे'** कहा जाता है।

❖ जेंबेजी नदी—

✧ अंगोला के पठार से निकलकर हिंद महासागर में गिरती है।

✧ इस नदी पर विश्व का सबसे बड़ा जल प्रपात **'विक्टोरिया जलप्रपात'** (जिम्बाब्वे/जांबिया) स्थित है।

✧ **करीबा बाँध** इस नदी पर करीबा झील के निकट बना हुआ है।

❖ नाइजर नदी—

✧ लोमा पर्वत (गिनी) से निकलकर गिनी की खाड़ी में गिरती हैं।

✧ इस पर **कैंजी बाँध** (नाइजीरिया) बना हुआ है।

❖ लिम्पोपो नदी—

✧ यह दक्षिण अफ्रीका व जिम्बाब्वे की सीमा बनाती हुई मोजाम्बिक में बहकर हिन्द महासागर में गिरती है।

❖ ओरेंज नदी—

✧ ड्रेकेन्सबर्ग पर्वत (दक्षिण अफ्रीका) से निकलकर दक्षिण अफ्रीका एवं नामीबिया की सीमा बनाते हुए अटलांटिक महासागर में गिरती हैं।

प्रमुख पर्वत एवं पठार

- **एंडीज पर्वत**
  - यह पर्वत श्रेणी दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के पश्चिम में प्रशांत महासागर के समानान्तर उत्तर से दक्षिण की ओर फैली विश्व की सबसे लंबी व हिमालय के बाद दूसरी सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है। ये नवीन वलित पर्वत श्रेणी है।
  - इसकी सबसे ऊँची चोटी **एकांकगुआ** है (अर्जेंटीना व चिली की सीमा पर स्थित)। जिसकी ऊँचाई 6959 मीटर है।
  - एन्डीज पर्वत पर स्थित **ला-पाज** (बोलीविया की राजधानी) विश्व की सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित राजधानी है।
- **ब्राजील का पठार**
  - यह दक्षिणी अमेरिका का सबसे बड़ा पठार है। यह ब्राजील में अटलांटिक तट के समानान्तर फैला हुआ है। जिसका निर्माण प्री-कैम्ब्रियन शैलों से हुआ था। यह गोंडवाना लैंड का प्राचीन दृढ़ भूखण्ड है। जो वर्तमान में अवशिष्ट रूप में मौजूद है।
- **बोलिविया का पठार**
  - यह बोलिविया देश में एंडीज पर्वत के मध्य स्थित एक अंतरापर्वतीय पठार का रूप है।
  - इस पठार पर प्रसिद्ध नौगम्य **'टिटिकाका झील'** स्थित है।
- **पेंटागोनिया का पठार**
  - अर्जेंटीना एवं चिली में एंडीज पर्वत के निकट स्थित यह पर्वतपदीय पठार का रूप है। **[VDO (Pre) 2021]**
  - इसे ठंडा मरुस्थल भी कहते हैं।
  - टेयरा डेल फ्यूगों इसी पठार का भाग माना जाता है।

प्रमुख खनिज

- **तांबा**—विश्व का सबसे अधिक तांबा उत्पादक देश **चिली** है। इसे विश्व की तांबा राजधानी भी कहा जाता है। यहाँ स्थित चुकिकामाता विश्व की सबसे बड़ी तांबे की खान है।
- **लौहा**—दक्षिण अमेरिका में सर्वाधिक लोहा उत्पादक देश **ब्राजील** है। लौहे की प्रसिद्ध खान ब्राजील की इटावीरा, कराजस एवं चिली की ला-सेरेना है।
- **चांदी**—विश्व में चांदी के सर्वाधिक भंडार **पेरु** में पाए जाते है।
- **सोडियम नाइट्रेट**—संसार में सर्वाधिक सोडियम नाइट्रेट उत्तरी चिली में मिलता है।
- **खनिज तेल**—वेनेजुएला व त्रिनिदाद एवं टौबेगो द्वीपों में विशाल भंडार है। मराकाइबो झील के उथले जल के नीचे से बहुत अधिक मात्रा में तेल निकाला जाता है।
- **मैंगनीज**—अमापा खान (ब्राजील) मैंगनीज की द. अमेरिका की सबसे बड़ी खान है।
- **टिन**—इसका सर्वाधिक उत्पादन बोलिविया पठार (टिटिकाका झील) से होता है।

प्रमुख फसलें

- **कहवा**—विश्व में कहवा का सबसे बड़ा उत्पादक देश ब्राजील है।
  - कहवा ब्राजील की महत्त्वपूर्ण फसल हैं।
  - विश्व की सबसे बड़ी कहवा मंडी **'साओ पोलो'** में स्थित है।
  - कहवा के विशाल बाग **'फजेंडा'** कहलाते हैं।
- **कोको**—द. अमेरिका में कोको का सर्वाधिक निर्यात व उत्पादन ... में होता है।
- **गेहूँ**—द.अमेरिका का सर्वाधिक गेहूं उत्पादक क्षेत्र अर्जेन्टिना का ... मैदान है। गेहूँ की चन्द्राकार पेटी **अर्जेन्टिना** में स्थित है।
- **कपास**—सर्वाधिक कपास ब्राजील में होता है।
- **गन्ना**—ब्राजील गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के निकटवर्ती प्रमुख खाड़ी एवं प्रायद्वीप

क्र.सं.	नाम	अवस्थिति
1.	ग्वायाकिल की खाड़ी	● इक्वेडोर के पश्चिम में प्रशांत महासागर में अवस्थित
2.	सैन जार्ज की खाड़ी	● अर्जेन्टिना के पूर्व में अटलांटिक महासागर में अवस्थित
3.	पेनास की खाड़ी	● दक्षिणी चिली, प्रशांत महासागर में अवस्थित
4.	ताइवाव प्रायद्वीप	● पेनास की खाड़ी एवं प्रशान्त महासागर से घिरा हुआ दक्षिणी चिली में अवस्थित
5.	सैन मेटियास की खाड़ी	● वाल्डेज प्रायद्वीप के उत्तर में अटलांटिक महासागर में अवस्थित
6.	वाल्देज प्रायद्वीप (अर्जेन्टिना)	● अर्जेन्टिना का एक प्रायद्वीप जो उत्तर में सैन मटियास खाड़ी एवं पश्चिम में सेन जोस तथा दक्षिण में न्यूवो खाड़ी एवं अटलांटिक महासागर से घिरा है

दक्षिण अमेरिका की प्रमुख जलसंधियाँ

क्र. सं.	नाम	स्थलीय भाग जिन्हें अलग करती है	जलीय भाग जिन्हें जोड़ती है
1.	मैगलन जलसंधि	द. अमेरिका का दक्षिणी भाग व तिएरा डेल क्यूगो	द. अटलांटिक एवं द. प्रशान्त महासागर
2.	ड्रेक पैसेज जलसंधि	दक्षिण अमेरिका व अंटार्कटिका	द. अटलांटिक एवं द. प्रशान्त महासागर

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के महत्त्वपूर्ण तथ्य

- ओरिनिको नदी को **'झरनों का प्रदेश'** भी कहा जाता है।
- संसार की सबसे हल्की लकड़ी 'वाल्सा' अमेजन बेसिन में पाई जाती है। जिसका उपयोग जीवनरक्षक नाव बनाने में किया जाता है।
- दक्षिण अमेरिकी देशों में **'कोलम्बिया'** एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी समुद्री तटरेखाएँ अटलांटिक महासागर तथा प्रशांत महासागर दोनों से मिलती है।
- दक्षिण अमेरिका का जनसंख्या व क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा देश **ब्राजील** है।
- **दक्षिण अमेरिका में स्थानान्तरित कृषि के नाम**—ब्राजील में **रोका** एवं वेनेजुएला में **कोनुको** कहा जाता है।

में अग्नि घटनाएँ सबसे अधिक देखी गई है, वे **उत्तराखंड, ओडिशा** और **छत्तीसगढ़** है।

- ISFR-2023 के अनुसार देश का वन कार्बन स्टॉक **7285.5** मिलियन टन अनुमानित है, जो 2021 की तुलना में **81.5** मिलियन टन अधिक है।

नोट—
- **भारत में सर्वाधिक अभिलेखित वन क्षेत्र वाले राज्य— मध्यप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र।**
- **भारत में सर्वाधिक वनावरण वाले राज्य—मध्यप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़।**
- **भारत में सर्वाधिक प्रतिशत वनावरण वाले राज्य/केंद्र शासित प्रदेश— लक्षद्वीप, मिजोरम, अंडमान-निकोबार द्वीप।**

भारत में वन्य जीव संसाधन व संरक्षण

- भारत में वर्तमान में **15 जून, 2025** तक स्थिति के अनुसार संरक्षित क्षेत्र निम्न प्रकार है—
  - राष्ट्रीय उद्यान — 107 (107वाँ-सिमलीपाल, उड़ीसा)
  - वन्यजीव अभयारण्य — 573
  - सामुदायिक रिजर्व — 220
  - बायोस्फियर रिजर्व — 18
  - टाइगर रिजर्व क्षेत्र — 58 (नवीन माधव राष्ट्रीय उद्यान, म.प्र.)
  - रामसर स्थल — 91 (नवीन खींचन (फलौदी), मेनार (उदयपुर)) जून 2025 में

नोट—फरवरी, 2025 में घोषित चार रामसर स्थल निम्न हैं—
- सक्कराकोट्टई पक्षी अभयारण्य (तमिलनाडु)
- थेरथंगल पक्षी अभयारण्य (तमिलनाडु)
- खेचेओपलरी वेटलैंड (सिक्किम)
- उधवा झील (झारखंड)

- भारत में कुल यूनेस्को विश्व विरासत स्थल है—**43** (जिनमें 35 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक एवं 1 मिश्रित (सांस्कृतिक व प्राकृतिक दोनों) स्थल) हैं।
- भारत में मिश्रित विश्व विरासत स्थल **कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान, सिक्किम है।**
- भारत का सबसे नवीन विश्व विरासत स्थल की सूची में जुड़ने वाला स्थल **असम का मोइदम–अहोम राजवंश की टीला दफनाने की व्यवस्था** है।
- मांट्रेक्स रिकार्ड में शामिल रामसर स्थल है—
  - केवलादेव, राजस्थान (1990)
  - लोकटक झील, मणिपुर (1993)।
- वर्तमान में भारत में कुल हाथी रिजर्व है—**33**
- सबसे नवीनतम हाथी रिजर्व है— **तराई हाथी रिजर्व**, उत्तर प्रदेश
- सबसे दुराना हाथी रिजर्व है— **सिंहभूम, झारखंड**
- सबसे बड़ा हाथी रिवर्ज है— **मैसूर, कर्नाटक**
- देश में सर्वाधिक टाइगर रिज़र्व किस राज्य में स्थित है— **मध्यप्रदेश (9)**
- भारत का पहला नेशनल पार्क—**हैली नेशनल पार्क, उत्तराखण्ड** (1936 में घोषित) है। इसका वर्तमान नाम—**जिम कार्बेट नेशनल पार्क, उत्तराखण्ड** है (यहीं 1973 में पहली बाघ परियोजना स्थापित की)।
- भारत का नवीनतम घोषित नेशनल पार्क—**सिमलीपाल, उड़ीसा** (107वाँ)।
- भारत का सबसे बड़ा नेशनल पार्क—**हेमिस नेशनल पार्क, लद्दाख।**
- भारत का सबसे छोटा नेशनल पार्क—**फॉसिल, मध्यप्रदेश।**
- भारत में सबसे ज्यादा नेशनल पार्क वाले राज्य —**मध्यप्रदेश** (11), **असम** (7)।
- भारत में सर्वाधिक राष्ट्रीय उद्यानों वाला केन्द्र शासित प्रदेश—**अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह** (6)।
- वह राज्य जिसमें राष्ट्रीय उद्यान नहीं है—**पंजाब।**
- भारत का सबसे बड़ा वन्य जीव अभ्यारण्य—**कच्छ अभ्यारण्य, गुजरात।**
- भारत का सबसे छोटा वन्य जीव अभ्यारण्य—
  1. **रोवे आइलैण्ड, अण्डमान व निकोबार (0.01 Km²)**
  2. **डॉ. सालिम अली पक्षी अभ्यारण्य, लक्षद्वीप (0.01 Km²)**
  3. **गूज आइलैड, (अण्डमान निकोबार) (0.01 Km²)**
- देश में सर्वाधिक जीव अभ्यारण्य वाला राज्य—**महाराष्ट्र (49)।**
- देश का सबसे नवीन घोषित वन्य जीव अभयाण्य है—**डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य, मध्यप्रदेश।**
- देश का सबसे बड़ा टाइगर रिज़र्व—**नागार्जुन सागर श्रीसेलम टाइगर रिजर्व (आंधप्रदेश व तेलगांना)**
- देश का सबसे छोटा टाइगर रिजर्व—**नामेरी (असम)** (लेकिन वन रिपोर्ट के अनुसार **ओरांग** है)
- भारत में टाइगर रिजर्व वाले राज्यों की संख्या—**18**
- भारत का सबसे नवीन टाइगर रिजर्व है— **सिमलीपाल रिजर्व, उड़ीसा**
- सर्वाधिक टाइगर रिजर्व वाला राज्य— **मध्यप्रदेश (9)**
- सर्वाधिक बाघ वाला टाइगर रिजर्व— **कॉर्बेट**
- भारत में सर्वाधिक कन्जर्वेशन रिजर्व—**I. जम्मू कश्मीर II. कर्नाटक**

भारत के जैवविविधता तप्तस्थल (बायोडायवर्सिटी हॉट-स्पॉट)

- सर्वप्रथम वैज्ञानिक **नोरमन मेयर** ने 1988 में तप्त स्थल की अवधारणा दी थी। उनके अनुसार "ऐसे स्थल (क्षेत्र) जहाँ असाधारण रूप से जातियों की उपस्थिति के कारण आवास समृद्ध हो तथा स्थानीय दुर्लभ जातियों का समूह हो, जो विश्व के अन्य क्षेत्र में नहीं पाया जाता हो, तप्तस्थल कहलाते है।"
- वर्तमान में विश्व में कुल **36** बायोडायवर्सिटी हॉट-स्पॉट है।
- वर्तमान में भारत में **4** बायोडायवर्सिटी हॉट-स्पॉट है।
  - **हिमालय क्षेत्र** (पूर्ण रूप से भारतीय भूमि से संबंधित हैं।)
  - **पश्चिमी घाट क्षेत्र** (पूर्ण रूप से भारतीय भूमि से संबंधित हैं।)
  - **इंडो-बर्मा क्षेत्र** (इसमें कुछ भारतीय क्षेत्र शामिल हैं।)
  - **सुंडालैण्ड** (इसमें कुछ भारतीय क्षेत्र शामिल हैं।)

जैवविविधता संरक्षण

- जैव विविधता का संरक्षण **दो** प्रकार से किया जाता है— (i) स्वस्थाने संरक्षण (ii) बाह्यस्थाने संरक्षण।
- स्वस्थाने संरक्षण में प्रजाति का संरक्षण उसके प्राकृतिक आवास की परिस्थितियों में किया जाता है जिसमें राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, जैव मण्डल रिजर्व प्रमुख है।
- भारत में नीलगिरी प्रथम जैवमण्डल रिजर्व है। वर्तमान में भारत में कुल 18 जैवमण्डल रिजर्व है।
- भारत में चार जैवमण्डल रिजर्व यूनेस्को द्वारा संरक्षित है जो निम्न हैं— **नीलगिरी, सुन्दरवन, मन्नार की खाड़ी** एवं **नन्दा देवी।**
- प्रत्येक जैवमण्डल रिजर्व में **तीन** भाग होते हैं—**कोर क्षेत्र, बफर क्षेत्र,**

(2) जलीय पारितंत्र (पारस्थितिकी) तंत्र

- इसके अंतर्गत **समुद्र, नदियाँ, तालाब, झील, नम भूमियाँ** एवं **संक्रमणकालीन पारितंत्रों** का अध्ययन किया जाता है।
- यह तंत्र पोषण तत्त्वों की उपलब्धता, ऑक्सीजन की मात्रा, प्रकाश की तीव्रता एवं लवणता से प्रभावित होता है।
- जल में **लवण की मात्रा** के आधार पर इस पारितंत्र को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(A) स्वच्छ जल पारितंत्र (अलवणीय जल पारितंत्र)
(B) सागरीय/समुद्री पारितंत्र (लवणीय जल पारितंत्र)
(C) संक्रमणकालीन पारितंत्र (ज्वारनदमुखी/एश्चुरियन)

(A) स्वच्छ जल पारितंत्र

- इस पारितंत्र में लवण की मात्रा बहुत कम (5ppt से कम) होती है, ऐसे अलवणीय जल में विकसित पारितंत्र को स्वच्छ जल पारितंत्र कहते है। इसमें **मीठे पानी की झीले, तालाब, नदी, झरने** इत्यादि को शामिल किया जाता है।
- इसके प्रमुख रूप से दो भाग है—
  - स्थिर जल पारितंत्र — झील, तालाब।
  - प्रवाह जल पारितंत्र — नदी, झरने।

(B) सागरीय पारितंत्र

- इस पारितंत्र के जल में लवण की मात्रा 35 ppt से अधिक होती है। ऐसे लवणीय या समुद्री जल में विकसित पारितंत्र को सागरीय पारितंत्र कहा जाता है।
- समुद्री या सागरीय पारितंत्र में आहार श्रृंखला सूर्य के प्रकाश, ऑक्सीज़न व CO_2 की सुलभता, लवणता, पोषक तत्वों की उपलब्धता आदि पर निर्भर करती है।
- इसमें छिछले एवं खुले समुद्र आते है।
- **यह पारितंत्र सबसे स्थायी एवं सबसे बड़ा पारितंत्र है।**
- यह पारितंत्र पृथ्वी का लगभग 71% भाग घेरे हुए है। इसकी औसत गहराई 4000 मीटर है।
- इस पारितंत्र के दो प्रकार है—**खुला पारितंत्र** एवं **प्रवाल भित्ति पारितंत्र।**
- भारत में प्रवाल भित्तियों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए चार प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई है—
  - मन्नार की खाड़ी, तमिलनाडु
  - कच्छ की खाड़ी, गुजरात (सबसे कम)
  - लक्षद्वीप
  - अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (सर्वाधिक)

नोट—
- **राष्ट्रीय प्रवाल भित्ति अनुसंधान केन्द्र की स्थापना**—पोर्ट ब्लेयर
- **प्लेटफार्म (फ्रीजिंग) भित्तियाँ** कच्छ की खाड़ी और एटॉल भित्तियाँ लक्षद्वीप समूह में पाई जाती है।
- **प्रवाल भित्तियों को 'समूह का वर्षावन'** कहा जाता है, क्योंकि यह विश्व के सागरीय जैव विविधता का उष्ण स्थल माना जाता है।
- **प्रवाल में रंग जूजैंथिली के कारण होता है।**

(C) संक्रमणकालीन पारितंत्र

- इस पारितंत्र में लवण की मात्रा अलवणीय पारितंत्र से अधिक होती है। सामान्यतः यह दो पारितंत्रों के बीच का संक्रमण क्षेत्र होता है। उदाहरण— **मेग्रोंव, एश्चुरी** आदि।
- इस पारितंत्र को प्रमुख रूप से तीन भागों में बांटा गया है—
  1. ज्वारनदमुख पारितंत्र
  2. आर्द्रभूमि पारितंत्र
  3. मैंग्रोव पारितंत्र

1. ज्वारनदमुख पारितंत्र—

- इस संक्रमण क्षेत्र में सर्वाधिक जैव-विविधता पायी जाती है, क्योंकि यहाँ पोषक तत्त्वों की अधिकता होती है।
- ज्वारनदमुख में नदियाँ डेल्टा न बनाकर सीधे समुद्र में गिरती है।
- अरब सागर में गिरने वाली भारत की नदियाँ नर्मदा, ताप्ती, मांडवी आदि ज्वारनदमुख पारितंत्र का निर्माण करती है।
- यह एक शांत क्षेत्र होता है जो जीव-जन्तुओं को आकर्षित करता है।

2. आर्द्रभूमि पारितंत्र—

- भारत में जून, 2025 तक कुल **91 रामसर साइट** (आर्द्र-भूमि) है। (**रामसर साइट** → रामसर कन्वेंशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के आर्द्रभूमि क्षेत्र होते हैं।)
- राज्यानुसार देश की आर्द्रभूमियों के 8 वर्ग है, जिनमें दो में राजस्थान भी आता हैं—
  - राजस्थान, गुजरात और कच्छ की खाड़ी के विस्तृत खारे जलाशय।
  - गुजरात के पूर्व में राजस्थान (केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान) से होकर मध्य प्रदेश तक की अलवणजल की झीलें और अन्य जलाशय।
- भारत में सबसे अधिक रामसर साइट (आर्द्रभूमि) **तमिलनाडु राज्य (20)** में है।
- भारत का सर्वप्रथम घोषित रामसर स्थल— (1981 में)
  - **चिल्का झील, उड़ीसा**
  - **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान** (पानी व चारागाह की कमी के कारण घोषित)
- भारत का सबसे बड़ा रामसर स्थल—**सुन्दरवन वेटलैंड,** (प. बंगाल, 4230 वर्ग किमी., 2019 में घोषित।) है।
- भारत का सबसे छोटा रामसर स्थल हिमाचल प्रदेश का **रेणुका वेटलैंड** है।
- भारत का सबसे नवीन रामसर स्थल **खींचन** एवं **मेनार गाँव** (राजस्थान) है।
- राजस्थान में चार आर्द्रभूमियां (रामसर साइट्स)-
  - सांभर झील (1990 में घोषित)
  - केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1981 में)
  - खींचन गाँव, फलौदी (2025 में घोषित)
  - मेनार गाँव, उदयपुर (2025 में घोषित)

❖ किसी भी पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न खाद्य शृंखलाएँ किसी एक पोषक स्तर से जुड़कर जटिल जाल बना लेती है, जिसे **खाद्य जाल** कहते हैं।

खाद्य शृंखला एवं खाद्य जाल में अंतर

❖ एक जीव से दूसरे जीव में पोषक तत्त्वों व ऊर्जा का स्थानांतरण खाद्य शृंखला है जबकि विभिन्न खाद्य शृंखलाएँ मिलकर खाद्य जाल (Food web) बनाती हैं।

❖ खाद्य शृंखला में घटक **उत्पादक, विभिन्न श्रेणी के उपभोक्ता** तथा **अपघटक** शामिल होते हैं जबकि खाद्य जाल में अनेक जीव समुदाय के उपभोक्ता व अपघटक शामिल होते हैं।

❖ खाद्य शृंखला में ऊर्जा का प्रवाह **एकमार्गीय** होता है, जबकि खाद्य जाल में यह **बहुमार्गीय** होता है।

पारिस्थितिक पिरामिड(स्तूप)

❖ पारिस्थितिक पिरामिड की अवधारणा सर्वप्रथम **चार्ल्स एटन** ने 1927 ई. में दी।

❖ खाद्य शृंखला में प्रजातियों की संख्या, जीवभार तथा संचित ऊर्जा की सुलभता में आने वाले अंतर को दर्शाने के लिये पिरामिड का प्रयोग किया जाता है।

❖ पिरामिड सीधे (Upright) तथा उल्टे (Inverted) दोनों प्रकार के बनते हैं।

❖ पिरामिड का आधार सदैव **प्राथमिक उत्पादकों** तथा **शीर्ष उपभोक्ताओं** को दर्शाता है।

❖ पिरामिड निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं—

पारिस्थितिकी पिरामिड(स्तूप) के प्रकार

- **संख्या के पिरामिड**
  - सीधा → वन, घास स्थल तथा तालाब के पिरामिड
  - उल्टा → वृक्ष के पिरामिड
- **जैवभार के पिरामिड**
  - सीधा → वृक्ष व घास स्थल के पिरामिड
  - उल्टा → जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के पिरामिड
- **ऊर्जा के पिरामिड**
  - सदैव सीधा → उत्पादक तथा उपभोक्ताओं में संचित ऊर्जा को प्रस्तुत करने वाले पिरामिड

ऊर्जा पिरामिड

❖ ऊर्जा पिरामिड सदैव सीधा बनता है क्योंकि इसमें सदैव समय का ध्यान रखा जाता है, जो लगभग निश्चित होता है।

❖ प्राथमिक उत्पादक (हरे पौधे) सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का केवल 10% ही अपने पास संचित कर पाते हैं। उनके द्वारा संचित यही 10% ऊर्जा पोषण के अगले स्तर तक जाती है।

❖ इस प्रकार प्रत्येक पोषण तल पर ऊर्जा क्रमशः घटती जाती है। सभी पोषण तलों में 90% ऊर्जा का उपभोग हो जाता है।

ऊर्जा प्रवाह

❖ समस्त जीवों को जैविक क्रियाओं हेतु ऊर्जा की आवश्यकता होती है। पारितंत्र में ऊर्जा का मुख्य स्रोत सूर्य है। हरे पौधे (हरित पादप) प्रकाश ऊर्जा (विकिरण ऊर्जा) को रासायनिक ऊर्जा में बदलते हैं। यह प्राथमिक उत्पादन क्षमता कहलाती है।

❖ श्वसन के उपरान्त उत्पादकों में संचित कार्बनिक पदार्थ शुद्ध प्राथमिक उत्पादन कहलाता है, जो कि प्राथमिक उपभोक्ताओं (शाकाहारी जीव) द्वारा ग्रहण किया जाता है।

❖ इसी प्रकार शाकाहारी की शुद्ध उत्पादन ऊर्जा अगले माँसाहारी को ऊर्जा रूप में स्थानान्तरित होती है।

❖ इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में निम्न बिन्दु प्रमुख हैं—

1. खाद्य शृंखला में एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर तक हमेशा ऊर्जा का स्थानांतरण होता रहता है।
2. प्रत्येक पोषण स्तर पर स्थानांतरण के समय ऊर्जा की हानि होती है। ऊर्जा की उपलब्धता में होने वाली यह कमी **लिंडेमान** के **10% नियम** के अनुसार चलती है।
3. पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा का स्थानांतरण तथा प्रवाह **एकदिशीय** होता है तथा उसका **चक्रण** एवं **पुनर्चक्रण** नहीं होता है।
4. पोषण शृंखला में कोई जीव उत्पादक स्तर के जितना करीब होगा, उसे उतनी अधिक ऊर्जा उपलब्ध होगी। पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा का प्रवेश रूपांतरण तथा विसरण ऊष्मागतिकी के नियम के अनुसार होता है।

लिंडेमान का 10 प्रतिशत का नियम

❖ यह नियम पारिस्थितिक तंत्र में प्रत्येक पोषण स्तर पर घटती ऊर्जा से संबंधित है। 1942 में इसे लिंडेमान ने प्रतिपादित किया था। लिंडेमान ने बताया कि एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर पर मात्र 10% ऊर्जा ही स्थानांतरित होती है।

❖ इस प्रकार ऊर्जा का प्रवाह एकदिशीय होता है। ऊष्मा के जिस भाग का क्षय होता है वह विसरित होकर वायुमंडल में वापस चली जाती है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

❖ जैव विविधता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग- **एडवर्ड ओ. विल्सन ने**

❖ जैव विविधता के जनक- **एडवर्ड ओ. विल्सन**

❖ बायोडाइवर्सिटी हॉट स्पॉट की अवधारणा- **नार्मन मेयर्स**

❖ पारिस्थितिकी तंत्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग- **A.G. टान्सले**

❖ पारिस्थितिकी शब्द की उत्पत्ति का श्रेय- **अर्नेस्ट हैकल को**

❖ पारिस्थितिकी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग- **रीटर ने**

❖ पारिस्थितिकी तंत्र एक खुला तंत्र है।

❖ सूर्य के ताप में कमी से पारितंत्र की उत्पादकता और जैव विविधता क्षेत्रों में कमी आती है।

❖ शैवाल सूर्य की ऊर्जा को सर्वाधिक ग्रहण करते है। इनका प्रयोग

✧ इसका रंग भूरा होता है।
✧ इसे **'सीरोजम मिट्टी'** या **धूसर मरुस्थलीय मिट्टी** भी कहा जाता है।
✧ इसमें ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ आदि की खेती की जाती है।

भूरी मिट्टी—इस मिट्टी का विस्तार अरावली के पूर्वी भागों में है। यह भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, टोंक एवं अजमेर जिलों में पायी जाती है।

... झाड़ियाँ पाये व चारागाह पाये जाते हैं।

10. **पर्वतीय/लिथोसोल्स मिट्टी**—यह मिट्टी मुख्यतः अरावली की उपत्यका (तलहटी) में पायी जाती है। इसका विस्तार उदयपुर, सिरोही, पाली, अलवर, अजमेर, खैरथल-तिजारा, राजसमंद एवं कोटपूतली-बहरोड़ में है।
✧ इसमें ह्यूमस एवं चूने की कमी होती है।
✧ मिट्टी की गहराई कम होने के कारण खेती के लिए अनुपयुक्त होती है।

राजस्थान के कृषि विभाग द्वारा मृदा का वर्गीकरण

❖ राजस्थान सरकार के **कृषि विभाग** ने मिट्टियों को उर्वरता के आधार पर **14 भागों** में बाँटा है—

क्र. सं.	मृदा का प्रकार	संबंधित जिले
1.	सिरोजम्स (Sie Rozems)	गंगानगर
2.	रेवेरिना (Reverina)	गंगानगर
3.	मरुस्थली मृदा (Desert Soils)	गंगानगर, चूरू, झुंझुनूँ, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर, फलौदी एवं सीकर
4.	जिप्सीफेरस (Gypsiferrous)	बीकानेर
5.	धूसर भूरी जलोढ़ मृदा (Gray-Brown Alluvial Soils)	जालोर, पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन, अजमेर एवं सिरोही
6.	नान केल्सिल ब्राउन मृदा (Non Calcil Brown Soils)	जयपुर, सीकर, झुंझुनूँ, डीडवाना-कुचामन, नागौर, अजमेर एवं अलवर
7.	नवीन जलोढ़ मृदा (Alluvial Soils of Recent Origin)	अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर एवं जयपुर
8.	पीली-भूरी मृदा (Yellowish Brown Soils)	जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर
9.	नवीन भूरी मृदा (Brown Soils of Recent Origin)	भीलवाड़ा एवं अजमेर
10.	पर्वतीय मृदा (Hilly Soils)	उदयपुर, सलूम्बर एवं कोटा
11.	लाल-लोम (Red Loam)	डूँगरपुर एवं बाँसवाड़ा
12.	काली गहरी मध्यम मृदा (Deep Medium Black Soils)	कोटा, बूँदी, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, झालावाड़
13.	केल्सी ब्राउन मरुस्थली मृदा (Desert Soils Calcie Brown)	जैसलमेर, बीकानेर एवं फलौदी
14.	मरुस्थल एवं बालूका स्तूप (Desert and Dunes)	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी, बालोतरा एवं बीकानेर

(स्रोत-राजस्थान का भूगोल-हरिमोहन सक्सेना)

रासायनिक संरचना के आधार पर मृदा का वैज्ञानिक वर्गीकरण

❖ राजस्थान की मिट्टियों को रासायनिक संरचना एवं अन्य गुणों के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय (अमेरिकन) पद्धति से वैज्ञानिकों द्वारा पाँच भागों में बाँटा गया है—

1.	**एरिडीसोल्स (शुष्क मिट्टी)**	❖ यह मिट्टी (मृदा वर्ग) राज्य के **चूरू, सीकर, झुंझुनूँ, नागौर, डीडवाना-कुचमान, जोधपुर, पाली, जालौर** इत्यादि जिलों में पायी जाती है।
2.	**अल्फीसोल्स (जलोढ़ मिट्टी) [VDO 2016]**	❖ यह मिट्टी (मृदा वर्ग) राज्य के **जयपुर, दौसा, अलवर** [VDO 2022], **खैरथल-तिजारा, कोटपुतली-बहरोड़, डीग, भरतपुर, करौली, धौलपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, सलूम्बर, डूँगरपुर, बूंदी, कोटा, बारां, झालावाड़** इत्यादि जिलों में पायी जाती है। यह मुख्यतः आर्द्र जलवायु प्रदेशों में पायी जाती है। अधिक उपजाऊ होती है।
3.	**एन्टीसोल्स (पीली भूरी मिट्टी)**	❖ राजस्थान के **सर्वाधिक क्षेत्र** में यह मिट्टी पायी जाती है। ❖ यह मिट्टी (मृदा वर्ग) राज्य के **पश्चिमी राजस्थान** के सभी मरुस्थलीय जिलों के अधिकांश भागों में मिलती है।
4.	**इन्सेप्टीसोल्स (आर्द्र मिट्टी)**	❖ यह **आर्द्र** प्रकार का मृदा समूह है, जो अर्द्धशुष्क से आर्द्र जलवायु वाले प्रदेशों में मिलती है। सिरोही, पाली, राजसमंद, उदयपुर, सलूम्बर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ में इस मृदा की प्रधानता है तथा जयपुर, सवाई माधोपुर एवं झालावाड़ में कहीं-कहीं मिलती है।
5.	**वर्टी सोल्स (काली मिट्टी)**	❖ यह मिट्टी मुख्यतः राज्य के दक्षिण-पूर्वी भाग [VDO 2022] में पायी जाती है। जो **झालावाड़, कोटा, बूँदी, बारां** में मुख्यतः पाई जाती है तथा **सवाई माधोपुर, भरतपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़** सीमित रूप में मिलती है। यह आर्द्र व अतिआर्द्र जलवायु प्रदेशों में पायी जाती है। इसका उप मृदाकरण पेल्यूस्टर्टस व क्रोमस्टर्टस है।

❖ यह विश्व का सर्वाधिक मरुस्थलीय जैव विविधता वाला व सर्वाधिक जनघनत्व वाला मरुस्थल है।

नोट—राजस्थान के चारों भौतिक भागों में सबसे कम जनघनत्व पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में पाया जाता है।

❖ उत्तर-पश्चिमी मरुस्थल को दो समान भागों में विभाजित करने वाली वर्षा रेखा **25 सेमी** (250 मिमी.) वर्षा रेखा है। [VDO 2022] इसके पश्चिम में शुष्क रेतीला मरुस्थल व पूर्व में अर्द्धशुष्क मरुस्थल है।

❖ उत्तर-पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश को 25 सेमी. सम वर्षा रेखा को आधार मानते हुए दो भागों में बाँटा जा सकता है

(A) महान भारतीय मरुस्थल या शुष्क मैदान

(B) अर्द्धशुष्क मैदान या बांगड़ प्रदेश

(A) महान भारतीय मरुस्थल या शुष्क मैदान

❖ यह महान मरुस्थलीय प्रदेश भारत-पाक सीमा रेखा से पूर्व दिशा में 25 सेमी सम वर्षा रेखा तक विस्तृत है। जो जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, फलौदी, दक्षिणी गंगानगर, पश्चिम चूरू, उत्तर-पश्चिम जोधपुर एवं उत्तर पश्चिम बालोतरा जिलों में मुख्यतया विस्तृत हैं।

❖ इस क्षेत्र में बालुका स्तूपों एवं रेतीली बलुई मिट्टी की अधिकता है।

❖ इस क्षेत्र में वर्षा का वार्षिक औसत 20 सेमी. तक रहता है। वर्षा की अत्यधिक न्यूनता के कारण इसको शुष्क बालुका मैदान भी कहते हैं।

❖ महान भारतीय मरुस्थल या शुष्क मैदान को बालूका स्तूप या धरातलीय विविधता के आधार पर पुनः दो भागों में बाँटा है—

(अ) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश

(ब) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश

(अ) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश—

✧ राजस्थान के सुदूर पश्चिमी भाग में कच्छ के रण से पंजाब राज्य तक सीमा के सहारे-सहारे विस्तृत इस क्षेत्र को महान भारतीय मरुस्थल भी कहा जाता है। इस भाग में रेत के विशाल टीले पाए जाते हैं जो तेज हवाओं के साथ अपना स्थान बदलते रहते हैं।

✧ थार मरुस्थल का राजस्थान में सुदूर पश्चिमी भाग बालुका स्तूपों से आवृत्त है। पश्चिमी रेतीले मैदान का 59% भाग बालुका स्तूपों से आच्छादित है।

✧ इन बालुका स्तूपों को स्थानीय भाषा में 'धोरे/टीले' कहा जाता है।

✧ ये बालुका स्तूप वायु अपरदान एवं निक्षेपण का परिणाम हे। यह [illegible] मार्च से जुलाई तक सर्वाधिक रहता है।

यह सभी प्रकार के बालुका स्तूपों में सबसे ऊँचे बालुका स्तूप होते है। इन बालुका स्तूपों पर वनस्पति अनिवार्य रूप से दिखाई देती है। **सीफ** एक अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप का प्रकार है।

नोट—दो पवनानुवर्ती बालुका स्तूपों के बीच की निम्न भूमि को **गासी** (कारवां मार्ग) कहते है।

(ii) अनुप्रस्थ बालुका स्तूप—ये बालुका स्तूप दीर्घकाल तक हवा के एक दिशा में चलने से हवा की दिशा के समकोण पर बनते हैं। ये स्तूप पूगल (बीकानेर), रावतसर (हनुमानगढ़), सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), चूरू, झुंझुनूं आदि क्षेत्रों में मिलते हैं। ये ज्यादातर मरुस्थल के उत्तरी एवं उत्तरी-पूर्वी भागों में व्याप्त है।

(iii) बरखान या अर्द्धचन्द्राकार (बालुकास्तूप)—ये बालुका स्तूप 10 से 20 मीटर ऊँचाई तथा 100 से 200 मीटर चौड़ाई तक विस्तृत होते हैं। ये भालेरी (चुरू), जैसलमेर, मन्थानदी (सीकर), सूरतगढ़ (गंगानगर), लूणकरणसर, देशनोक (बीकानेर), बाड़मेर, नीम का थाना (सीकर), बालोतरा, ओसियाँ (जोधपुर), जायल, (नागौर) आदि क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं। [VDO 2022]

- भालेरी (गाँव) बरखान बालुका स्तूपों के लिये प्रसिद्ध है।
- ये सर्वाधिक गतिशील, रंध्रयुक्त व नवीन बालूका युक्त होते हैं जो शृंखलाबद्ध रूप में मिलते हैं।
- विशेष कर मरुस्थली क्षेत्र के उत्तरी भाग में इनकी बहुलता है।
- बरखान बालूका स्तूप वनस्पति विहीन होते हैं एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते हैं।
- ये राजस्थान में सर्वाधिक नुकसानदायी बालुका स्तूप हैं। मरुस्थलीकरण के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी भी यही बलुका स्तूप है।

(iv) पेराबोलिक बालुका स्तूप—इनका विस्तार सम्पूर्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों में है। इनका निर्माण मरुस्थलीय वनस्पति के योग (झाड़ियों के सहारे) से होता है। यह बहुमुखी बालुका स्तूप हैं। इनकी आकृति महिलाओं के हेयरपिन की तरह या अंग्रेजी के 'U' आकार की तरह होती है। यह सर्वाधिक **बीकानेर** में होते हैं।

- इस क्षेत्र में अति आर्द्र जलवायु मिलती है।
- इस भौतिक विभाग की सबसे ऊँची चोटी **चाँदखेड़ी (झालावाड़)** है। जो 517 मी. ऊँची है।
- यह भौतिक विभाग राजस्थान का सबसे न्यूनतम क्षेत्रफल वाला व सर्वाधिक वर्षा वाला भौतिक विभाग है।
- **दक्षिणी-पूर्वी पठार को दो भागों में विभाजित** किया जा सकता है—

(i) **विंध्यन कगार भूमि** [VDO 2021]

- **धौलपुर, करौली** एवं **सवाईमाधोपुर** जिलों में बलुआ पत्थरों से निर्मित यह कगार भूमि चम्बल के बायें किनारे पर तीव्र ढाल से युक्त है।
- यह चम्बल व बनास नदी के मध्य का भाग है।

(ii) **दक्कन का लावा पठार**

- **कोटा, बूँदी, झालावाड़, बारां** जिलों एवं **भैंसरोड़गढ़** क्षेत्र (चित्तौड़गढ़) में विस्तृत लावा द्वारा फैलाई गई मध्यम काली मिट्टी के अवशेषों युक्त मिट्टी वाला यह उपजाऊ क्षेत्र माना जाता है।
- राज्य की सर्वाधिक वार्षिक वर्षा इसी क्षेत्र के **झालावाड़** जिले में औसत **100 से.मी.** वार्षिक होती है।
- यहाँ की प्रमुख फसलें **कपास, सोयाबीन, अफीम, धनिया** एवं **संतरे** हैं।
- **मुकुन्दवाड़ा (मुकुन्दरा) की पहाड़ियाँ (कोटा**-झालावाड़) एवं **आडावला की पहाड़ियाँ (बूँदी)** इसी क्षेत्र में स्थित हैं। इस क्षेत्र में भवन निर्माण में काम आने वाला कोटा स्टोन, पट्टियाँ एवं काँतले (छोटी व चौड़ी पट्टी/इमारती पत्थर) बहुतायत में मिलते हैं।
- हाड़ौती का पठार, **अरावली** एवं **विंध्याचल** पर्वतमाला को जोड़ने वाली कड़ी है। इसलिए इसे **सक्रांति प्रदेश** भी कहते हैं।

> **नोट—रणथम्भौर** (सवाईमाधोपुर) में अरावली व विंध्याचल पर्वतमालाएँ दोनों आपस में मिलती हैं।

- **बूँदी की पहाड़ियाँ**—इन पहाड़ियों का आकार अर्द्धचन्द्राकार है। जो दोहरी पर्वतमाला के रूप 96 किमी. लम्बी फैली हुई है। इन पहाड़ियों का सर्वोच्च शिखर **सतूर (बूँदी)** है।
- **शाहबाद का उच्च क्षेत्र** बारां जिले के पूर्वी भाग में स्थित है। जिसकी ऊँचाई 300 मीटर है। इस क्षेत्र में विशिष्ट भू-आकृति **घोड़े के नाल की आकृति** की पर्वत श्रेणी है जो रामगढ़ कस्बे के निकट स्थित है। इसे **रामगढ़ की गोलाकार पहाड़ियाँ** भी कहा जाता है। यहाँ पर उल्का पिण्ड गिरने से बनी एक झील भी है। जो **रामगढ़ क्रेटर** नाम प्रसिद्ध है।
- बारां के **रामगढ़ क्रेटर** को राजस्थान सरकार ने GSI के परामर्श से 16 मार्च, 2024 को अधिकारिक रूप से भारत की पहली जियो हेरिटेज साइट (अधसूचित भू-विरासत स्थल) घोषित किया है।
- **डंग-गंगधार उच्च भूमि**—झालावाड़ जिले में स्थित हैं। इसमें धरातलीय विविधता बहुत कम होने से यह एक कृषि क्षेत्र है।

> **नोट—महान सीमा भ्रंश**—राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग से महान सीमा भ्रंश गुजरता है। जो अरावली पर्वतमाला के पूर्व में स्थित है। वह मुख्यतया बूँदी, सवाई माधोपुर की पहाड़ियों के सहारे फैला हुआ है। यह अरावली एवं विंध्याचल पर्वतमाला का मिलन स्थल होने के कारण महान सीमा भ्रंश कहलाता है [VDO 2021] । यह भ्रंश चित्तौड़गढ़ के बेगूं से लेकर कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, सपोटरा (करौली) होते हुए धौलपुर तक फैला है।

- **राजस्थान के भौतिक विभागों का निर्माण क्रम** (प्राचीन से नवीन)

अरावली	—	प्री. केम्ब्रियन युग में (सबसे प्राचीन)
दक्षिणी-पूर्वी पठार	—	क्रिटेशियस युग में
पूर्वी मैदान	—	प्लीस्टोसीन प्रारम्भिक युग में
थार का मरुस्थल	—	प्लीस्टोसीन उत्तर युग में (सबसे नवीन)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- GSI (जियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) द्वारा राजस्थान की 12 साइटों को जियो हेरिटेज साइट घोषित किया गया है।
- थार मरुस्थल विश्व में एकमात्र मरुस्थल है जो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं द्वारा निर्मित है।
- राजस्थान में समुद्रतल से सबसे कम ऊँचा (50 मीटर) क्षेत्र सांचोर (जालोर) एवं बाखासर बाड़मेर में विस्तृत **'नेहड़ क्षेत्र'** जो कच्छ के रन का राजस्थान में विस्तार है।
- भारत के मरुस्थलीकरण एवं भू-अवनयन एटलस (इसरो रिपोर्ट-2017) के अनुसार राजस्थान में मरुस्थलीकरण से प्रभावित क्षेत्र 67% है।
- मालखेत **(मालकेतु) की पहाड़ियाँ** सीकर एवं झुंझुनूं जिलों में स्थित हैं।
- **सुन्धा की पहाड़ियाँ** जालोर जिले में जसवन्तपुरा के निकट स्थित हैं। (राजस्थान का प्रथम भालू अभयारण्य)
- **मेसा पठार** (पर्वत) पर **चित्तौड़गढ़ का दुर्ग** निर्मित है। (ऊँचाई 620 मी.)
- **त्रिकूट पहाड़ी** पर जैसलमेर का दुर्ग **'सोनारगढ़'** स्थित है।
- **चिड़ियाटूंक पहाड़ी** पर जोधपुर का दुर्ग (मेहरानगढ़) स्थित है।
- **सोनगिरी (स्वर्णगिरी/कंचनगिरी)**—जालोर की वह पहाड़ी जिस पर **सोनगढ़ दुर्ग** बना हुआ है।
- अरावली पर्वत को भौगोलिक भाषा में **'मेरु'** स्थानीय भाषा में **'आडावलो'** व बूँदी जिले में **'आडावली/आडावल पर्वत'** कहा जाता है।
- अरावली पर्वतमाला को **अबुल फजल** ने ऊँट की गर्दन व **कर्नल जेम्स टॉड** ने राजपूताना की सुरक्षा दीवार कहा है।
- हनुमानगढ़ के उत्तरी भाग में पाई जाने वाली हल्की पीली रंग की चिकनी मिट्टी को **'मैरा'** कहा जाता है।
- राजस्थान के पूर्वी मैदानी भाग में सिंचाई पूर्णरूप से **कुओं व नलकूपों** से होती हैं।
- जैसलमेर शहर के चारों ओर **जुरैसिक काल** की चट्टानें मिलती हैं।
- राजस्थान के नागौर जिले एवं अजमेर जिले के कुछ भाग में **भूगर्भीय** जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण वहाँ के **निवासियों** की हड्डियों में टेढ़ापन आ जाता है एवं पीठ झुक जाती है। **इस कारण** इस क्षेत्र को **कूबड़ पट्टी/बांका पट्टी** कहा जाता है।
- मकराना (नागौर) की संगमरमर की चट्टानें देहली सुपर **महा समूह** के **रायलो शैल समूह** की चट्टानें हैं। जबकि **जालौर, सिवाणा, मोकलसर** की ग्रेनाइट पर्वत विन्धन शैल समूह श्रेणी की हैं व मालाणी आग्नेय शैल समूह की है।
- राजस्थान की प्री-केम्ब्रियन चट्टानों का आधारभूत वर्णन **ए.एम. हेरोन** ने किया है।
- राज्य में **'दक्कन ट्रेप'** की चट्टानों का विस्तार **कोटा-झालावाड़** जिलों में हैं।
- अरावली पर्वत श्रृंखला के समानान्तर गुजरने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग

राजस्थान में विविध क्षेत्रीय/सांस्कृतिक/ऐतिहासिक नामकरण

प्राचीन नाम	सम्बन्धित क्षेत्र	प्राचीन नाम	सम्बन्धित क्षेत्र
मरुवाड़/मारवाड़	जोधपुर रियासत (जोधपुर, जालौर, पाली, बाड़मेर, नागौर एवं जैसलमेर जिले का पोकरण क्षेत्र)	मालवदेश	प्रतापगढ़ एवं झालावाड़ जिलों का मध्यप्रदेश का सीमावर्ती कुछ भाग।
जांगलू/जांगल देश	बीकानेर जिला एवं जोधपुर जिले का उत्तरी क्षेत्र।	माडधरा/वल्ल/दुंगल/मांड [VDO (Pre) 2021]	जैसलमेर क्षेत्र।
मालाणी	बालोतरा (बाड़मेर) एवं निकटवर्ती क्षेत्र।	गोडवाड़ बेसिन	पाली, सिरोही एवं जालौर जिले।
गोडवाड़ क्षेत्र	पाली जिले का दक्षिणी क्षेत्र।	नेहड़	सांचौर (जालौर) का पश्चिमी क्षेत्र।
शिवि मेवाड़/मेदपाट/प्राग्वाट	उदयपुर संभाग (मध्यकालीन मेवाड़ राज्य)।	अर्बुद/देवड़ावटी/चन्द्रावती [VDO 2022]	आबू (सिरोही) का निकटवर्ती क्षेत्र।
थली	मरुभूमि/रेगिस्तानी क्षेत्र	सिवाणची	सिवाना (बाड़मेर) क्षेत्र।
भोमट [VDO 2022]	उदयपुर एवं डूँगरपुर जिलों में स्थित अरावली का दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र।	भोराट	कुंभलगढ़ (राजसमंद) से गोगुन्दा (उदयपुर) के मध्य का क्षेत्र।
गिरवा	उदयपुर नगर के चारों ओर का पहाड़ी क्षेत्र।	वागड़/वार्गट/वाग्वार	डूँगरपुर-बाँसवाड़ा क्षेत्र। [VDO 2022]
कांठल/देवलिया	प्रतापगढ़ क्षेत्र। [VDO 2022]	शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूँ एवं चूरू जिले।
छप्पन की पहाड़ियाँ	बाड़मेर जिले के **सिवाना**-मोकलसर- पादरू के मध्य स्थित छप्पन पहाड़ियों का समूह।	छप्पन का मैदान	प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा के मध्य छप्पन गाँवों या नदी-नालों का समूह।
ऊपरमाल	बिजोलिया से भैंसरोड़गढ़ तक का क्षेत्र।	मेरवाड़ा	अजमेर जिला (किशनगढ़ क्षेत्र को छोड़कर) एवं दिवेर (राजसमन्द) क्षेत्र।
ढूंढाड़	जयपुर रियासत (जयपुर, दौसा, टोंक सवाई माधोपुर) एवं पश्चिमी अलवर क्षेत्र।	मेवात [VDO 2022]	अलवर एवं भरतपुर जिलों का उत्तरी-पूर्वी मेव जाति बहुल क्षेत्र।
यौद्धेय	श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों का क्षेत्र।	मालखेराड़	मालपुरा (टोंक) एवं जहाजपुर (भीलवाड़ा) क्षेत्र।
सुजला क्षेत्र	सुजानगढ़, जसवन्तगढ़ एवं लाडनूँ का सम्मिलित क्षेत्र।	राठ	अलवर जिले का हरियाणा से लगता क्षेत्र।
हाड़ौती [VDO 2022]	कोटा संभाग।	सूरसेन	भरतपुर, धौलपुर व करौली
मेवल	डूँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य का भाग	तोरावाटी	शेखावाटी में कांतली नदी का प्रवाह क्षेत्र
कुरू देश	अलवर राज्य का उत्तरी भाग	देशहरो	जरगा व रागा पर्वत के आसपास का पहाड़ी क्षेत्र
मत्स्य क्षेत्र	अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली	साल्व प्रदेश	अलवर का क्षेत्र
माल	दक्षिणी-पूर्वी पठारी क्षेत्र	मेरू	अरावली पर्वतीय क्षेत्र
गुर्जरत्रा	जोधपुर का दक्षिणी भाग अर्थात् मण्डोर क्षेत्र	बांगड या बांगर	पाली, नागौर, झुंझुनूँ व सीकर का कुछ भाग (लूणी नदी का अपवाह क्षेत्र)
नाली	हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों में घग्घर नदी का क्षेत्र।	सपादलक्ष	साँभर व आसपास का क्षेत्र

ण की प्रक्रिया के कारण ग्रामीण
ूरों) का प्रवासन होने के कारण
ो कहलाती है।
की माँग व पूर्ति में असंतुलन के
रोजगारी कहा जाता है। इसके
होना, तकनीकी ज्ञान की कमी,
है।
लोग काम के लिए योग्य भी है
किन उन्हें काम नहीं मिल पाता
है। यह अवसरों की कमी के

दृश्य या छिपी हुई बेरोजगारी भी
करने में आवश्यकता से अधिक
श्रमिकों को निकाल देने से कुल
पड़ता हो अर्थात् इन अतिरिक्त
है, तो इसे हम प्रच्छन्न बेरोजगारी
गारी भारतीय कृषि क्षेत्र की

निश्चित मौसम (समय अवधि)
है, ऐसी स्थिति मौसमी बेरोजगारी
र, आइसक्रीम एवं चीनी कारखानों
में पैदा होती है।

ऐसी बेरोजगारी जिसमें कार्यकारी
की तलाश में दिलचस्पी ही नहीं
रों से अधिक मजदूरी पर ही काम
किसी व्यक्ति को कार्य तो मिल
र पर करने से मना कर देता है कि
बेरोजगारी स्वैच्छिक या ऐच्छिक

जब प्रभावपूर्ण मांग में कमी होती
ग जो बेरोजगारी उत्पन्न होती है,
।
ारी उस स्थिति में पैदा होती है जब
या नई नौकरी की तलाश कर रहा
लिए जो बेरोजगारी उत्पन्न होती है,
है। **आर्थिक रूप से यह सबसे**
बेरोजगारी भी कहा जाता है।
में मंदी के फलस्वरूप या उत्पादन
िवर्तन के कारण उत्पन्न बेरोजगारी
है। **यह बेरोजगारी दीर्घकालीन**

ोजगारी संरचनात्मक है।

बेरोजगारी निवारण के लिये केन्द्र व राज्य सरकार की प्रमुख योजनाएँ

- **इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना**—राजस्थान सरकार द्वारा 2021 में शहरी क्षेत्र के स्ट्रीट वेंडर्स व सेवा क्षेत्र के युवाओं तथा बेरोजगारों को रोजगार के लिए शुरु की गई है। इस में 5 लाख जरूरतमंदों को 50 हजार रुपए तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जाएगा।
- **इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना**—बजट 2022-23 में इसे 9 सितम्बर, 2022 को लागू किया गया। इसके तहत शहरी क्षेत्र में रहने वाले परिवारों को भी उनके द्वारा मांगे जाने पर प्रतिवर्ष 100 दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा। 1 अप्रैल, 2023 से इसे बढ़ाकर 125 दिवस कर दिया गया है।
- **मुख्यमंत्री युवा संबल योजना (राजस्थान बेरोजगारी भत्ता योजना)**—
  - राज्य सरकार की इस योजना को **1 फरवरी, 2019** से शुरु किया गया था **[VDO 2022]**। इसके तहत पुरुषों के लिए ₹3000 तथा महिलाओं, ट्रांसजेंडर एवं दिव्यांगजनों के लिये ₹3500 पात्रता रखने वाले बेरोजगार युवाओं को प्रतिमाह अधिकतम दो वर्ष या रोजगार पाने तक जो भी पहले हों, वितरित किया जा रहा है।
  - 1 जनवरी 2022 से इसमें नवीन निर्देशों के तहत वर्तमान में बेरोजगारी भत्ता पाने के लिए अनिवार्य रूप से विभिन्न राजकीय विभागों मे कम-से-कम 3 महीने के कौशल प्रशिक्षण के बाद चार घंटे की इंटर्नशिप करनी होगी। इसके अलावा भत्ता राशि में ₹1000 की बढ़ोतरी की गई है।
  - वर्तमान में इसके तहत पुरुषों को **₹4000** एवं महिलाओं को **₹4500** प्रतिमाह दिये जा रहे है।
  - योजना के तहत युवाओं को इंटर्नशिप और कौशल प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
  - इस योजना के तहत प्रत्येक वर्ष अधिकतम दो लाख युवाओं को बेरोजगारी भत्ता देकर लाभान्वित किया जाता है।
- **सुन्दर सिंह भंडारी ईबीसी स्वरोजगार योजना**—यह योजना 13 मई 2018 को लागू की गई। इसके तहत आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लगभग 50,000 परिवारों को स्वरोजगार हेतु 50,000 रु. तक की ऋण सहायता 4% ब्याज दर पर दी जाएगी।
- **भैरोसिंह शेखावत अंत्योदय स्वरोजगार योजना**—यह योजना 13 मई 2018 से लागू की गई। इसके तहत SC/ST, OBC वर्ग के 50,000 परिवारों को स्वरोजगार हेतु 50,000 रुपये तक की ऋण सहायता 4% ब्याज दर पर दी जाएगी।

वर्तमान में राजस्थान में न्यूनतम मजदूरी की दरें (जनवरी, 2023 से लागू)

रोजगार का वर्ग	वर्तमान दरें (प्रतिदिन न्यूनतम मजदूरी)	प्रतिमाह न्यूनतम मजदूरी
अकुशल	₹285	₹7410
अर्द्धकुशल	₹297	₹7722
कुशल	₹309	₹8034
अत्यधिक कुशल	₹359	₹9334

- इस प्रकार न्यूनतम मजदूरी की पूर्व की दरों की तुलना में वर्तमान दरों में ₹26 की वृद्धि सभी श्रेणियों में की गई है।

❖ **जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) : (प्रथम चरण), जुलाई 2000—**
 ✧ परियोजना के फंडिंग पैटर्न में 80 प्रतिशत विश्व बैंक का, 15 प्रतिशत राज्य सरकार तथा 5 प्रतिशत लाभान्वित का अंशदान था।
 ✧ विश्व बैंक पोषित जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना राजस्थान के गरीबतम जिलों में से सात जिलों यथा बारां, चूरू, दौसा, धौलपुर, झालावाड़, राजसमंद एवं टोंक के 42 विकास खण्डों में जुलाई 2000 में शुरू की गई थी।
 ✧ परियोजना का प्रथम चरण दिनांक 31.12.2007 को समाप्त हो गया है।

❖ **डी.पी.आई.पी. (द्वितीय चरण), जुलाई 2010—**
 ✧ प्रस्तावित द्वितीय चरण में राज्य के 4 लाख बीपीएल परिवारों को स्थाई जीविकोपार्जन के संसाधन एवं आवश्यक आधारभूत सुविधायें उपलब्ध करवाकर इनका आर्थिक स्तर बढ़ाकर गरीबी रेखा से ऊपर उठाये जाने का लक्ष्य रखा गया है।

❖ **दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM)—**
 ✧ राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन को **29 मार्च, 2016** से दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) नाम दिया गया है।
 ✧ यह मिशन गरीबों के लिए, गरीबों का तथा गरीबों द्वारा चलाया जाने वाला कार्यक्रम है। इसे ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा चलाया जा रहा है।
 ✧ यह दुनिया की सबसे बड़ी सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य गरीब परिवारों को सार्थक स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसरों तक पहुँच प्रदान करना है।
 ✧ इसमें सभी महिला स्वयं सहायता समूह सालाना 7% की दर पर प्रति SHG (स्वयं सहायता समूह) 3 लाख रुपए तक का ऋण प्राप्त कर सकते है। इसमें सभी पात्र SHG को ब्याज सब्सिडी भी दी जाती है।

❖ **दीनदयाल अन्त्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (DAY-NULM)—**
 ✧ भारत सरकार के आवास और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा **24 सितम्बर, 2013** को स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना के स्थान पर **राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन** प्रारम्भ किया गया। बाद में इसका नाम DAY-NULM कर दिया गया है।
 ✧ इसका उद्देश्य रोजगार के अवसरों तक पहुँच प्रदान करके शहरी गरीब परिवारों की गरीबी को कम करना है।
 ✧ इसका केन्द्र व राज्य अनुपात 60 : 40 है।
 ✧ इस योजना के तहत् शहरी बेघरों के लिए आश्रय की योजना भी लागू की गई है। इसका उद्देश्य शहरी बेघरों को आवश्यक सेवाओं से सुसज्जित आश्रय प्रदान करना भी है।

जीवन-धारा योजना—

❖ 'जीवन-धारा योजना' ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत (1988-89) शुरु की गई एक योजना थी। इसका मुख्य उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के छोटे और सीमांत किसानों को सिंचाई के लिए कुओं के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना था। इस योजना का लक्ष्य उनकी कृषि उत्पादकता को बढ़ाकर उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करना था।

राजस्थान ग्रामीण आजीविका परियोजना (RRLP)—

❖ इस योजना का उद्देश्य राजस्थान के 18 लक्षित जिलो के 51 खंडों में गरीब ग्रामीणों, उपेक्षित समूह व महिलाओं का सशक्तीकरण एवं उनके संसाधनों को बढ़ाना है।

पश्चिमी राजस्थान में गरीबी उपशमन परियोजना (MPOWER)

❖ राजस्थान सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट की सहायता से पश्चिमी राजस्थान गरीबी उपशमन परियोजना पश्चिमी राजस्थान के छह खंडों क्रमशः जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, पाली, सिरोही और जालौर जिले में से प्रत्येक जिले से एक खंड में परियोजना स्वीकृत की गई है।
❖ दो नए ब्लॉक सिरोही जिले में पिंडवाड़ा व जोधपुर जिले में बालेसर को भी वर्ष 2016-17 से इस योजनांतर्गत जीवन स्तर के संवर्द्धन हेतु चयनित किया गया है।
❖ इस परियोजना का दूरगामी उद्देश्य पश्चिमी राजस्थान के चयनित खंडों, जो कि सबसे गरीब हैं, में गरीबों की आय में वृद्धि करके गरीबी को कम करना है।

गरीबी तथा बेरोजगारी उन्मूलन से संबंधित योजनाएँ

1.	अन्त्योदय योजना	1977-78
2.	काम के बदले अनाज-अनाज कार्यक्रम	1977-78
3.	मरुभूमि विकास कार्यक्रम	1977-78
4.	ट्राइसम योजना	1979
5.	एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम	1980
6.	ड्वाक्रा (DWCRA) योजना	1982
7.	इंदिरा आवास योजना	1985-86
8.	जवाहर रोजगार योजना	1989
9.	दस लाख कुंआँ योजना	1988-89
10.	नेहरु रोजगार योजना	1989
11.	प्रधानमंत्री रोजगार योजना	1993
12.	स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना	1997
13.	स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना	1999
14.	जवाहर ग्राम समृद्धि योजना	1999
15.	प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना	2000-01
16.	अन्नपूर्णा योजना	2000
17.	अन्त्योदय अन्न योजना	2000
18.	जे.पी. रोजगार गारंटी योजना	2002-03
19.	राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम	2006

9 राजस्थान का अकाल व सूखा, बढ़ता रेगिस्तान [Rajasthan's Famine and Drought, Rising Desert]

अकाल

- ❖ सामान्यतः वर्षा की कमी के कारण क्षेत्र में जल की कमी की स्थिति को **'सूखा'** कहते है। जब सूखे के कारण मनुष्यों व पशु पक्षियों के लिए खाद्यान्न, चारा व पीने के पानी की कमी हो जाती है, तो उसे **'अकाल'** कहा जाता है।
- ❖ राजस्थान, भारत में अकाल एवं सूखे से **सर्वाधिक प्रभावित राज्य** है।
- ❖ भारत का **सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला सूखा क्षेत्र** राजस्थान में है। उत्तरी एवं पश्चिमी राजस्थान, कच्छ एवं सौराष्ट्र (गुजरात), विदर्भ (महाराष्ट्र), रायलसीमा (तमिलनाडु), तेलंगाना, मध्य कर्नाटक, प. मध्यप्रदेश, दक्षिणी हरियाणा एवं छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा के आंतरिक क्षेत्र भारत के सूखा प्रभावित क्षेत्र हैं।
- ❖ राज्य में बार-बार अकाल पड़ने के प्रमुख कारण **अरावली पर्वतमाला की अवस्थिति, मरुस्थल का विस्तार, वनस्पति का अभाव, मिट्टी की प्रकृति, वाष्पीकरण की तीव्रता, वर्षा की कमी एवं अनियमितता** एवं **पवनों की दिशा** है।
- ❖ राजस्थान में अकाल चार प्रकार के माने गए हैं—
  - **(i) अन्नकाल**—जिसमें कृषि उपज (अन्न) का उत्पादन नहीं होता।
  - **(ii) जल काल**—जिसमें जल का अभाव हो जाता है।
  - **(iii) तृणकाल**—जिसमें पशुओं के लिए चारे (तृण) का अभाव होता हैं।
  - **(iv) त्रिकाल**—जिसमें अन्न, जल एवं तृण (चारा) तीनों का अभाव रहता है। (राजस्थान में वर्ष 1987-88 में त्रिकाल पड़ा था।)
- ❖ **'तीजो कुरियो आठवो काल'** एक प्रसिद्ध राजस्थानी कहावत है, जिसके अनुसार राज्य में हर तीसरे वर्ष कुरिया (अर्द्ध-अकाल) एवं प्रति आठवें वर्ष भयंकर अकाल अवश्य पड़ता है।
- ❖ विक्रम संवत् 1900 एवं 1901 (1843 एवं 1844 ई.) में पड़े विनाशकारी अकाल को **'सहसा-भूदसा'** कहा जाता है।
- ❖ अब तक का सबसे विनाशकारी अकाल वि.सं. **1956 (1899 ई.)** में पड़ा अकाल माना जाता है। यह एक भयावह एवं भयंकर त्रिकाल था, जिसे **'छपन्ना काल'** या **'छप्पनिये का काल'** कहा जाता है। यह अकाल इतना भयंकर था कि लोगों ने पेड़ों की छाल खाकर अपना भरण-पोषण किया था।

नोट—

राजस्थान में प्रमुख अकाल	वर्ष
✧ चालीसा अकाल	1783 ई.
✧ पंचकाल	1812-13 ई.
✧ सहसा भूदसा	1843-44 ई.
✧ छपनिया काल	1899-1900 ई.

- ❖ राजस्थान में अकाल के कारण **मरुस्थलीकरण की तीव्रता** भी बढ़ रही है।
- ❖ अकाल पड़ने पर राज्य के सूखा प्रणव क्षेत्र में रहने वाली लगभग 70% जनसंख्या, जिसका प्रमुख आधार **कृषि एवं पशुपालन** है, बेरोजगार हो जाती है। इस दौरान राज्य के किसान या तो निकटवर्ती कस्बों एवं शहरों में मजदूरी के लिये चले जाते हैं या फिर अन्य राज्यों में कृषि एवं मजदूरी हेतु चले जाते हैं। ये लोग मुख्यतः **गुजरात, मध्यप्रदेश, पंजाब एवं हरियाणा** राज्यों की ओर पलायन करते हैं।
- ❖ पिछले तीन दशकों में अकाल एवं सूखे से सर्वाधिक प्रभावित पश्चिमी राजस्थान से अधिकांश परिवारों में से युवक **'दक्षिणी भारत'** की ओर स्थायी रूप से मजदूरी करने के उद्देश्य से गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गोआ, तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश राज्यों में जा रहे हैं, जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कुछ हद तक मजबूत हुई है। ऐसे प्रवासियों की सर्वाधिक संख्या **मुम्बई** नगर में देखने को मिलती है।
- ❖ **जुलाई-अगस्त** के महीने तक पर्याप्त वर्षा नहीं होने पर राज्य में अकाल की स्थिति को बनते देख पशुपालक (विशेष रूप से भेड़, बकरी एवं ऊँट पालक) राज्य से पलायन करते हैं। यह पलायन मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, पंजाब एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में अधिक होता है।

राजस्थान में अकाल की स्थिति में हुई क्षति

कृषि वर्ष	प्रभावित जिलों की संख्या	प्रभावित गाँवों की संख्या
1981-82	26	–
1991-92	30	–
2001-02	18	–
2002-03	32 (सर्वाधिक)	40990
2003-04	3	–
2004-05	31	19814
2005-06	22	15778
2009-10	27	33464
2010-11	2	1249
2015-16	19	14487
2016-17	13	5656
2017-18	16	6838
2018-19	9	5355
2019-20	21	14331
2020-21 [VDO 2022]	6	2026
2021-22	10	6122
2022-23	1	92
2023-24	13	5110

[स्रोत : आर्थिक समीक्षा 2023-24 से]

- ❖ वर्ष 2000-2001 में धौलपुर को छोड़कर राज्य के समस्त जिलें अकाल से प्रभावित हुए थे। उस समय राजस्थान गत सौ वर्षों के सबसे भीषण

❖ शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा वर्ष 1985 से यहाँ कार्यरत है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून से सम्बद्ध यह संस्थान शुष्क क्षेत्रों के वनीकरण के लिए वैज्ञानिक शोध के माध्यम से उत्तम तकनीक विकसित करता है।

नवीन तथ्य

❖ राजस्थान में शुष्क व अर्द्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र (विशेषकर अरावली के पश्चिम में स्थित जिले, जो मरुस्थली क्षेत्र है) सूखे से अधिक प्रभावति है।

❖ वर्ष **2023** (खरीफ संवत्-2080) में सूखे के कारण राज्य के **11** जिलों (जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर, बीकानेर, फलौदी, चूरू, नागौर, डूँगरपुर, अजमेर एवं ब्यावर) की **48 तहसीलों** को सूखा अभावग्रस्त घोषित किया गया।

❖ वर्ष **2023** (खरीफ संवत्-2080) में राज्य के **2 जिलों** (जालौर व नागौर) के कुल **238** गाँवों को बाढ़ से फसल खराब होने पर अभावग्रस्त घोषित किया गया।

❖ वर्ष **2020** में राजस्थान के कुल **32 जिले (बांसवाड़ा को छोड़कर)** टिड्डी दल आक्रमण से प्रभावित रहे थे।

❖ जून, **2023** में आए बिपरजॉय चक्रवात से राज्य के पाँच जिले—जालौर, सिरोही, पाली, बाड़मेर एवं राजसमंद प्रभावित हुए।

❖ राजस्थान में सर्वाधिक भूकंप संभावित क्षेत्र अलवर, कोटपूतली-बहरोड़, खैरथल-तिजारा, डीग, बाड़मेर एवं जालोर का सांचौर क्षेत्र है।

❖ राजस्थान में टिड्डियों का प्रवेश द्वार जैसलमेर को माना जाता है।

चलाये जाये।

मरुस्थलीकरण से संबंधित योजनाएँ

1. मरु विकास कार्यक्रम (डी.डी.पी.)—

- ✧ मरू विकास कार्यक्रम मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया को रोकने, प्रभावित क्षेत्रों में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और इन क्षेत्रों में भूमि की उत्पादकता और जल संसाधनों में वृद्धि करने के उद्देश्य से समेकित क्षेत्र विकास कार्यक्रम के रूप में **1977-78** [VDO 2022] से शुरू किया गया था।
- ✧ प्रारम्भ से वर्ष 1994-95 तक यह कार्यक्रम राज्य के 11 जिलों के 77 ब्लॉकों में कार्यान्वित किया जा रहा था। बाद में हनुमंत राव समिति की सिफारिशों के आधार पर 8 नए ब्लॉकों को और इसमें जोड़ा गया। वर्तमान में (1995 से) यह 16 जिलों के 85 विकास खंडों में संचालित है।
- ✧ इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन 1 अप्रैल, 2003 से हरियाली मार्गदर्शिका के आधार पर किया जा रहा था, वर्तमान में इसे '**समन्वित वाटरशैड मैनेजमेंट कार्यक्रम**' में समाहित कर दिया गया है।

2. मरुप्रसार रोक योजना (CDP)—

- ✧ केन्द्र सरकार द्वारा मरुप्रसार पर रोक के लिए वर्ष 1999-2000 से यह योजना राज्य के 10 मरुस्थलीय जिलों में क्रियान्वित की जा रही है।
- ✧ इसका उद्देश्य-शेल्टर बेल्ट बनाने एवं वृक्षारोपण के माध्यम से मिट्टी के टीलों को रोककर मरुस्थलीकरण को रोकना है।

3. केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी/CAZRI)

- ✧ केन्द्र सरकार ने मरुस्थलीकरण को रोकने हेतु **अक्टूबर, 1952** में मरुस्थल वृक्षारोपण शोध केन्द्र की स्थापना जोधपुर में की गयी।
- ✧ 1957 में परिवर्तन कर इसका नाम Desert Afforestation and Social Conservation कर दिया तथा **1959** में इसे काजरी का रूप दे दिया, जिसका कार्य मरुस्थली समस्याओं पर शोध करना है।
- ✧ इसका प्रमुख कार्य शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वन संपदा व कृषि का विंकास करने हेतु पेड़-पौधों, मिट्टी, जल व भूमि के संबंध में व्यापक सर्वेक्षण व अध्ययय करना एवं मरुस्थली समस्याओं पर शोध करना है। इसके अलावा कृषि उपज में वृद्धि करना एवं मरुस्थल को रोकने हेतु वृक्षारोपण करना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है।

4. UNCCD—

- ✧ मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम कन्वेंशन (UNCCD) का 1994 में पेरिस में गठन किया गया। इसमें 197 देश शामिल है। भारत भी इसका हस्ताक्षरकर्ता देश है।
- ✧ भारत ने मरुस्थलीकरण को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (UNCCD) पर 14 अक्टूबर, 1994 को हस्ताक्षर किये।
- ✧ 2010-20 दशक को मरुस्थलीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक के रूप में मनाया गया।

❖ UNCCD-COP-16—

- ✧ UNCCD के conference of Parties के 16वें सेशन का आयोजन 2 से 13 दिसम्बर, 2024 के मध्य रियाद, सउदी अरब में

(इसकी इ
✧ मरुस्थली
एकजुट
5. 'राजीव गांधी
✧ **प्रारम्भ–**
✧ राज्य में
राज्य में
जल का
✧ इसका व
✧ **मुख्य उ**
(i) ज
(ii) पर
(iii) गि
क
(iv) व
(v) गां
(vi) स
(vii) ज
प्र
✧ राजीव ग
2 वर्ष नि
राज्य के
में किया
6. अटल भूजल
✧ विश्व बैंक
वॉटर मैने
✧ इसका शु
बैंक की
✧ यह योजन
21 से 20
✧ इसके प्रथ
गया है। रि
✧ इस योजना
भारत सरव
दो उद्देश्य है
✧ गिर
✧ जन
7. प्रधानमंत्री कृ
✧ राजस्थान
एवं फव्वा
2005-0

11 राजस्थान में भूमि एवं जल संसाधन [Land and Water Resources in Rajasthan]

भूमि संसाधन

- प्रकृति ने हमें अनेक प्राकृतिक संसाधन निःशुल्क उपलब्ध कराए है, उनमें से भूमि भी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संसाधन है। विश्व के कुल क्षेत्रफल का लगभग 11% भाग ही ऐसा है, जहाँ कृषि होती है। विश्व के विभिन्न भागों मे जनसंख्या वितरण में असमानता के कारण सभी क्षेत्रों में भूमि और जलवायु मे पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। उबड़-खाबड़ भू-आकृति, पर्वतीय ढ़ाल, दलदली निम्न भाग, रेतीला क्षेत्र, सघन वन क्षेत्र आदि में जनसंख्या कम निवास करती है, जबकि नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में कृषि कार्य के लिए उपयुक्त भूमि उपलब्धता के कारण अधिक जनसंख्या पाई जाती है।
- स्वामित्व के आधार पर भूमि को दो भागों में विभाजित किया जाता है—निजी और सामुदायिक भूमि।
- जनसंख्या वृद्धि के साथ भूमि पर दबाव बढ़ता जाता है क्योंकि भूमि संसाधन सीमित है। स्थान के अनुरुप भूमि की गुणवता में अन्तर होता है। इसीलिए भूमि के उपयोग में भी अन्तर पाया जाता है।
- मानव प्राचीन समय में जिस भूमि पर चरागाह, सामुदायिक वन, औषधीय जड़ी बूटियां एकत्र करता रहा है आज उसी भूमि पर अंधाधुन व्यापारिक गतिविधियाँ व नगरों का विकास व इमारतों के निर्माण से भूमि संसाधन में बड़ी कमी होने लगी है। इसे भू-उपयोग परिवर्तन कहते है।
- भूमि संसाधन की उपयोगिता उस क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी की प्रकृति पर निर्भर करती है। स्थल रूपों के अनुसार मिट्टी का प्रकार भी बदल जाता है।
- मिट्टी को सामान्यतः दो आधार पर वर्गीकृत किया जाता है—
  पहला रंग के आधार पर जैसे—काली मिट्टी, लाल, पीली मिट्टी,
  दूसरा मिट्टी की प्रकृति के आधार पर जैसे—जलोढ़, रेतीली, लवणीय मिट्टी।
- राज्य केउत्तरी पूर्वी मैदान में जलोढ़ मिट्टी का जमाव अधिक है, तो वहीं पश्चिमी राजस्थान के थार मरुस्थल में रेतीली मिट्टी पायी जाती है। दक्षिण-पूर्व में हाड़ौती प्रदेश में काली मिट्टी की अधिकता है तो अरावली प्रदेश में लाल-लोम, लाल-काली मिट्टी मिलती हैं। वही नहरी क्षेत्रों में क्षारीय मिट्टी की अधिकता है।
- राजस्थान का भौगोलिक क्षेत्रफल 3.42 लाख वर्ग किमी है। जो कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.41% है। भारत की कुल जनसंख्या का 5.66% जनसंख्या यहा निवास करती हैं। राजस्थान में भूमि उपयोग स्वरूप क्षेत्र में पारिस्थितिक संतुलन को निर्धारित करता है और पर्यावरण की स्थिति को भी समझने में मदद करता है।
- किसी क्षेत्र का भूमि (भू) उपयोग स्वरूप वनस्पति, भूमि की गुणवत्ता, स्थानीय मौसम और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। किसी भी क्षेत्र के भूमि उपयोग के स्वरूप और समयोपरि बदलाव की गतिशीलता को समझना आवश्यक है।
- राजस्थान की आर्थिक समीक्षा 2024-25 के अनुसार राजस्थान में भू-उपयोग (भू-उपयोग संख्यिकी-2023-24 के अनुसार) विवरण निम्न प्रकार है—
  - वर्ष 2023-24 में राज्य की कुल रिपोर्ट की गई भूमि 342.74 लाख हेक्टेयर रही, जिसमें से 53.10% शुद्ध बुवाई क्षेत्र था।

भू-उपयोग सांख्यिकी 2023-24 के अनुसार भू-उपयोग विवरण

भूमि उपयोग के प्रकार	क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर)	%
वानिकी	27.86	8.13
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि	20.32	5.93
ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	23.61	6.89
स्थायी चरागाह	16.49	4.61
वृक्षों के झुण्ड	0.38	0.11
बंजर भूमि	35.17	10.26
अन्य चालू पड़त भूमि	19.60	5.72
चालू पड़त	17.31	5.05
शुद्ध बोया	181.99	53.10
कुल क्षेत्र	342.74	100.00

(स्रोत-आर्थिक समीक्षा-2024-25)

- राजस्थान वन रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान में भू-उपयोग के आंकड़े—

भूमि उपयोग के प्रकार	क्षेत्रफल (लाख हैक्टेयर)	%
जंगल	2,756	8.04
खेती के लिए अनुपलब्ध भूमि	4,366	12.73
स्थायी चरागाह और अन्य चरागाह भूमि	1,673	4.88
विविध वृक्ष उपज और उपवनों के अंतर्गत भूमि	24	0.07
कृषि योग्य बंजर भूमि	3,831	11.17
वर्तमान परती के अलावा अन्य परती भूमि	1992	5.81
वर्तमान परती भूमि	1742	5.08
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	17,903	52.22
भूमि उपयोग के लिए रिपोर्टिंग क्षेत्र	34,287	100.00
भौगोलिक क्षेत्र	34,224	

- **शुद्ध बोया गया क्षेत्र—**
  - कुल विवरण क्षेत्र का आधे से अधिक कृषि कार्य के अधीन है जो साबित करता है कि राजस्थान अभी भी अनिवार्य रूप से कृषि राज्य है।
  - अत्यधिक सघन (50% से अधिक) जिले पूर्वी राजस्थान में अलवर,

रहा है।

...में भूजल दोहन का परिदृश्य

भू-जल संसाधनों का आंकलन एक सतत प्रक्रिया है जो प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर किया जाता है। विभाग द्वारा राज्य के जिलेवार भू-जल संसाधनों का आंकलन भारत सरकार की ग्राउन्ड वाटर एस्टीमेशन कमेटी (जी.ई.सी.) द्वारा जारी दिशा निर्देश 2015 के अनुसार किया जाता है। भू-जल संसाधनों की आंकलन की नवीनतम रिपोर्ट राज्य स्तरीय समिति (SLC) द्वारा दिनांक **21 सितम्बर, 2023** को अनुमोदन की गई।

राज्य के भू-जल मूल्यांकन हेतु पंचायत समिति खण्ड अर्थात् **ब्लॉक** को मूल्यांकन इकाई माना गया है।

2001 में कुल ब्लॉक **237** थे जो 2022 में **302** हो गये, इनका विस्तार राज्य के **41** जिलों में है।

नवीनतम भू-जल आकलन रिपोर्ट-2024 में 295 पंचासत समितियों (ब्लॉक) तथा 7 शहरी क्षेत्रों सहित कुल **302** इकाइयों (ब्लॉकों) का आकलन किया गया है।

इन ब्लाकों को पांच श्रेणियों में विभक्त किया गया है, ये हैं—1. **सुरक्षित** (Safe), 2. **अर्द्ध विषम** (Semi-Critical), 3. **विषम** (Critical), 4. **अति दोहित** (Over-exploited) और 5. **लवणीय** (Saline)। इनका राज्य में स्वरूप तालिका में प्रदर्शित है—

श्रेणी	वर्ष में ब्लॉकों की संख्या					
	1984	**2001**	**2009**	**2022**	**2023**	**2024**
सुरक्षित (Safe)	135	49	31	38	38	37
अर्द्ध विषम (Semi-Critical)	34	21	16	20	22	21
विषम (Critical)	26	80	25	22	23	27
अति दोहित (Over-exploited)	41	86	166	219	216	214
लवणीय (Saline)	1	1	1	3	3	3
योग	237	237	239	302	302	302

...भू-जल संसाधन, जोधपुर, राजस्थान सरकार 2021-22, आर्थिक समीक्षा 2023-24.

...र्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2024 में राज्य के 302 ब्लाकों ...से **214** अत्यधिक दोहित अर्थात् **'डार्क जोन या अन्ध क्षेत्र'** (...ark Zone) में आ चुके हैं। **केवल 37 ब्लॉक ही सुरक्षित श्रेणी ...हैं।**

...ब्लॉक अर्थात् **चूरू के तारानगर, बीकानेर का खाजूवाला** और **...मानगढ़ का रावतसर लवणीय श्रेणी (पूर्णतः खारे)** में है। भूजल के ...यधिक दोहन से राज्य में भूजल का स्तर निरंतर नीचा होता जा रहा है। ...क्षेत्र में पानी का स्तर सामान्य मापदंडों से नीचे चला जाता है, उसे **...र्क जोन या अन्ध क्षेत्र'** कहा जाता है।

(चूरू)।

❖ फ्लोराइड से न्यूनतम प्रभावित स्थान—**भोजासर (चूरू)** व **अजीतगढ़ (सीकर)**।

राजस्थान में भूमिगत जल संसाधन की वर्तमान स्थिति

❖ केन्द्रिय भूजल प्राधिकरण द्वारा राज्य के नोटिफाइड डार्क एवं एग्रो जोन (भूमिगत जल दोहन प्रतिबंधित प्रशासनिक खण्ड) निम्न है—
जयपुर में—झोटवाड़ा, सांभर, गोविन्दगढ़, सांगानेर, बस्सी, आमेर, शाहपुरा।
अजमेर में—पीसांगन, पुष्कर वेली।
बाड़मेर में—बटऊ (Baetu)।
चूरू में—राजगढ़।
जालौर में—सायला, सांचौर, भीनमाल, जालौर, रानीवाड़ा।
झुंझुनूं में—नवलगढ़, उदयपुरवाटी, झुंझुनूं, सूरजगढ़, बुढाना, चिड़ावा।
जोधपुर में—ओसियाँ, भोपालगढ़, बिलाड़ा, मण्डौर।
करौली में—टोडाभीम।
नागौर में—मेड़ता, मुण्डावा, कुचामन।
सीकर में—धोड़, श्रीमाधोपुर।
चित्तौड़गढ़—चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा।

❖ **संवेदनशील श्रेणी**—अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, सीकर, सिरोही, उदयपुर।

❖ वर्तमान में राज्य में **घग्घर** एवं **माही क्षेत्र** ही सुरक्षित श्रेणी में पाये गये हैं।

❖ इनके अलावा कुछ जिलों की अन्य पंचायत समितियां भी सुरक्षित श्रेणी में है। **सुरक्षित श्रेणी के ब्लॉक निम्नलिखित हैं—**

जिला	**सुरक्षित श्रेणी ब्लॉक**
हनुमानगढ़	भादरा, हनुमानगढ़, पीलीबंगा, सांगरिया, टिब्बी, नोहर
गंगानगर	गंगानगर, परमपुर, करणपुर, सार्दुलशहर, सूरतगढ़
अनूपगढ़	अनूपगढ़, घड़साना, रायसिंहनगर
बीकानेर	लूणकरणसर, कोलायत
चूरू	रतनगढ़, सरदारशहर एवं चूरू
फलौदी	बाप
बाड़मेर	बाड़मेर
बांसवाड़ा	आनन्दपुरी बागीदौरा, छोटी सरवन, गरही, घाटौल, सज्जनगढ़, बांसवाड़ा
डूंगरपुर	आसपुर
प्रतापगढ़	पीपलखूंट
बारां	शाहबाद

आंतरिक अपवाह प्रणाली

1.	घग्घर नदी उपनाम–सरस्वती नदी, मृत नदी (कुल लम्बाई - 465 किमी., राजस्थान में 100 किमी.)	✧ **उद्गम**—शिवालिक श्रेणी (हिमाचल प्रदेश)। ✧ यह हनुमानगढ़ जिले में **टिब्बी तहसील** से प्रवेश करती है। ✧ **विलीन**—हनुमानगढ़ में विलीन, बाढ़ के समय पानी **फोर्ट अब्बास** (पाकिस्तान) तक जाता है। ✧ राजस्थान में अन्तः प्रवाह की सबसे बड़ी नदी। ✧ वैदिक कालीन 'सरस्वती' नदी के पेटे में बहाव। ✧ **नाली**—घग्घर नदी के पाट को **नाली** कहते हैं। ✧ यह राजस्थान में उत्तर दिशा से प्रवेश करती है। [VDO 2022]
2.	कान्तली नदी (100 किमी.)	✧ **उद्गम**—खण्डेला (सीकर) । ✧ **प्रवाह क्षेत्र**—सीकर, झुंझुनूं ✧ **विलीन**—चूरू सीमा पर मंडरेला (**झुंझुनूं**) में। ✧ **तोरावाटी बेसिन**—कान्तली नदी का अपवाह क्षेत्र। ✧ इसके किनारे सीकर जिले में **'गणेश्वर सभ्यता'** एवं लौहयुगीन पुरास्थल **'सुनारी'** (झुंझुनूं में) स्थित हैं। ✧ **शेखावटी क्षेत्र या उत्तर-पूर्वी राजस्थान** की सबसे बड़ी नदी।
3.	काकनी नदी [VDO 2022] उपनाम– मसूरदी, काकनेय	✧ **उद्गम**—जैसलमेर में कोटड़ी गाँव। ✧ लोद्रवा (जैसलमेर) इसके किनारे पर स्थित है। ✧ **विलीन**—बुझ झील (जैसलमेर)।
4.	साबी नदी [VDO 2022] (185 किमी.)	✧ **उद्गम**—सेवर की पहाड़ियाँ (जयपुर)। ✧ **प्रवाह क्षेत्र**—जयपुर, कोटपूतली-बहरोड़ व खैरथल-तिजारा। ✧ **विलीन**—पटौदी (हरियाणा)। ✧ मुगलकाल में यह नदी अलवर जिले में बाढ़ के लिए कुख्यात थी।
5.	मेंथा नदी (मंथा/मेढ़ा)	✧ **उद्गम**—मनोहरपुर (जयपुर)। ✧**विलय**—नागौर में सांभर झील में। ✧ **प्रवाह**—जयपुर एवं नागौर जिले में। ✧ प्रसिद्ध जैन तीर्थ **लूणवाँ (नागौर)** मेन्था नदी के किनारे ही स्थित है। ✧ **सहायक नदियाँ**—खण्डेला, खारी। ✧ सांभर झील में गिरने वाली सबसे लंबी नदी।
6.	रूपनगढ़	✧ अजमेर में सलेमाबाद से निकलकर सांभर झील में विलय। ✧ **सहायक नदी**—खारी। ✧ निम्बार्क 'सम्प्रदाय की प्रधानपीठ', **'सलेमाबाद'** (अजमेर) इसी नदी के किनारे स्थित है।
7.	रूपारेल उपनाम–वराह, लसवाड़ी	✧ अलवर में उदयनाथ पहाड़ी से निकलकर कुसलपुर (भरतपुर) के निकट लुप्त। ✧ भरतपुर में रूपारेल नदी पर सीकरी बाँध का निर्माण किया गया है। ✧ सीकरी बाँध से मोती झील (भरतपुर) को जलापूर्ति होती है।
8.	कुकुन्द नदी	✧ भरतपुर जिले में प्रवाहित इस नदी पर बयाना (भरतपुर) में **'बारेठा बाँध'** बनाया गया है। ✧ इसके समीपवर्ती इलाकों में बन्ध बारेठा अभयारण्य बनाया गया है।

अरब सागरीय अपवाह तंत्र

1.	लूनी नदी (लवणती/मरु आशा/सागरमती) (495 किमी.)	✧ **उद्गम**—नाग पहाड़ (पुष्कर, अजमेर) ✧ उद्गम स्थल पर नाम—सागरमती। ✧ गोविन्दगढ़ (अजमेर) के निकट सरस्वती/सरसुती नदी से मिलने के पश्चात यह नदी 'लूणी' कहलाती है। ✧ **बहाव क्षेत्र**—अजमेर, नागौर, ब्यावर, जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर, जालौर (कुल 7 जिलों में)। ✧ **सहायक नदियाँ**—जवाई, बांडी, लीलड़ी, मीठड़ी, सूकड़ी, सरस्वती, गुहिया, जोजड़ी, सागी, खारी। ✧ **जोजड़ी**—लूनी की एकमात्र सहायक नदी जो अरावली पर्वत से नहीं निकलती और लूनी में दायीं ओर से मिलती है। ✧ **बालोतरा**—लूनी नदी के पेटे से नीचे स्थित शहर, यहाँ से इसका पानी खारा हो जाता है। ✧ **अपवाह**—राजस्थान में सबसे बड़ा अपवाह क्षेत्र लूनी का है। (इसके अपवाह क्षेत्र में सिरोही भी सम्मिलित है।) ✧ जालौर में लूनी नदी के बाढ़ के जल को **रेल या नाड़ा** कहते हैं। ✧ **विलय**— राज्य में 330 किमी बहने के बाद कच्छ की खाड़ी (गुजरात) में विलय।
2.	जवाई नदी (96 किमी.)	✧ **उद्गम**—गोरिया गाँव, बाली तहसील (पाली) ✧ **बहाव क्षेत्र**—पाली, जालौर, बाड़मेर। ✧ **सहायक नदियाँ**—बांडी, सूकड़ी, खारी। ✧ **विलय**—बाड़मेर के गाँधव गाँव के निकट लूनी नदी में मिल जाती है। ✧ सिरोही एवं पाली जिलों की सीमा बनाती है। ✧ सुमेरपुर (पाली) के निकट **जवाई बाँध** बनाया गया है जो मारवाड़ का **अमृत सरोवर या सरोवर** कहलाता है।

- वर्ष 2002 की तुलना में 2019 की पशुगणना में संख्या व प्रतिशत की दृष्टि दोनों से सर्वाधिक वृद्धि **भैंस वंश** में हुई है।
- संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक वृद्धि—**भैंस** (7 लाख)
- प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक वृद्धि—**भैंस** (5.5%)
- संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक कमी—**भेड़ों** में (–12 लाख)
- प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक कमी—**गधों** में (–71.30%)
- 20वीं पशुगणना 2017 (2019) के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन – 568.01 लाख (5.68 करोड़) हैं।
- 2012 की तुलना में 2019 में कुल पशुधन में **1.66% कमी** हुई।
- राजस्थान में 2019 की गणना के अनुसार गौवंश व भैंसवंश को छोड़कर सभी पशुओं की संख्या में कमी आयी है।
- 2019 में गौवंश में 2012 की तुलना में 4.41% बढ़ा है।
- जबकि ऊँटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।
- वहीं मुर्गियों की संख्या में 82.23% की वृद्धि व खरगोश में 17.86 की वृद्धि हुई है।
- देश में बकरियों में राजस्थान का स्थान प्रथम है।
- राजस्थान देश में सबसे बड़ा ऊन उत्पादक राज्य है। **(40% ऊन) जोधपुर (सर्वाधिक)**, बीकानेर, नागौर प्रमुख ऊन उत्पादक जिले हैं।
- देश की सबसे बड़ी गौशाला—**पथमेड़ा, साँचौर (जालौर)** में स्थित है।
- राजस्थान राज्य पशुपालक कल्याण बोर्ड का गठन **13 अप्रैल, 2005** को किया गया।

भैंस

- राजस्थान में सर्वाधिक भैंसें—**जयपुर**, अलवर, सीकर।
- राजस्थान में न्यूनतम भैंसें—**जैसलमेर।**
- भारत में सर्वाधिक भैंसें—**उत्तर प्रदेश।**
- राजस्थान का स्थान—**दूसरा।**
- राजस्थान में 1951 के बाद से प्रत्येक पशुगणना में लगातार वृद्धि वाला एकमात्र पशु है।
- केन्द्रीय भैंस प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र, **वल्लभनगर (उदयपुर)** में स्थित है।
- भैंस प्रजनन फार्म—**वांकलिया (नागौर)** में स्थित है।

भैंस की नस्लें

नस्ल	प्राप्ति वाले जिले	विशेष विवरण
मुर्रा (खुण्डी)	अलवर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, भरतपुर	• राजस्थान में सर्वाधिक इसी नस्ल की भैसें हैं। यह सर्वश्रेष्ठ नस्ल भी है। • यह भैंस प्रतिदिन 10-12 कि.ग्रा. दूध देती है। (सर्वाधिक) • वसा की मात्रा 7-8%। • मूल स्थान—मोंटगुमरी (पाकिस्तान)
जाफराबादी	सिरोही, उदयपुर, झालावाड़, डूँगरपुर, जालौर	• मूल स्थान—काठियावाड़ (गुजरात)
मेहसाणी	जालौर, सिरोही, बाड़मेर	• मूल स्थान—मेहसाणा (गुजरात)। • सामान्य कद काठी, दूध–8-10 कि.
सूरती	उदयपुर व उसके आसपास का क्षेत्र	• मूल स्थान—गुजरात।

- **अन्य नस्लें**—भदावरी, नागपुरी, रथ।
- भदावरी नस्ल की भैंस के दूध में वसा की मात्रा सर्वाधिक होती है।

गौ वंश

- सर्वाधिक गौ-वंश—बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर।
- न्यूनतम गौ वंश—**धौलपुर**।
- भारत में सर्वाधिक गौवंश **पश्चिम बंगाल** में पाया जाता है।
- राजस्थान का गौवंश की दृष्टि से देश में **छठा स्थान** है।
- राजस्थान राज्य गौ सेवा आयोग का गठन **23 मार्च, 1995** को किया गया।
- राज्य का प्रथम गौवंश संवर्द्धन कार्य (वीर्य बैंक) बस्सी, जयपुर में है।

गौवंश की नस्ल

नस्ल	प्राप्ति वाले प्रमुख जिले	विशेष विवरण
राठी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर व चूरू के कुछ भाग।	• मूल स्थान–राठ क्षेत्र (उत्तर-पूर्वी राजस्थान) • लाल सिन्धी व साहिवाल की मिश्रित नस्ल। • दूध देने में अग्रणी। • **'राजस्थान की कामधेनु'** कहलाती है।
थारपारकर (थारी)	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, एवं जालोर का सांचोर क्षेत्र। (मुख्य पश्चिमी क्षेत्र)	• मूल स्थान—सिंध क्षेत्र व मालाणी क्षेत्र (बाड़मेर) एवं थारपारकर क्षेत्र (पाकिस्तान) • अधिक दूध उत्पादक नस्ल।
कांकरेज [VDO (Pre) 2021]	बाड़मेर, सांचोर (जालोर) व सिरोही, पाली, जोधपुर के कुछ भाग।	• मूल स्थान—कच्छ का रन (गुजरात)(नेहड़ क्षेत्र)। • मजबूत सींग, तेज चलने व बोझा ढोने वाले बैल। • अच्छी दुधारु गायें (5 से 9 किग्रा दूध प्रतिदिन)। • कठोर भूमि जोतने वाले बैल।
सांचौरी	सांचोर, सिरोही, उदयपुर, पाली।	• कांकरेज से मिलती जुलती।
नागौरी	नागौर, उ.पू. जोधपुर, नोखा (बीकानेर)।	• उत्पत्ति स्थल—सुहालक प्रदेश (नागौर)। • हल जोतने व दौड़ने में देश का प्रसिद्ध बैल। • टांगें पतली मजबूत, गायें दूध कम देती हैं।
गिर	अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बूँदी।	• मूल स्थान—गिरवन व काठियावाड़ (गुजरात)।

13 राजस्थान में वन, वनस्पति एवं वन्य जीव संरक्षण [Forest, Vegetation and Wildlife Conservation in Rajasthan]

(A) राजस्थान में वन

- ❖ वनों के विकास के लिए ब्रिटिश काल में प्रथम वन नीति की घोषणा 1894 ई. में की गई, जिसका उद्देश्य वन संरक्षण एवं राजस्व की प्राप्ति था।
- ❖ राजस्थान में स्वतंत्रता से पूर्व सर्वप्रथम 1910 ई. में जोधपुर रियासत में वन संरक्षण की योजना बनाई गयी थी।
- ❖ राजस्थान में सर्वप्रथम वन संरक्षण अधिनियम 1935 में अलवर रियासत ने बनाया था।
- ❖ सन् 1949 में राजस्थान में **वन विभाग** की स्थापना की गई।
- ❖ सन् 1949-50 ई. में राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र के **13%** भाग पर ही वन थे।
- ❖ स्वतंत्र भारत में भारत सरकार द्वारा पहली राष्ट्रीय वन नीति **1952** (12 मई, 1952) में बनाई गई थी, जिसके अनुसार देश के कुल भौतिक क्षेत्रफल के **33% भू-भाग** पर वन होना अनिवार्य है।
- ❖ केन्द्र द्वारा **वन संरक्षण अधिनियम-1980** को 25 अक्टूबर, 1980 से लागू किया गया। इसके तहत् वन भूमि में किसी भी गैर वानिकी कार्य की क्रियान्विति से पूर्व भारत सरकार की अनुमति आवश्यक की गई।
- ❖ भारतीय वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 को राजस्थान सरकार ने **1 सितम्बर, 1973** से लागू किया। इसके द्वारा राज्य में वन्य जीवों के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।
- ❖ 42वें संविधान संशोधन 1976 के द्वारा **'वन एवं वन्य जीव'** विषय को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची का विषय बना दिया गया।
- ❖ द्वितीय राष्ट्रीय वन नीति दिसम्बर, 1988 में लागू की गई।
- ❖ राजस्थान की प्रथम वन नीति **18 फरवरी, 2010** को जारी की गयी थी। इसके अनुसार राज्य के सम्पूर्ण भू-भाग के **20%** पर वन क्षेत्र का लक्ष्य रखा गया था।
- ❖ राजस्थान वन एवं पर्यावरण नीति घोषित करने वाला देश का पहला राज्य था।
- ❖ 4 मार्च, 2014 से राजस्थान वन (संशोधन) अधिनियम, 2014 को लागू किया गया है।
- ❖ वर्तमान में वन विभाग राजस्थान के वर्ष 2024-25 के प्रशासनिक प्रतिवेदन के अनुसार (31 मार्च, 2024 तक) राज्य में कुल अभिलेखित वन क्षेत्र 33014.00 वर्ग किमी. है जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.64% है। जिस में से भी **पूर्ण वनाच्छादित क्षेत्र मात्र 4.87%** है।

> **नोट**—वर्तमान में वन विभाग राजस्थान के वर्ष 2024-25 के प्रशासनिक प्रतिवेदन के अनुसार (दिसम्बर, 2024 तक/ISFR-2023 की रिपोर्ट अनुसार) राज्य में कुल अभिलेखित वन क्षेत्र 32869 वर्ग किमी. है। जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्रफल का **9.60%** है।

- ❖ राजस्थान उन चुनिन्दा राज्यों में से है, जिसमें वर्ष 1991 से लेकर अब तक वृक्षाच्छादित क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हुई है।
- ❖ भारत के कुल वनों का **3.10%** भाग राजस्थान में है।
- ❖ कुल अभिलेखित वन क्षेत्र की दृष्टि से राजस्थान का स्थान **15वाँ** है।

> **नोट**—भारत में कुल अभिलेखित वन क्षेत्र 8,27,357 वर्ग किमी. है जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 25.17% है। (ISFR-2023 के अनुसार)

- ❖ राजस्थान की प्राकृतिक संरचना के कारण यहाँ भारत के अन्य राज्यों की तुलना में वनों का विस्तार अपेक्षाकृत कम है।
- ❖ राज्य में वन क्षेत्रों का अपेक्षाकृत कम विस्तार का कारण यहाँ कम वर्षा होना, उच्च तापमान, मरुस्थली क्षेत्रों का अधिक विस्तार, अनियंत्रित पशुचारण तथा मानव द्वारा किया जाने वाला वनोन्मूलन है।

राजस्थान वन विभाग के अनुसार वनों के आंकड़े

- ❖ **दिसम्बर-2024** तक की स्थिति के अनुसार राज्य में कुल अभिलिखित वन क्षेत्र **33,014 वर्ग किमी.** है, जो कि राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का **9.64%** है। [स्रोत-आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2024-25]
- ❖ राजस्थान वन अधिनियम-1953 के प्रावधानों के अनुसार राज्य के वन क्षेत्र को वैधानिक दृष्टि से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है—**आरक्षित वन, रक्षित वन** एवं **अवर्गीकृत वन**। जो राज्य के कुल वन क्षेत्र का क्रमशः 36.95, 56.43 एवं 6.62% है। [स्रोत-आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2024-25]

वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण

राज्य में वानिकी विकास हेतु प्रयत्न (वानिकी योजनाएँ)

❖ **सामाजिक वानिकी कार्यक्रम**—1985-86 में सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान पूर्वी राजस्थान से शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वृक्षारोपण को बढ़ावा देना तथा ग्रामीणों को जलाऊ लकड़ी उपलब्ध कराना था। यह कार्यक्रम 1985-86 में पूर्वी राजस्थान के 15 जिलों में संचालित था। 1994-95 के बाद से 19 जिलों में संचालित है।

❖ **मरु वृक्षारोपण कार्यक्रम**—केन्द्र व राज्य के **75 : 25** की भागीदारी से **10** मरुस्थलीय जिलों में व्यापक वृक्षारोपण हेतु वर्ष 1978 में प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में अब तक सात चरणों में वानिकी विकास कार्यक्रम करवाए गए हैं।

❖ **अरावली वृक्षारोपण परियोजना**—यह योजना 1 अप्रैल, 1992 में प्रारम्भ हुई थी। यह योजना अरावली क्षेत्र के 10 गैर मरुस्थलीय जिलों (जयपुर, अलवर, नागौर, उदयपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़, झुंझुनूँ, पाली, सिरोही, सीकर) में जापान की सहायता से 31 मार्च, 2000 तक संचालित थी। वर्तमान में समाप्त हो गई है। **[VDO-09.07.2022]**
इसका उद्देश्य अरावली प्रदेश को हरा-भरा रखना, जल संसाधनों का संरक्षण (एनिकट निर्माण से) करना एवं भूमि कटाव व अवैध खनन रोकना है।

❖ **राष्ट्रीय बंबू (बाँस) मिशन**—यह 2006-07 में शुरू किया (11 जिलों से) तथा 2015-16 में इसका नाम बदलकर **राष्ट्रीय कृषि वानिकी एवं बाँस मिशन** कर दिया गया। इसका उद्देश्य बाँस की खेती को बढ़ावा देना है।

❖ **लव-कुश वाटिका**—राज्यों में **इको-टूरिज्म** को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक जिले में 2 लव-कुश वाटिका विकसित की जा रही है। इनमें मनोरंजन गतिविधियाँ, पैदल ट्रैक, जल निकाय, पक्षियों को देखने की सुविधा, जागरुकता साइन-बोर्ड, बेंचे इत्यादि सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

❖ **वन-धन योजना**—बजट 2015-16 के तहत, यह योजना 17 अगस्त, 2015 से प्रारम्भ की गई। इसका उद्देश्य वन क्षेत्र के निकट रहने वाले लोगों के विकास, उनकी वनों पर निर्भरता कम करने, रोजगार उपलब्ध कराने, वन्यजीव व वनों की सुरक्षा करना है।
यह योजना रणथम्भौर टाईगर रिजर्व, राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर, माउंट आबू, कुंभलगढ़ वन्य जीव अभयारण्य व जवाई कन्जर्वेशन रिजर्व में लागू की गयी है।
इस योजना का दूसरा चरण 2 अक्टुबर, 2021 से प्रारम्भ किया गया है। इस योजना के लिए उभरते राज्य के रूप में राजस्थान को प्रथम पुरस्कार मिला है।

❖ **हरित राजस्थान**—राज्य के सूखा के स्थान पर हरित राजस्थान बनाने के लिए सघन वृक्षारोपण के तहत यह योजना 18 जून, 2009 को शुरू हुई।

❖ **प्रोजेक्ट बोल्ड (Bamboo Oasis on Land in Drought)**—खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) ने सीमा सुरक्षा बल (BSF) के सहयोग से मरूस्थलीकरण को रोकने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए जुलाई 2021 में बोल्ड प्रोजेक्ट को लॉन्च किया। इसकी शुरूआत 4 जुलाई, 2021 को उदयपुर के निचला मांडवा गाँव से की गई थी। इसके तहत् तनोट मंदिर के पास ग्राम पंचायत की 2.5 लाख वर्गफिट भूमि पर बांस के पौधे लगाए गए हैं।

❖ **घर-घर औषधी योजना**—राजस्थान में औषधीय पौधों की विविधता व गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा इसे 1 अगस्त, 2021 से प्रारम्भ किया गया। इस योजना को 2021-22 से 2025-26 तक चलाया जायेगा। इसकी नोडल एजेंसी वन विभाग है। इस योजना के तहत् तुलसी, गिलोय, कालमेघ व अश्वगंधा के (प्रत्येक के 2-2) कुल 8 पौधों की एक किट प्रत्येक परिवार को निःशुल्क दी जा रही है।

❖ **राजस्थान वानिकी एव जैव विविधता परियोजना (फेज-I)**—यह योजना 2003 में प्रारम्भ हुई थी। 30 जून, 2010 तक राजस्थान के 18 जिलों में संचालित थी।
इसका द्वितीय चरण (फेज-II) अक्टूबर 2011 से प्रारम्भ हुआ। जो JICA जापान की आर्थिक सहायता से 10 मरुस्थलीय जिलों (सीकर, झुंझनूं, चुरू, नागौर, जोधपुर, पाली, जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर) व 5 गैर मरुस्थलीय जिलों (बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, भीलवाड़ा, जयपुर) एवं 7 वन्य जीव संरक्षित क्षेत्रों में 8 वर्ष के लिए (2011-12 से 2018-19 तक) वृक्षारोपण की योजना के रूप में क्रियान्वित किया गया।
इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य: साझा वन प्रबन्धन (JFM) के प्रक्रिया से वृक्षारोपण एवं जैव विविधता संरक्षण के कार्यों के द्वारा वनाच्छादित क्षेत्र में वृद्धि करना, जैव विविधता संरक्षित करना तथा वनों पर निर्भर जन समुदाय के आजीविका के अवसरों को बढ़ाकर प्रदेश के पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक व आर्थिक विकास में योगदान देना है।

नोट—JICA–Japan International Cooperation Agency.

❖ **राजस्थान वानिकी एव जैव विविधता परियोजना (फेज-II)** के दौरान 2 नवीन परियोजना प्रारंभ की गयी है, जो निम्न है—

1. **RABCP (Rajasthan Afforestation and Biodiversity Conservation Project)**—यह जापान (JICA) की सहायता से राजस्थान के 19 जिलों में संचालित है। इसका उद्देश्य वनरोपण, जैव विविधता संरक्षण एवं स्थानीय भागीदारी से पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाते हुए आजीविका में सुधार करना है। जिससे राजस्थान में सतत् सामाजिकट-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले।
2. **RFBDP (Rajasthan Forestry and Biodiversity Development Project)** (राजस्थान वानिकी और जैव विविधता विकास परियोजना)—यह परियोजना AFD (Agence Fraence Development) फ्रांस की वित्तीय सहायता से राजस्थान के 13 जिलों में क्रियान्वित की जा रही है। यह परियोजना 2023-24 से 8 वर्ष के लिए 2030-31 तक स्वीकृत की गई है। इसमें राज्य व AFD की भागीदारी 30 : 70 प्रतिशत है।

❖ **ट्री आउटसाइड फॉरेस्ट राजस्थान (T.O.F.R.)**—राजस्थान को हरित प्रदेश बनाने की दिशा में 'राजस्थान ग्रीनिंग एण्ड रीवाईल्डिंग मिशन' के तहत् वनस्पति आवरण को बढ़ाने और वन क्षेत्रों के बाहर हरियाली बढ़ाने के लिए वर्ष 2023-24 में यह नवीन योजना संचालित की गयी है।
इसके तहत् प्रदेश में विभिन्न विभागों और संस्थाओं और नागरिकों के सहयोग से वन क्षेत्र के बाहर प्रतिवर्ष 5 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इनमें से 1 करोड़ पौधे गौचर, ओरण तथा चारागाह, 1 करोड़ पौधे विभिन्न शहरी क्षेत्रों में तथा 3 करोड़ पौधे जन-साधारण को खेतों व घरों में लगाने के लिए आवंटित किये गये हैं।

राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति 2023

- ❖ बजट 2023-24 की अनुपालना में सरकार ने 16 सितम्बर, 2023 को ''राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2023'' को मंजूरी देकर 29 सितंबर, 2023 को जारी की गई।
- ❖ इस नीति के तहत 2030 तक हर साल 2 मिलियन टन (2 KTPA) हरित हाइड्रोजन बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

नोट—जबकि केंन्द्र सरकार की ओर से राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मी 2022 में वर्ष 2030 तक 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन का उत्पा करने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य में ऊर्जा की अधिष्ठापित उत्पादन क्षमता (मार्च 2024 तक)

क्र.सं.	विवरण	2023-24	2024-25
1. राज्य की स्वयं/भागीदारी की परियोजनाएँ			
(अ)	तापीय	7830.00	7830.00
(ब)	जल विद्युत	1017.29	1017.29
(स)	गैस	600.50	600.50
	योग (1)	**9447.79**	**9447.79**
2. केन्द्रीय परियोजनाओं से राज्य को आवंटित			
(अ)	तापीय	1916.37	1916.37
(ब)	जल विद्युत	740.66	740.66
(स)	गैस	0.00*	0.00
(द)	परमाणु	456.74	456.74
	योग (2)	**3113.77**	**3113.77**

क्र.सं.	विवरण	2023-24	2024-25
3. आरआरईसी, आरएसएमएमएल एवं निजी क्षेत्र पवन ऊर्जा/बायोमास/सौर ऊर्जा परियोजनाएँ			
(अ)	पवन	4359.63	4414.12
(ब)	बायोमास	109.95	124.85
(स)	सौर ऊर्जा (कुसुम पीपए के साथ)	4010.0	5482.66
(द)	तापीय/जल विद्युत	3742.00	3742.00
	योग (3)	12222.08	13763.63
	सकल योग (1+2+3)	**24783.64**	**26325.19**

- ❖ 22 मार्च, 2021 को जारी विद्युत मंत्रालय के दिशा-निर्देश के मद्देन उच्च खरीद लागत के कारण एनटीपीसी से 221 मेगावाट गैस बिजली का आवंटन वापस कर दिया गया था।

ऊर्जा संसाधनों (स्रोतों) का वर्गीकरण

परम्परा के आधार पर

- **परम्परागत** — ऊर्जा के वे स्रोत, जिनका उपयोग प्राचीन समय से ही करते आ रहे है, जैसे
  - कोयल
  - खनिज तेल (पेट्रोलियम)
  - प्राकृतिक गैस
  - जल विद्युत
  - परमाणु ऊर्जा
- **गैर परम्परागत** — वे स्रोत जिनका उपयोग निकट भूतकाल में ही प्रारंभ हुआ है तथा ये सतत् प्राप्त होते रहने वाले स्रोत है, जैसे
  - सौर ऊर्जा
  - पवन ऊर्जा
  - भू-तापीय ऊर्जा
  - ज्वारीय ऊर्जा
  - बायोगैस, बायोमास

नवीनकरण के आधार पर

- **नव्यकरणीय/असमाप्य** — वे स्रोत जो प्राकृतिक रूप से लगातार उपलब्ध रहते हैं और कभी खत्म नहीं होते हैं अर्थात् जिनकी उपलब्धता पर्याप्त है और जिनका नवीनीकरण हो सके। जैसे-
  - सौर ऊर्जा
  - पवन ऊर्जा
  - जल विद्युत
  - भूतापीय
  - ज्वारीय ऊर्जा
  - बायोगैस, बायोमास
- **अनवीकरणीय/समाप्य** — वे स्रोत, जो सीमित मात्रा में होते है, जिन्हें मानव अपने जीवन में पुनः नहीं बना सकता या जिनका भंडार प्राकृतिक रूप से जल्दी से पुनः प्राप्त नहीं होता। जैसे-
  - कोयला
  - पेट्रोलियम
  - प्राकृतिक गैस
  - यूरेनियम

✧ इसमें 896 MW क्षमता चालू कर दी गई है।

(3) नोखा सोलर पार्क (925 MW), फलौदी

✧ **विकसित**—राज. सोलर पार्क डवलपमेंट कम्पनी (RSDCL)) द्वारा।

✧ इसमें 190 MW क्षमता चालू कर दी गई है।

✧ इसके लिए NTPC व RSDCL के मध्य फरवरी, 2020 में समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए।

(4) पूगल सोलर पार्क (2450 MW), बीकानेर

✧ **विकसित—RSDCL** द्वारा।

✧ इस परियोजना को तीन चरणों में विकसित किया जाएगा। जिसमें दो चरणों में 1000 MW प्रत्येक में और एक चरण में 450 MW की क्षमता होगी।

(5) बोडाना सोलर पार्क (2000 MW), जैसलमेर

✧ **विकसित—RSDCL** द्वारा।

❖ **नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार की सोलर पार्क एवं अल्ट्रामेगा सोलर प्रोजेक्ट योजना के अंतर्गत राज्य में चार सोलर पार्क निर्माणाधीन है—**

(1) मेगा अक्षय ऊर्जा पार्क (10000 MW) — **राजस्थान में।**

(2) बीकानेर सौर ऊर्जा (1000 MW) — **बीकानेर में।**

(3) धीरूभाई अम्बानी सोलर पार्क — **धुड़सर, जैसलमेर में।**

(4) देवीकोट सोलर पॉवर प्लांट (180 MW) — **जैसलमेर में।**

> **नोट—सीज (SEEZ)** – राजस्थान में सौर ऊर्जा के विकास के लिए सोलर एनर्जी एंटरप्राइजेज (SEEZ) की स्थापना की गई है। ऐसे क्षेत्र जहाँ सौर ऊर्जा के उत्पादन की सभी परिस्थितियाँ अनुकूल हो, वह क्षेत्र **'सोलर एनर्जी एंटरप्राइजेज जोन'** (सीज) कहलाता है। राजस्थान में जोधपुर, जैसलमेर एवं बाड़मेर क्षेत्र को मिलाकर **'सीज'** की संज्ञा दी गई है।

प्रमुख सौर परियोजनाएँ

इन्टीग्रेटेड सोलर कम्बाइड साइकिल पॉवर प्रोजेक्ट, मथानिया (जोधपुर)

❖ यह देश की प्रथम सौर ऊर्जा परियोजना है।

❖ यह प्रोजेक्ट मथानिया (जोधपुर) में जर्मनी, विश्व बैंक एवं भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से स्थापित है। इसका संचालन **'राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम'** द्वारा किया जाता है।

❖ इसकी कुल उत्पादन क्षमता **140 MW** है।

❖ इससे सर्वप्रथम ऊर्जा का उत्पादन 2004 में हुआ था।

❖ इसमें विद्युत उत्पादन सौर ऊर्जा, नेफ्था एवं गैस टरबाइन से निकलने वाली भाप से होता है।

गौरीर सोलर फोटो वोल्टेइक परियोजना, झुंझुनूं

❖ इसके तहत राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम द्वारा 100 KW का सोलर फोटो वोल्टेइक आधारित ग्रिड इंटर एक्टिव सौर ऊर्जा संयंत्र गौरीर, झुंझुनूं में स्थापित किया गया है।

❖ इससे विद्युत उत्पादन 2004 में शुरु हुआ।

अगोरिया सोलर पॉवर प्रोजेक्ट, बाड़मेर

❖ इसके तहत अगोरिया गाँव, बाड़मेर में 50 MW का प्रोजेक्ट मैसर्स सनसोर्स इंडिया लिमिटेड, अहमदाबाद के द्वारा लगाया गया है।

मोकला सोलर पॉवर प्रोजेक्ट, जैसलमेर

❖ इस प्रोजेक्ट के तहत मैसर्स एमको एनरोन सोलर पॉवर डवलपमेंट लिमिटेड

गया है।

खींवसर सौर ऊर्जा परियोजना, नागौर

❖ इसके तहत रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा 5 M खींवसर, नागौर में 2010 में स्थापित किया गय

❖ राजस्थान में यह उस समय की निजी क्षेत्र की स MW) परियोजना थी।

धूनिया सोलर एनर्जी प्रोजेक्ट, जोधपुर

❖ यह धूनिया, जोधपुर में 5 MW क्षमता का प्लांट मुम्बई द्वारा स्थापित किया गया।

बरसिंहसर सौर ऊर्जा परियोजना, बीकानेर

❖ कुल क्षमता – 300 MW की।

❖ हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इसकी अ

फागी सौर ऊर्जा परियोजना, जयपुर

❖ नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरव के तहत 1 MW क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र फाग में स्थापित किया गया।

> **नोट—**
>
> ❖ राज्य का पहला खारे पानी को मीठा करने का सौ भालेरी गाँव, **चूरू** में स्थापित किया गया।
>
> ❖ **उदयपुर** की पिछोला झील में **विश्व की पहली नाव** चलाई गई।
>
> ❖ **नया गाँव (जयपुर)** राज्य का प्रथम **सौर ऊर्ज**
>
> ❖ **बालेसर (जोधपुर)** में राज्य का पहला सौर लगाया गया।
>
> ❖ **मनोहरपुरा (जयपुर)** में राज्य का पहला सौर लगाया गया।
>
> ❖ प्रथम सौर ऊर्जा विद्युतीकृत शहर **जैसलमेर** है।
>
> ❖ राज्य का पहला गाँव जहाँ सौर ऊर्जा का प्रयोग किया
>
> ❖ राजस्थान का प्रथम सोलर पार्क– **भड़ला (फ**
>
> ❖ राजस्थान का प्रथम सौर ऊर्जा संयंत्र – **मथानि**
>
> ❖ राजस्थान अक्ष ऊर्जा निगम द्वारा संचालित प्रधान योजना के तहत देश के पहले कृषि आधारित सौर **भालोजी, कोटपुतली–बहरोड़** में की गई है।
>
> ❖ सोलर सिटी कार्यक्रम के तहत राजस्थान के **जयए** शहर को **'सोलर सिटी'** घोषित किया गया है
>
> ❖ राजस्थान में सबसे ज्यादा सौर ऊर्जा संयंत्र **जैसल**

> **राजस्थान में सौर ऊर्जा उत्पादन के**
>
> ❖ **जैसलमेर** – धूड़सर, फतेहगढ़, दहानु, नेड़ान, स लावण, पुरोहितसर, पोकरण।
>
> ❖ **बीकानेर** – बरसिंहसर, पूगल, गजनेर, भैरूखे
>
> ❖ **फलौदी** – भड़ला, नोख, फलौदी, नागणेचीन
>
> ❖ **बाड़मेर** – अगोरिया
>
> ❖ **नागौर** – खींवसर
>
> ❖ **झुंझुनूं** – गौरीर
>
> ❖ **जयपुर** – फागी, सांभर, सिरसी।

राज्य में कृषि जोत का आकार

- राजस्थान में कृषि जोत का औसत आकार **2.73 हेक्टेयर** है।

नोट—भारत में कृषि जोतों का औसत आकार 1.08 हेक्टेयर है।

- राजस्थान में कृषि गणना 2015-16 के अनुसार कुल प्रचालित कृषि जोतों की संख्या 76.55 लाख है। जबकि वर्ष 2010-11 में यह 68.88 लाख थी, अर्थात् भूमि जोतों की संख्या में 11.14% की **वृद्धि** हुई है।
- वर्ष 2010-11 में कुल जोतों का क्षेत्रफल 211.36 लाख हेक्टेयर था, जो वर्ष 2015-16 में घटकर 208.73 लाख हेक्टेयर हो गया। अर्थात् जोतों के कुल क्षेत्रफल में 1.24% की **कमी** हुई है।
- राज्य में सीमान्त, लघु, मध्यम एवं बड़े आकार की वर्गीकृत जोत, कुल जोतों का क्रमशः 40.12%, 21.90%, 14.79% एवं 4.69% है।
- कुल कृषि जोतों में महिला प्रचलित कृषि जोतों की संख्या **7.75 लाख** है। वहीं पुरुष प्रचालित कृषि जोतों की संख्या 68.66 लाख है।

कृषि संबंधी नवीनतम आंकड़े

- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक हैं। इस क्षेत्र का प्रचलित कीमतों पर वर्ष 2024-25 में राज्य के सकल राज्य मूल्य वर्धन (जी.एस.वी.ए.) में **26.92** प्रतिशत का योगदान है, जो कि इस क्षेत्र के अखिल भारतीय योगदान 17.77 प्रतिशत से अधिक है।
- स्थिर और प्रचलित कीमतों पर कृषि और संबद्ध क्षेत्र के जी.वी.ए. में निरंतर वृद्धि हुई है। यह वर्ष 2011-12 के ₹1.19 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2024-25 में **₹2.18 लाख करोड़** हो गया, जो स्थिर (2011-12) कीमतों पर 4.76 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सी.ए.जी.आर.) को दर्शाता है।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का **सकल मूल्य वर्धन (जी.वी.ए.)** वर्ष 2020-21 के **₹1.87 लाख करोड़** से बढ़कर वर्ष 2024-25 में **₹2.18 लाख करोड़** हो गया, जो स्थिर (2011-12) कीमतों पर 3.94 प्रतिशत की वृद्धि (सी.ए.जी.आर.) को दर्शाता है। जबकि प्रचलित कीमतों पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का जी.वी.ए. वर्ष 2020-21 के **₹2.93 लाख करोड़** से बढ़कर वर्ष 2024-25 में ₹4.23 लाख करोड़ हो गया, जो कि 9.64 प्रतिशत सी.ए.जी.आर की वृद्धि को दर्शाता है।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों के उप-क्षेत्रों में **फसलें, पशुधन, मत्स्य, वानिकी** शामिल हैं।
- वृद्धि के संदर्भ में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र में स्थिर (2011-12) कीमतों पर वर्ष 2024-25 में वर्ष 2023-24 की तुलना में **5.05 प्रतिशत** की वृद्धि दर प्राप्त हुई है।
- फसल, पशुधन, वानिकी एवं मत्स्य क्षेत्र में क्रमशः 4.73 प्रतिशत, 5.43 प्रतिशत, 3.76 प्रतिशत एवं 25.89 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है।
- वर्ष 2024-25 में फसल क्षेत्र का सकल मूल्य वर्धन प्रचलित कीमतों पर ₹1.95 लाख करोड़ रहा है।

- राज्य में खरीफ फसलों है जबकि रबी फसल प्रमुख योगदान रहा है
- राजस्थान की अर्थव्यव (सकल राज्य मूल्य व 2024-25 अनुसार)—
- **फसल क्षेत्र में**
  - स्थिर मूल्यों (2
  - प्रचलित मूल्यों
- **पशुधन क्षेत्र में**
  - स्थिर मूल्यों (2
  - प्रचलित मूल्यों
- **वानिकी क्षेत्र में**
  - स्थिर मूल्यों (2
  - प्रचलित मूल्यों
- **मतस्य क्षेत्र में**
  - स्थिर मूल्यों (20
  - प्रचलित मूल्यों
- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र पशुधन, वानिकी एवं
- वर्ष 2024-25 में फस 46.77%, वानिकी क्षे 0.51% है।
- वर्ष 2024-25 में पशु कीमतों पर 1.98 लाख है। पशुधन क्षेत्र की
- वर्ष 2023-24 में राज्य हेक्टेयर है, जिसमें से
- **Rajassthan Agric** 2022-23 के कृषि स
  - राजस्थान में कृषि **बाड़मेर** में एवं
  - राजस्थान में सर्वा एवं न्यूनतम सिं
  - राज्य में जिले वे सिंचित प्रतिशत वाला **चूरू** (18
  - राजस्थान में फस (प्रथम) एवं गेहूँ
  - खाद्यान्न फसलों
  - समग्र फलों की का है।

3	67.75	63.98	56.66
	3.15	3.63	4.40
	27.76	26.21	18.45

तिलहन, **पोषक–अनाज** और **ग्वार फसलों** के उत्पादन में **प्रथम स्थान**, **मूंगफली** के उत्पादन में **द्वितीय स्थान** तथा **ज्वार**, **चना**, **कुल दलहन** एवं **सोयाबीन** के उत्पादन में **तृतीय स्थान** पर रहा है।

प्रमुख फसलों के उत्पादन में राजस्थान का स्थान

क्र. सं.	फसल	स्थान	राजस्थान का देश के कुल उत्पादन में योगदान (% में)
1.	राई एवं सरसों	प्रथम	46.13
2.	बाजरा	प्रथम	44.66
3.	कुल तिलहन	प्रथम	22.78
4.	पोषक अनाज	प्रथम	15.66
5.	ग्वार	प्रथम	90.36
6.	मूंगफली	द्वितीय	18.76
7.	ज्वार	तृतीय	14.87
8.	चना	तृतीय	14.75
9.	कुल दलहन	तृतीय	13.88
10.	सोयाबीन	तृतीय	8.05

राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश

- योजना आयोग तथा राष्ट्रीय दूर संवेदन एजेन्सी ने कृषि नियोजन तथा विकास की दृष्टि से देश को **15** कृषि जलवायु विषयक प्रदेशों में बांटा है।
- इस विभाजन का आधार प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं को माना है।
- भारत के इन जलवायु प्रदेशों में राजस्थान मुख्यतया **दो** कृषि जलवायु प्रदेश **अरावली–मालवा पठारी प्रदेश** (8वाँ) एवं **पश्चिमी राजस्थान प्रदेश** (14वाँ) के अंतर्गत आता है।

नोट—उत्तरी राजस्थान का कुछ हिस्सा ट्रांस गंगा मैदानी क्षेत्र (6वाँ) में भी आता है।

- राज्य सरकार ने भी कृषि विकास का आधार कृषि जलवायु प्रदेशों को स्वीकार किया है।
- राजस्थान को जलवायु के आधार पर 10 कृषि जलवायु प्रदेशों में बांटा गया। ये प्रदेश जलवायु, मिट्टी का प्रकार, फसल पैटर्न आदि के आधार पर भी परिभाषित किये जाते है।

राजस्थान के कृषि जलवायु क्षेत्र

क्र. सं.	जलवायु खण्ड का नाम	जलवायु खंड	जिलों के नाम	औसत वर्षा	कुल क्षेत्रफल (लाख हैक्टे.)	प्रमुख कृषि उपजें	कृषि अनुसंधान केन्द्र (ARS)-11	ग्राह्य परीक्ष... केन्द्र (ATC)-1...
1.	शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	IA	जोधपुर, फलौदी, बाड़मेर व बालोतरा	20-37 सेमी	47.4	बाजरा, मोठ, तिल, गेहूँ, सरसों, जीरा	कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर (जोधपुर)	रामपुरा (जोधपुर)
2.	उत्तर पश्चिमी सिंचित मैदानी क्षेत्र	IB	श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़	10-35 सेमी	21.0	कपास, ग्वार, गेहूँ, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र गंगानगर	श्रीकरणपुर एवं हनुमानगढ़
3.	अति शुष्क एवं आंशिक सिंचित पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	IC	बीकानेर, जैसलमेर एवं चूरू आंशिक (रतनगढ़, सरदार शहर, बीदासर व सुजानगढ़ तहसीलें)	10-35 सेमी	**77.0 सबसे बड़ा**	बाजरा, मोठ, ग्वार, गेहूँ, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र बीछवाल (बीकानेर)	लूणकरणसर, बीकानेर
4.	अंतः स्थलीय जलोत्सरण के अंत:वर्ती मैदानी क्षेत्र	IIA	सीकर, चूरू, (रतनगढ़, सरदार शहर, बीदासर एवं सुजानगढ़ तहसीलें छोड़कर), झुंझुनूं, नागौर एवं डीडवाना-कुचमान	30-50 सेमी	36.9	बाजरा, ग्वार, दालें, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र फतेहपुर (सीकर)	आबूसर, झुंझुनूं
5.	लूनी नदी का अंत:वर्ती मैदानी क्षेत्र	IIB	जालौर, पाली, सिरोही (पिंडवाड़ा, आबू रोड़ तहसीलें छोड़कर) एवं ब्यावर आंशिक (जैतारण व रायपुर तहसीलें)	30-50 सेमी	30.0	बाजरा, ग्वार, तिल, गेहूँ, सरसों	कृषि अनुसंधान केन्द्र केशवाना (जालौर)	सुमेरपुर, पाली
6.	अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र	IIIA	जयपुर, अजमेर, दौसा, टोंक, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़ एवं ब्यावर (जैतारण व रायपुर तहसीलें छोड़कर)	50-70 सेमी	29.6	बाजरा, ग्वार, ज्वार, गेहूँ, सरसों, चना	राजस्थान कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा (जयपुर)	तबीजी, अजमेर
7.	बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र	IIIB	अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली व सवाई माधोपुर	50-90 सेमी	27.7	बाजरा, ग्वार, मूँगफली, गेहूँ, जौ, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र नवगाँव (अलवर)	मलिकपुर, भरतपुर
8.	अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र एवं अरावली पहाड़ी क्षेत्र	IVA	उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (बड़ी सादड़ी तहसील छोड़कर) राजसमंद, भीलवाड़ा एवं सिरोही आंशिक (पिंडवाड़ा व आबूरोड़ तहसील)	50-90 सेमी	33.6	मक्का, दालें, ज्वार, गेहूँ, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र, उदयपुर	चित्तौड़गढ़
9.	आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र	IVB	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, सलूम्बर एवं चित्तौड़गढ़ (बड़ी सादड़ी तहसील)	50-110 सेमी	**17.2 सबसे छोटा**	मक्का, ज्वार, चावल, उड़द, गेहूँ, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र, बोरवट (बांसवाड़ा)	**कोई ATC कार्यरत नहीं है**
10.	आर्द्र दक्षिणी पूर्वी मैदानी क्षेत्र	V	कोटा, बारां, बूंदी एवं झालावाड़	65-110 सेमी	27.0	ज्वार, सोयाबीन, गेहूँ	कृषि अनुसंधान केन्द्र [illegible]	छत्रपुरा, बूंदी

राजस्थान में महत्त्वपूर्ण फसलें : एक नजर में

फसल	सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला 2021–22	सर्वाधिक उत्पादन वाला जिला	विशेष विवरण
बाजरा	बाड़मेर जोधपुर	बाड़मेर अलवर	❖ राज्य के 1/4 कृषि क्षेत्र में बोई जाती है। ❖ राज्य का उत्पादन व क्षेत्रफल दोनों में **देश में प्रथम स्थान**
चावल	बूँदी हनुमानगढ़	बूँदी हनुमानगढ़	❖ बूँदी, हनुमानगढ़, गंगानगर, बाराँ व कोटा मुख्य उत्पादक
गेहूँ	गंगानगर हनुमानगढ़	हनुमानगढ़ गंगानगर	❖ राजस्थान का देश में सर्वाधिक उत्पादन में पांचवा स्थान।
मक्का	उदयपुर	चित्तौड़गढ़	❖ किस्में—माही कंचन, माही धवल, सविता।
ज्वार	अजमेर	अजमेर	❖ उत्पादन में देश में तीसरा स्थान। (सर्वाधिक-महाराष्ट्र)
जौ	गंगानगर	गंगानगर	❖ उत्पादन व क्षेत्रफल में देश में तीसरा स्थान।
कुल अनाज	बाड़मेर	अलवर	❖ क्षेत्रफल में तीसरा, उत्पादन में सातवाँ स्थान। (सर्वाधिक उत्पाद
मोठ	बीकानेर	बाड़मेर	❖ राज्य में दलहनी फसलों में सर्वाधिक क्षेत्रफल, बीकानेरी भुजिय
चना	चूरू	अजमेर	❖ उत्पादन में राजस्थान का देश में तीसरा स्थान।
मूँग	नागौर	नागौर	❖ मूँग का स्थानीय नाम 'हरिया'।
उड़द	बूँदी	बूँदी	❖ **भूमि की उर्वरता** बढ़ाती है।
चँवला	झुँझुनूँ	झुँझुनूँ	❖ इसे चौला भी कहते हैं।
अरहर (तुर)	बाँसवाड़ा	बाँसवाड़ा	❖ स्थानीय नाम **'आरैड़'** है।
मसूर	झालावाड़	झालावाड़	❖ रबी की एक दलहन फसल।
कुल दलहन	चूरू	नागौर	❖ दलहन उत्पादन में राज्य का **तृतीय** स्थान।
कुल खाद्यान्न	जयपुर	जयपुर	❖ खाद्यान्न में अनाज व दाल दोनों के उत्पादन के आंकड़े श
मूँगफली	बीकानेर	बीकानेर	❖ मूँगफली उत्पादन के कारण लूणकरणसर **राजस्थान का**
राई व सरसों	टोंक गंगानगर	टोंक अलवर	❖ राजस्थान का देश में **प्रथम स्थान** ❖ भरतपुर सरसों तेल उद्योग का केन्द्र है।
तिल	पाली	पाली	❖ राज्य का उत्पादन में पाँचवाँ स्थान।
अलसी	प्रतापगढ़	प्रतापगढ़	❖ भारत का विश्व में तीसरा स्थान।
तारामीरा	जयपुर	जयपुर	❖ मावठ होने पर यह फसल विशेषतः बोई जाती है। ❖ स्थानीय नाम **गंदिया, पापड़ा, दुवां, सोंधा, उषान।**

राजस्थान की प्रमुख फसलों की विभिन्न किस्में

फसल	किस्में
गेहूँ	❖ **सोनालिका, सोना कल्याण**, मैक्सिकन, लाल बहादुर, **खार्चिया-65**, कोहिनूर, मंगला, राज. 3077, राज. 1555 (काठिया गेहूँ)
चावल	❖ **माही सुगंधा**, बासमती, परमल, कावेरी, चम्बल। [VDO 2022]
मक्का	❖ **माही धवल, माही कंचन**, मोती कम्पोजिट, सविता, मेघा (व्याख्याता-2013)
ज्वार	❖ **राजस्थान चरी** 1/2/3,C.S.V.-10, S.V.P-245, S.P.-96
ग्वार	❖ दुर्गाविहार, दुर्गापुरा सफेद, दुर्गा जय, आर.जी.सी. 197/471/936/986
कपास	❖ **नरमा, बीकानेरी**, गंगानगर अगेती, वराह लक्ष्मी, वीरनार।
जौ	❖ **ज्योति, राजकिरण**, मोल्वा।
चना	❖ **सम्राट**, GNG-116, RS-11
सरसों	❖ **वरुणा**, दुर्गामणि, पूसा कल्याणी, R.H.-819
सोयाबीन	❖ **गौरव**, पूसा-16, पंजाब-1, T-1
मोठ	❖ **जड़िया**, ज्वाला।
जीरा	❖ **दुर्गापुरा आर.एस.ओ.-40 केसर** (IEO-18), आर जेड-19, आर जेड-209, आर जेड-223, जीसी-4
किन्नू	❖ **डब्ल्यू मर्कट।**
टमाटर	❖ **रश्मि, अजंता, रूपाली, रेशमा**
खरबूजा	❖ **दुर्गापुरा मधु**
तरबूज	❖ दुर्गापुरा मीठा, दुर्गापुरा केसर
ईसबगोल	❖ आर.आई.-89, गुजरात-2, ट्राम्बे सलेक्सन
खजूर	❖ **बरही**, खुनेजी, सेवी, खदरावी, अलअजवा, मेढ़जूल
धनिया	❖ कर्ण (आ.सी.आर.-41), यू.डी. 435/436, हिसार सुगंध, पंत हरितमा, **कुंभराज**
मैथी	❖ आरएमटी-1
सौंफ	[illegible].एफ.-101

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (N.F.S.M.)

❖ केन्द्रीय सरकार द्वारा केन्द्र प्रवर्तित योजना के रूप में वर्ष 2007-08 से राज्य में गेहूँ एवं दलहन के उत्पादन में वृद्धि हेतु इसे प्रारम्भ किया गया था। अब इसमें मोटे अनाज, कपास, पटसन व गन्ना को भी शामिल किया गया है। केन्द्रीयांश एवं राज्यांश का वित्त पोषण अनुपात 60 : 40 है।

❖ गेहूँ एवं दहलन पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन.एफ.एस.एम.) के अन्तर्गत प्रमाणित बीजों का वितरण, उन्नत उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन, जैविक खाद, सूक्ष्य तत्वों, जिप्सम, समन्वित कीट प्रबन्धन (आई.पी.एम.), कृषि यंत्रों, फव्वारा, पम्प सैट, सिंचाई जल हेतु पाइप लाईन एवं फसल तंत्र आधारित प्रशिक्षण द्वारा किसानों को सहयोग देना आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

❖ राज्य में गेहूँ के लिए 14 जिलों यथा बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, बीकानेर, जयपुर, झुन्झुनूं, जोधपुर, करौली, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, सीकर, टोंक एवं उदयपुर में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन को लागू किया गया है।

❖ राज्य में मोटा अनाज मक्का के लिए 5 जिलों यथा बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर तथा उदयपुर में एन.एफ.एस.एम. क्रियान्वित किया जा रहा है। मोटा अनाज जौ के लिए 7 जिलों यथा अजमेर, भीलवाड़ा, हनुमानगढ़, जयपुर, नागौर, श्रीगंगानगर तथा सीकर में एन.एफ.एस.एम. क्रियान्वित किया जा रहा है।

❖ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन न्यूट्रिसीरियल योजना एक केन्द्रीय प्रवर्तित योजना के रूप में राज्य में वर्ष 2018-19 में प्रारम्भ किया गया है। इस योजना में प्रमाणित बीज का वितरण एवं उत्पादन, उत्पादन तकनीक में सुधार का प्रदर्शन, जैव उर्वरकों को बढ़ावा देना, सूक्ष्म तत्वों का प्रयोग, समन्वित कीट प्रबन्धन और फसल प्रदर्शन पर किसानों को प्रशिक्षण देना है। इस योजना में चयनित जिलों में भारत सरकार द्वारा ज्वार फसल हेतु राज्य के 10 जिले व बाजरा फसल के लिए 21 जिले सम्मिलित किये गये है।

2 कृषि आधारित उद्योग [Agriculture Base Industry]

❖ स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से भारत का एक पिछड़ा हुआ राज्य था, किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् योजनाबद्ध विकास के चलते यहाँ औद्योगिक विकास को नई दिशा प्राप्त हुई है।

❖ राज्य में उद्योग विकास हेतु वर्तमान में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अधीन **36 जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र तथा 8 उपकेन्द्र** कार्यरत हैं।

❖ कृषि क्षेत्र में फसल, पशुपालन, वानिकी तथा मत्स्य क्षेत्र सम्मिलित होते हैं-राज्य में कृषि आधारित उद्योगों में सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, वनस्पति घी उद्योग, ऊन उद्योग, तेल उद्योग, डेयरी उद्योग, रेशम उद्योग, गुड़-खांडसरी व चीनी उद्योग, अचार-मुरब्बा, दाल मिल, बेकरी उद्योग आदि प्रमुख उद्योग हैं। इसके अलावा कुछ और उद्योग जैसे पाली का मेंहदी उद्योग, बांसवाड़ा का आम पापड़ उद्योग, बीकानेर का पापड़-भुजिया, जोधपुर-नागौर क्षेत्र का मेथी उद्योग, झालावाड़-गंगानगर का रसदार फल उद्योग आदि भी इस श्रेणी में आने वाले प्रमुख उद्योग हैं।

❖ राज्य के **अलवर, जोधपुर, कोटा** एवं **श्रीगंगानगर** में एग्रो फूड पार्क स्थापित किये गये हैं।

राजस्थान में कृषि आधारित उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग

❖ सूती वस्त्र उद्योग **राजस्थान का सबसे प्राचीन व संगठित उद्योग** है।

❖ राजस्थान निर्माण के समय (1951 में) 7 सूती वस्त्र मिलें स्थापित थीं जबकि वर्तमान में राज्य में 23 सूती वस्त्र मिलें स्थापित हैं।

- निजी क्षेत्र में — 17
- सार्वजनिक क्षेत्र में— 3
- सहकारी क्षेत्र में — 3

❖ कृषि आधारित उद्योगों में सबसे बड़ा उद्योग सूती वस्त्र उद्योग है। महिलाएँ सर्वाधिक सूती वस्त्र उद्योग में ही कार्यरत हैं।

❖ राज्य की प्रथम सूती वस्त्र मिल **द कृष्णा मिल्स लि., ब्यावर** में सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन के सहयोग से **श्यामजी कृष्ण वर्मा** द्वारा 1889 ई. में स्थापित की गयी। जो अब राज्य सरकार के अधीन है। इसके बाद दूसरी सूती वस्त्र मिल **एडवर्ड मिल्स** (1906) **ब्यावर** में स्थापित की गई।

❖ राज्य में सूती वस्त्र मिलों को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

सार्वजनिक क्षेत्र की सूती मिलें	सहकारी क्षेत्र की सूती मिलें	निजी क्षेत्र की प्रमुख सूती मिलें
एडवर्ड मिल्स (ब्यावर)–1906	राजस्थान सहकारी कताई मिल लिमिटेड गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) –1965	मेवाड़ टेक्सटाईल मिल्स (भीलवाड़ा) –1938
श्री महालक्ष्मी मिल्स (ब्यावर) –1925	श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल लि. **(हनुमानगढ़)**–1978	राजस्थान स्पिनिंग एंड विविंग मिल्स (भीलवाड़ा)
श्री विजय कॉटन मिल्स (विजयनगर)	गंगापुर सहकारी कताई मिल लि. गंगापुर (भीलवाड़ा) –1981	महाराजा उम्मेद सिंह मिल्स लि. (पाली) –1942
नोट—इन तीनों मिलों की स्थापना निजी क्षेत्र के अंतर्गत हुई थी। 1974 ई. में राष्ट्रीय वस्त्र निगम (NTC) द्वारा इनका अधिग्रहण कर लिया गया। इसके बाद यह सार्वजनिक क्षेत्र की सूती वस्त्र मिलें कहलायी। वर्तमान में यह सभी बंद पड़ी है।	**नोट**—1 अप्रैल, 1993 को इन तीनों सहकारी क्षेत्र की मिलों एवं गुलाबपुरा की सहकारी जिनिंग मिल को मिलाकर 'राजस्थान राज्य सहकारी स्पिनिंग व जिनिंग मिल्स संघ लिमिटेड (स्पिनफैड), जयपुर' की स्थापना की गई।	दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड, ब्यावर सार्दुल टैक्सटाइल मिल्स लिमिटेड (श्रीगंगानगर) –1946 उदयपुर कॉटन मिल्स (उदयपुर) –1961 आदित्य सूती वस्त्र मिल...

3 वृहद् सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएँ
(इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना)
[Major Irrigation and River Valley Projects (Indira Gandhi Canal Project)]

- राजस्थान सरकार के सिंचाई विभाग की स्थापना वर्ष **1949** में की गयी। वर्तमान में इसे **'जल संसाधन विभाग'** **(WRD)** कहा जाता है।
- भारत के समग्र भू-जल का **1.72%** राजस्थान राज्य में निहित है। राज्य में भू-जल के कुल **249** खण्डों में से केवल **31** ही सुरक्षित हैं।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में **1 वृहद, 43 मध्यम** एवं **2272 लघु सिंचाई परियोजनाएँ** कार्यरत थीं।
- स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राज्य में 4 लाख हैक्टेयर भूमि में ही सिंचाई सुविधा उपलब्ध थी। परन्तु वर्तमान में राज्य में कुल संभावित सिंचाई क्षमता 51 लाख हैक्टेयर है। जिस में से 39.36 लाख हैक्टेयर (इंदिरा गांधी नहर परियोजना सहित) क्षेत्र में सिंचाई क्षमता का सृजन हो चुका है।
- राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो देश के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है, जिसमें 101 लाख हेक्टेयर बंजर भूमि है। अपने आकार के बावजूद, इसे देश के जल संसाधनों का केवल 1.16 प्रतिशत ही प्राप्त होता है। राज्य में अनियमित वर्षा पैटर्न, उच्च तीव्रता और कम वर्षा वाले दिनों के कारण पानी की काफी बर्बादी होती है, जिससे भूजल स्तर कम होता है और खेती योग्य भूमि बंजर भूमि में बदल जाती है।
- राजस्थान में कृषि मुख्य रूप से वर्षा अर्थात् मानसून पर निर्भर है, जो न केवल बहुत अनिश्चित प्रकृति का है, बल्कि आमतौर पर अल्पकालिक भी होता है। अस्थिर मौसम की स्थिति और अनिश्चित जल व्यवस्था के कारण किसानों को वर्षा और भूजल दोनों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- वर्ष 2024 में मानसून समय पर, 25 जून तक आ गया और जुलाई के पहले सप्ताह तक पूरे राज्य को कवर कर लिया। 1 जून से 30 सितम्बर, 2024 तक वास्तविक वर्षा 662.44 मिमी थी, जो सामान्य वर्षा 417.46 मिमी से 58.68 प्रतिशत अधिक थी। इस अवधि के दौरान वर्षा राज्य के सभी जिलों में सामान्य से अधिक थी।
- राजस्थान में सिंचाई मुख्य रूप से नहरों, ट्यूबवेल, खुले कुओं एवं तालाबों और अन्य स्रोतों से होती है। कुल सिंचित क्षेत्र 95,47,292 हेक्टेयर है।

- विभाग के सतत प्रयासों से मार्च, 2024 तक वृहद, मध्यम एवं लघु सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण कर कुल 39.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएँ सृजित की गई हैं। वर्ष 2024-25 में दिसम्बर, 2024 तक 14,514.41 हेक्टेयर अतिरिक्त सिंचाई क्षमता सृजित की गई है।

  [स्रोत—आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट-2024-25]
- राजस्थान में सतही जल स्रोतों से कुल उपलब्ध जल की मात्रा 25.38 बी.सी.एम. है। जो देश के कुल सतही जल का मात्र 1.16% है।
- राजस्थान में 15 नदी बेसिन चिह्नित किए गए है। इन्हें 58 उप बेसिनों तथा 541 सूक्ष्म जलग्रहण क्षेत्र में विभाजित किया गया है।

सिंचाई संबंधी नवीनतम आंकड़े

- कृषि विभाग की नवीनतम रिपोर्ट Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance-2022-23 में राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र के आंकड़े निम्न प्रकार हैं—
  - राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र के 69.39% भाग पर सिंचाई कुएँ व नलकूपों से होती है। (सर्वाधिक-जोधपुर) (न्यूनतम-गंगानगर)
  - राजस्थान में कुओं से सिंचाई — 20.10% (सर्वाधिक-झालावाड़)
  - राजस्थान में नलकूपों से सिंचाई — 49.29% (जोधपुर)
  - राजस्थान में नहरों से सिंचाई — 28.39% (सर्वाधिक-गंगानगर)
  - राजस्थान में तालाबों से सिंचाई —0.33% (सर्वाधिक-टोंक)
  - राजस्थान में अन्य साधनों से सिंचाई — 1.89%

- राज्य के कुल कृषि क्षेत्र का **2/3 भाग** वर्षा पर आधारित है।
- भारत के कुल सिंचित क्षेत्र का लगभग 9.2% भाग राजस्थान में है।
- कुएँ एवं नलकूप द्वारा सकल सिंचित क्षेत्र में सर्वाधिक भाग पर सिंचाई हो रही है। वर्तमान में नलकुप प्रथम स्थान पर आते है। जिनका सकल सिंचित क्षेत्र में लगभग 47% योगदान है।

बंजर भूमि एवं सूखा क्षेत्र संबंधी विकास परियोजनाएँ

राजीव गाँधी जल संचय योजना (आरजीजेएसवाई)

❖ राज्य में गिरते भू-जल स्तर को रोकने, सूखे की स्थिति और अकाल से उबारने एवं राज्य में वर्षा जल के अधिकतम संग्रहण, संरक्षण एवं उपलब्ध जल का न्यायोचित उपयोग करने हेतु राज्य सरकार द्वारा 20 अगस्त, 2019 को 'राजीव गांधी जल संचय योजना' (RGJSY) प्रारंभ की गई।

❖ इस योजना के माध्यम से पुराने कुओं, नालें, नदियों, जलाशयों एवं नहरों का जीर्णोद्धार एवं उनमें जल संवर्द्धन क्षमता में वृद्धि हेतु कार्य योजना बनाकर सफाई की जा रही है।

❖ इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण राजस्थान रखा गया है।

मुख्य उद्देश्य

(i) जल सरंक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना।
(ii) परम्परागत जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करना।
(iii) गिरते भू-जल स्तर को रोकना व भू-जल स्तर में वृद्धि करना।
(iv) वर्षा जल संग्रहण कर सिचिंत कृषि योग्य क्षेत्रफल बढ़ाना।
(v) गांवों में पेयजल की कमी को दूर करना।
(vi) सघन वृक्षारोपण कर हरित क्षेत्र में वृद्धि करना
(vii) जल संरक्षण व वर्षा संग्रहण संरचनाओं की गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन करना।

❖ RGJSY योजना के द्वितीय चरण का शुभारंभ राज्य के ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्रालय द्वारा **22 मार्च, 2023** को विश्व जल दिवस के अवसर पर **जयपुर** के जवाहर कला केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में किया गया।

❖ द्वितीय चरण के दौरान राज्य की 349 पंचायत समितियों में 2600 करोड़ रुपये की राशि से 4600 गाँवों में जल संग्रहण एवं संरक्षण के 2 लाख कार्य किये जा रहे है।

❖ इसके प्रथम चरण की कार्य अवधि दो वर्ष निर्धारित की गयी थी।

सूक्ष्म सिंचाई योजना (प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई परियोजना)

❖ राजस्थान में सीमित जल संसाधन के समुचित उपयोग हेतु बूँद-बूँद एवं फव्वारा सिंचाई को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष **2005-06** से सूक्ष्म सिंचाई योजना प्रारम्भ की गई।

❖ वर्ष 2015-16 से यह योजना प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत सूक्ष्म सिंचाई योजना के रूप में संचालित की जा रही है। इसमें केन्द्र व राज्य का 60 : 40 का अंश है। इसका उद्देश्य हर खेत को पानी है।

❖ इसमें पूर्व में चल रही निम्न योजनाओं का समावेश किया गया है–

✧ त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (AIBP)

किया गया है। ...
योजना के तहत मुख्य रू
50% भारत सरकार व

✧ इसके मुख्य रूप से दो

✧ गिरते भू-जल स्त

✧ जन सहभागिता द्व

राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मक

❖ विश्व बैंक द्वारा पोषित RAC
क्लस्टर्स में लगभग 2.75 ला
रहा है।

❖ इसका उद्देश्य बारानी क्षेत्रो मे उ
जल क्षेत्रो मे कुशलतम जल
तकनीकों से उत्पादकता बढ़ा
2012 में हुआ।

❖ **समेकित बंजर भूमि विका**
यह कार्यक्रम वर्ष **1989-90**

❖ **बंजर भूमि विकास निगम**–
केन्द्र सरकार द्वारा **1985** में

❖ **पहल परियोजना**—इसे डूँगर
भी कहते है। यह सीडा (स्व
प्रारंभ की गई थी।

❖ **राजस्थान वेस्टलैण्ड डवल**
से सम्बन्धित सभी विभागों
सुनिश्चित करने के उद्देश्य से
गठन **2009** में किया गया।
'बंजर भूमि व चरागाह वि

मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अ

❖ राजस्थान की जल संसाधन
विभिन्न विभागों के समन्वय
उपलब्ध करवाकर उन समस
जल स्वावलंबन अभिया
गया।

❖ इस अभियान की अवधि **4**
तक राजस्थान के **23,894**
चयन करके **गतिविधियों**
ढलान, वर्षा जल की उ
है। इस हेतु समग्र योजना ग्र

राजस्थान के भौगोलिक चिह्नीकरण (G.I. टैग) प्राप्त हस्तशिल्प

❖ भौगोलिक चिह्नीकरण (Geographical Indication)—एक प्रकार का बौद्धिक संपदा अधिकार है, जो किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित उत्पादों को दिया जाता है। जो उन्हें विशेष पहचान देता है। यह सुनिश्चित करता है कि केवल वे उत्पाद जो उस क्षेत्र में पारंपरिक तरीकों से बनाए जाते हैं, इस क्षेत्र के नाम का उपयोग कर सकें।

❖ राजस्थान में अब तक 17 उत्पाद एवं 5 कलाओं (कुल-22 उत्पाद एवं कलाओं) को G.I. टैग मिल चुका है, G.I. टैग प्राप्त हस्तशिल्प निम्न है—

G.I. टैग	क्षेत्र	कला
1. कोटा डोरिया	कोटा	हस्तशिल्प (2005 में)
2. ब्ल्यू पॉटरी	जयपुर	हस्तशिल्प (2009 में)
3. ब्ल्यू पॉटरी **(लोगो)**	जयपुर	हस्तशिल्प (2016 में)
4. मोलेला क्ले वर्क (मिट्टी कार्य)	मोलेला, राजसमंद	हस्तशिल्प (2009 में)
5. मोलेला क्ले वर्क **(लोगो)**	मोलेला, राजसमंद	हस्तशिल्प (2016 में)
6. कठपुतली कला	राजस्थान	हस्तशिल्प (2009 में)
7. कठपुतली कला **(लोगो)**	राजस्थान	हस्तशिल्प (2006 में)
8. सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंट	जयपुर	हस्तशिल्प (2010 में)
9. कोटा डोरिया **(लोगो)**	कोटा	हस्तशिल्प
10. फूलकारी	राजस्थान	हस्तशिल्प
11. बगरू हैंड ब्लॉक प्रिंट	जयपुर	हस्तशिल्प
12. थेवा कला	प्रतापगढ़	हस्तशिल्प
13. पोकरण पॉटरी	पोकरण, जैसलमेर	हस्तशिल्प
14. मकराना संगमरमर	मकराना (डीडवाना-कुचामन)	प्राकृतिक वस्तु
15. सोजत मेहंदी	सोजत, पाली	कृषि उत्पाद
16. बीकानेरी भुजिया	बीकानेर	खाद्य वस्तु
17. केर, सांगरी	राजस्थान	खाद्य वस्तु

❖ इन 17 उत्पादों के अलावा G.I. टैग प्राप्त **राजस्थान की पाँच कलाएँ** निम्न है—

1.	पिछवाई कला	नाथद्वारा, राजसमंद (2023)
2.	जोधपुरी बंधेज कला	जोधपुर
3.	कोफ्तागिरी कला	उदयपुर
4.	उस्ताकला कला	बीकानेर
5.	बीकानेरी कशीदाकारी कला	बीकानेर

नोट—फूलकारी कला को राजस्थान के अलावा पंजाब एवं हरियाणा में भी G.I. टैग प्राप्त है। यह एक प्रकार की कढ़ाई (सिलाई) है।

❖ भारत में G.I. टैग प्राप्त करने वाला पहला उत्पाद **दार्जिलिंग की चाय** थी। जिसे 2004 में G.I. टैग मिला था।

❖ राजस्थान में G.I. टैग प्राप्त करने वाला पहला उत्पाद-**कोटा डोरिया साड़ी** थी।

❖ G.I. टैग राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

❖ **गोरबन्द**, तंग, मोरखा, मेलखूरी, पर्चनी, पलाण, सिंघाड़ा, गिरबाण, बेलचा आदि **ऊँट के शृंगार की वस्तुएँ हैं।**

❖ **गरासियों की फाग** एक प्रकार की ओढ़नी है, जो **सोजत (पाली)** में बनती है।

❖ **पाटोदा का लूगड़ा** पीले पोमचे का ही एक प्रकार है, जो **लक्ष्मणगढ़ और मुकुन्दगढ़** (शेखावाटी क्षेत्र) में बनते हैं।

❖ कोटा में बनने वाली साड़ियाँ प्रायः दो प्रकार की **'डोरिया'** एवं **'मसूरिया'** होती है।

❖ डोरिया साड़ी सूती तथा सादी होती है और 'मसूरिया' बारीक रेशमी उच्च गुणवत्ता वाली होती है। मसूरिया नाम के विषय में कहा जाता है कि मैसूर से कुछ विशेषज्ञ बुनकर यहाँ प्रशिक्षण देने के लिए आये थे इसलिए इसे **कोटा मसूरिया** कहा जाता है।

❖ बारां जिले के 'मांगरोल' कस्बे की कोटा डोरियाँ साड़ियाँ भी बहुत प्रसिद्ध है।

पोमचा का तात्पर्य है—**कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़नी।**

❖ पोमचा शिशु के जन्म पर नवजात शिशु की माँ के लिए उसके मातृ पक्ष की ओर से आता है। बेटे के जन्म पर **पीला पोमचा** और बेटी के जन्म पर **गुलाबी पोमचा** लाने की प्रथा है।

❖ राजस्थान की स्त्रियाँ श्रावण में विशेषकर तीज पर **'लहरिया भांत की ओढ़नी'** ओढ़ती है।

❖ **टाई एंड डाई**— रंग-बिरंगे मनमोहक पारम्परिक वस्त्र, जिसमें धागा बांधकर वस्त्रों को रंगा जाता है। उसे टाई-डाई पद्धति कहा जाता है। यह प्रमुखतया **जयपुर** की प्रसिद्ध है।

❖ पेचवर्क द्वारा बनाई गई रजाई को **रल्ली** या **राली** कहते हैं।

❖ बाँसवाड़ा जिले का **'चंदूजी का गढ़ा'** तथा डूंगरपुर जिले का **'बोडीगामा'** तीर-कमान के लिए विख्यात है।

❖ लकड़ी की कलात्मक वस्तुओं के निर्माण के लिए चित्तौड़गढ़ जिले का **बस्सी गाँव** प्रसिद्ध है।

❖ बाड़मेर व शेखावाटी के कलात्मक फर्नीचर प्रसिद्ध है।

❖ 18 शताब्दी में महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा विभिन्न कलाओं, उत्पादों के विकास के लिए **36** कारखानों की स्थापना की गई थी। जिस में से चार वस्त्रों से संबंधित थे।

❖ हड्डियों के आभूषण के लिए जयपुर प्रसिद्ध है।

❖ मांगलिक अवसरों पर कुमकुम, अक्षत आदि रखने के लिए प्रयोग की गई लकड़ी के पात्र को **चोपड़े** कहा जाता है।

❖ राजस्थान में संगमरमर पर मीनाकारी का सर्वाधिक कार्य **जयपुर** में किया जाता है। कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी का कार्य **बीकानेर** में किया जाता है।

❖ ऊँट के शृंगार की वस्तुओं की खरीददारी के लिए **पुष्कर (अजमेर)** प्रसिद्ध है।

राजस्थान के प्रमुख हस्तशिल्पी

क्र.सं.	हस्तशिल्पी	निवासी	सम्बन्धित कला
1.	**कृपाल सिंह शेखावत**, नाथी बाई	जयपुर	ब्लू पॉटरी
2.	**सरदार कुदरत सिंह**, काशीनाथ	जयपुर	मीनाकारी
3.	**मोहम्मद यासिन** छीपा	बालोतरा (बाड़मेर)	कटार छींट की छपाई
4.	**नाथूजी, महेश, शंकरलाल, वेणीराम, रामप्रसाद सोनी** (राजसोनी परिवार)	प्रतापगढ़	थेवा कला
5.	**हिसामुद्दीन उस्ता**	बीकानेर	उस्ता कला
6.	**डूँगरसिंह भाटी**	जैसलमेर	ऊँट शृंगार कला (कमरबंद एवं तंग)
7.	**श्रीलाल जोशी, शांतिलाल जोशी, पार्वती जोशी** इत्यादि	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	फड़ (पड़) चित्रण
8.	**कुन्दनलाल मिस्त्री**	उदयपुर	आधुनिक चित्रकारी
9.	पवन जांगिड़ व गोपाल सैनी	चूरू	चंदन काष्ठ शिल्प
10.	**अर्जुन लाल प्रजापति (क्लोनिंग के महारथी)**	जयपुर	संगमरमर की मूर्तियाँ, मिट्टी शिल्प
11.	प्रभातजी सुथार	बस्सी (चित्तौड़गढ़)	काष्ठकला
12.	सुनीत घिल्डिया व पं. द्वारका प्रसाद शर्मा	जयपुर	रेखाओं से चित्र
13.	सुरजीत कुमार चोयल	जयपुर	आधुनिक चित्रकार
14.	**मोहनलाल चतुर्भुज कुम्हार** व खेमराज कुम्हार	मोलेला (राजसमंद)	टेराकोटा (मृण्मूर्तियाँ)
15.	तैयब खान, यासीन रंगरेज	जोधपुर	बंधेज कला
16.	**लालसिंह भाटी**	जोधपुर	चमड़े की ढाल पर सुनहरी नक्काशी
17.	मोहम्मद खलील	जोधपुर	जूती निर्माण
18.	नरोत्तम नारायण शर्मा	नाथद्वारा (राजसमंद)	पिछवाई चित्रण
19.	**ऊषा रानी हूजा**	जयपुर	मूर्तिशिल्प
20.	श्रीमती रमा देवी	बाड़मेर	कशीदाकारी
21.	पं. लल्लू नारायण शर्मा	जयपुर	मूर्तिकार
22.	मातुराम वर्मा	पिलानी	मूर्तिशिल्प
23.	लक्ष्मीनारायण सोनी	बीकानेर	स्वर्ण व चाँदी की मूर्तियाँ
24.	अंकित पटेल	जयपुर	ताँबा, काँच व लकड़ी की मूर्तियाँ
25.	जहीरुद्दीन उस्ता	बीकानेर	पत्थर की नक्काशी
26.	यज्ञदत्त शर्मा	कोटा	चित्र व मॉडल
		जयपुर	लघु चित्र शैली

- 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में इनकी कुल आबादी **3.14 लाख** है, जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग 3.4% है।
- जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान में सर्वाधिक गरासिया **सिरोही** (1.53 लाख), **उदयपुर** (1.04 लाख), पाली, बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर जिलों में निवास करते हैं। [VDO 2022, 2016]
- सिरोही की आबूरोड़ व पिंडवाड़ा तहसील, उदयपुर की कोटड़ा व गोगुन्दा तहसील तथा पाली की बाली तहसील गरासिया जनजाति का बाहुल्य क्षेत्र है।
- आबूरोड़ (सिरोही) का **भाखर क्षेत्र** गरासियों का मूल स्थान माना जाता है।
- गरासिया जनजाति का पवित्र स्थल माउंट आबू की नक्की झील को माना जाता है।
- गरासिया जनजाति में मृत्युभोज को **कांदिया** (कांधिया)/**मेक** कहा जाता है। (जो मृत्यु के बारहवें दिन रिश्तेदारों को मांस व मक्के का दलिया खिलाकर संपन्न किया जाता है।)
- इस समुदाय में सामूहिक रूप से की जाने वाली कृषि को **हारी भावरी** कहा जाता है।

नोट—राजस्थान में स्थानांतरित कृषि के निम्न प्रकार है—

- राजस्थान में **वालरा, चिमाता** एवं **दाजिया** स्थानांतरित कृषि के प्रकार है।
- **वालरा** राजस्थान में स्थानांतरित कृषि का एक सामान्य नाम है, जबकि चिमाता एवं दाजिया विशेष क्षेत्रों में या आदिवासी एवं भील जलजाति द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि विशिष्ट नाम है।
- **वालरा**—राजस्थान में वनों को काटकर या जलाकर की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को कहते है। [VDO 2022]
- **दाजिया एवं चिमाता**—'भील' जनजाति द्वारा मैदानी इलाकों में की जाने वाली खेती को **दजिया/दाजिया** के नाम से जाना जाता है। वही पहाड़ी इलाकों में (पहाड़ी ढ़लानों पर) उनके द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित (झूम) कृषि को **चिमाता** कहा जाता है।

- गरासियों के नववर्ष की शुरुआत **आखातीज** (वैशाख शुक्ल तृतीया) के दिन से होती है।
- गरासियों के घर को **घेर/घोर** और घरों के समूह को **फालिया** (**फली/फलियाँ**) कहते हैं।
- गरासिया जनजाति में गाँव या बस्ती का मुखिया को **पटेल** कहा जाता है। इसे कहीं-कहीं **सहलोत** या **पालवी** भी कहा जाता है। [VDO (Pre) 2021]
- गरासिया लोग **मोर** को आदर्श पक्षी मानते हैं और **सफेद पशुओं को पवित्र** मानते हैं।
- गरासिया जनजाति में तलाक प्रथा को **छेड़ा छूट** कहा जाता है (पति द्वारा दण्ड चुकाकर पत्नी को तलाक देने की प्रथा)।
- गरासियों के लोकप्रिय देवता भाखरबावची को माना जाता है, इनके ... भैरू भी इनके मुख्य देवता हैं।

- **ताणना विवाह**—गणगौर मेले से लड़का लड़की को भगाकर ले जाता है। तत्पश्चात पंचों द्वारा निर्धारित **दापा (वधू मूल्य)** वर पक्ष चुकाता है। इसमें सगाई, फेरे आदि रस्में नहीं होती है।
- **गरासिया जनजाति के प्रमुख नृत्य—लूर नृत्य, कूँद नृत्य, वालर नृत्य, जवारा नृत्य, मोरिया नृत्य,** मांदल नृत्य आदि हैं।
- **गरासिया जनजाति के प्रमुख मेले**—नक्की-आबू, सियावा, मारकुण्डेश्वरजी-अजारी (सिरोही)।
- **मनखों रो मेलो**—आबूरोड (सिरोही) के निकट **सियावा** में गरासियों का सबसे बड़ा मेला। जो **'मनखो रो मेलो'** कहलाता है।
- गरासिया जनजाति के लोग प्रतिवर्ष माघ महीने में **'देवरा बावसी'** (भैंरूजी महाराज) की विशेष पूजा अर्चना करते हैं।

सहरिया जनजाति

- **'सहरिया'** शब्द की उत्पत्ति फारसी शब्द **'सहर'** से हुई है, जिसका अर्थ होता है **'जंगल में निवास करने वाले'**।
- सर्वाधिक पिछड़ी जनजाति होने के कारण भारत सरकार द्वारा राजस्थान की जनजातियों में एकमात्र सहरिया जनजाति को **आदिम जनजाति समूह** की सूची में शामिल किया हुआ है।
- भारत के अधिकांश सहरिया **मध्यप्रदेश** (6.15 लाख) एवं **राजस्थान** (1.11 लाख) राज्यों में निवास करते हैं।
- जनगणना-2011 के अनुसार राजस्थान में सहरिया जनजाति की कुल आबादी 1,11,377 है। इनमें सर्वाधिक सहरिया **बारां जिले** (1,08,520) **के शाहबाद व किशनगंज तहसीलों** में निवास करते है। इसके अलावा कुछ संख्या में कोटा, झालावाड़, धौलपुर में भी निवास करते हैं। [VDO 2016]
- **कोतवाल**—सहरियों के मुखिया को कहते हैं। इनकी छोटी बस्ती **सहराना** एवं गाँव **सहरोल/सहरोली** कहे जाते हैं।
- **फाग**—होली के अवसर पर सहरिया लोग घर-घर जाकर **'फाग'** गीत गाते हैं एवं नृत्य करते हैं।
- **हीड़ (हिड़ा)**—दीपावली के अवसर पर सहरिया लोगों द्वारा गाये जाने वाले गीत।
- सहरियों के घास फूस से निर्मित घर **टापरी** कहलाते है।
- जंगलों में पेड़ों पर सहरियों की मचाननुमा झोपड़ी को **गोपना** (कोरूआ/टोपा) कहते हैं।
- सहरिया जनजाति का मुखिया **कोतवाल** कहलाता है। सहरिया जाति की बस्ती **सहराना** कहलाती है।
- **सहरिया जनजाति** में भीख मांगना वर्जित है।
- इस जनजाति में कन्या के जन्म को शुभ माना जाता है।
- इस जनजाति के पुरुष वर्ग में गोदना वर्जित है।
- सहरिया जनजाति में **धारी संस्कार** का प्रचलन है। इसके तहत मृत्यु के तीसरे दिन मृतक की अस्थियां व राख एकत्र कर रात्रि में साफ आंगन में बिछाकर ढ़क लेते हैं एवं दूसरे दिन उस पर बने चिह्न (आकृति) को देखा जाता है। यह एक प्रकार से पुनर्जन्म का शकुन देखना होता है। **इसे** ...

8 निर्यात सामग्री

[Export Materials]

राज्य प्रचुर भौतिक संसाधनों, समृद्ध खनिज सम्पदा, विश्व प्रसिद्ध हस्तशिल्प, हथकरघा एवं उत्कृष्ट कौशल से सम्पन्न है। ये सभी **सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम** (एम.एस.एम.ई.) क्षेत्र में विनिर्माण, प्रसंस्करण गतिविधियों और सेवाओं हेतु अपार संभावनाएं प्रदान करते हैं, जो राज्य की प्रमुख शक्ति है।

❖ राज्य में रत्न एवं आभूषण, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, ऑटो कम्पोनेंट्स, वस्त्र, चमड़ा और आयामी पत्थरों के क्षेत्र में एम.एस.एम.ई. का अत्यंत मजबूत आधार है।

❖ राज्य का मुख्य ध्येय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की स्थापना को बढ़ावा देना एवं प्रोत्साहन प्रदान करना है और उन्हें उच्च प्रतिस्पर्धात्मक स्तर प्राप्त करने के लिए एक सक्षम और अनुकूल वातावरण प्रदान करना है।

❖ राज्य सरकार द्वारा आर्थिक विकास हेतु निर्यात को एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में पहचान दी गई है। राज्य से निर्यात की अत्यन्त सम्भावनाएं हैं। राष्ट्रीय निर्यात में राज्य निर्यात की हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिए, राज्य विभिन्न निर्यातोन्मुख सुधारों को लागू करने हेतु निरन्तर प्रयासरत है।

❖ **राजस्थान निर्यात संवर्द्धन परिषद्** (आर.ई.पी.सी.) (गठन—8 नवम्बर, 2019) और **निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क** (ई.पी.आई.पी.) (गठन—25 अक्टूबर, 2019) का विकास ऐसे ही महत्त्वपूर्ण उपाय हैं, जो राज्य से निर्यात को बढ़ावा देंगे।

❖ राज्य द्वारा निरंतर किए जा रहे समस्त प्रयास राजस्थान को भारत में समावेशी एवं संवहनीय औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल इको-सिस्टम के साथ सर्वाधिक पसंदीदा निवेश स्थल बनाने पर केन्द्रित हैं।

❖ राजस्थान की निवेशक अनुकूल नीतियां बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने और सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई हैं, जो इसे भारत के सबसे आकर्षक निवेश स्थलों में से एक बनाती है।

❖ राज्य सरकार ने आर्थिक विकास के लिए **निर्यात** को प्रमुख क्षेत्र के रूप में पहचाना है। राज्य से निर्यात का महत्त्व न केवल देश के खजाने के लिए मूल्यवान **विदेशी मुद्रा अर्जित करने** में निहित है, बल्कि राज्य लिए मूल्यवान ... लाभ यथाः उत्पादों हेतु बाजार अवसरों का विस्तार, ... तकनीकों में सुधार, संयंत्र

❖ यह नीति राजस्थान के निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मकता को रणनीतिक वित्तीय और अवसंरचनात्मक सहायता के माध्यम से बढ़ाने का प्रयास करती है।

❖ यह कनेक्टिविटी में सुधार, निर्यात-उन्मुख क्लस्टर विकसित करने और एम.एस.एम.ई. को लक्षित सहायता प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है। इसके अतिरिक्त, यह नीति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्य से कौशल विकास, तकनीकी को अपनाने और बाजार तक पहुँच बढ़ाने को प्रोत्साहित करती है। निर्यात प्रक्रियाओं को सरल बनाकर ओर सिंगल विंडो क्लियरलेंस सिस्टम स्थापित करके, यह नीति राजस्थान की वैश्विक व्यापार में स्थिति को मजबूत करने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और रोजगार के अवसर सृजित करने का लक्ष्य रखती है। [स्रोत—आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट-2024-25]

❖ राजस्थान में वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान कुल निर्यात **83,704.24** करोड़ रुपये का हुआ। इसमें वर्ष 2022-23 की तुलना में **7.628%** की वृद्धि हुई है। वर्ष 2022-23 में राज्य का निर्यात 77771.37 करोड़ रुपये रहा था।

❖ राजस्थान से निर्यात होने वाली शीर्ष **पाँच प्रमुख निर्यातक वस्तुएँ** निम्न है—**इंजीनियरिग वस्तुएँ, रत्न एवं आभूषण, धातुएँ, वस्त्र (कपड़ा)** एवं हस्तशिल्प वस्तुएँ। इन पाँच वस्तुओं का राज्य के निर्यात में **65%** से अधिक हिस्सा है। जिनका विवरण निम्न तालिका अनुसार है—

तालिका : राजस्थान से निर्यात

क्र. सं.	उत्पाद	2023-24 (करोड़ रु. में)	प्रतिशत (हिस्सा)
1.	इंजीनियरिंग	16592.51	19.82%
2.	रत्न एवं आभूषण	11183.23	13.36%
3.	धातुएँ	9857.94	11.78%
4.	वस्त्र (कपड़ा)	8819.58	10.54%
5.	हस्तशिल्प वस्तुएँ	7986.83	9.54%

तक पुनर्भरण किया जाएगा।

- EPI-2022 में पूरे देश की ओवरऑल रैंकिंग में तमिलनाडु प्रथम स्थान पर एवं राजस्थान 13वें स्थान पर रहा।

राजस्थान सरकार द्वारा निर्यात प्रोत्साहन के लिए प्रमुख प्रयास

राजस्थान निर्यात संवर्द्धन नीति-2024

- इस नीति के तहत राज्य में विनिर्माण तथा सेवा संबंधी उपक्रम से निर्यात की संभावना के मध्यनजर उद्यमियों को प्रोत्साहित करने व अन्य राज्यों के निर्यातकों के समान अवसर प्रदान किए जाने हेतु इसे 8 दिसम्बर, 2024 को अधिसूचित किया गया है।
- यह योजना 31 मार्च, 2029 तक प्रभावी रहेगी।
- इस नीति के तहत **मुख्यमंत्री निर्यात वृद्धि अभियान** चलाकर नये उद्यमियों को निर्यातक बनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा। नये उद्यमियों

राजस्थान एक जिला एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) नीति-202

- इस नीति का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक जिले से निर्यात क्षमता वाले उत्पा सेवाओं की पहचान करना और उन्हें प्रोत्साहित करना है तथा जिले को संभावित निर्यात केंद्र के रूप में परिवर्तित करना है।
- **8 दिसंबर, 2024** को घोषित राजस्थान ओ.डी.ओ.पी. नीति 2 का उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमताओं का लाभ उठाकर और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के साथ एकीकृत करके बजट 20 25 के लक्ष्यों को लागू करना है। यह नीति स्थानीय उद्यो सहयोग को सुव्यवस्थित करने, उत्पाद मूल्य शृंखलाओं को बनाने और क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करने पर जोर देती है।

एक जिला एक उत्पाद के अंतर्गत चिह्नित जिलेवार उत्पाद

क्र.	जिला	उत्पाद	श्रेणी	क्षेत्र
1.	अजमेर	ग्रेनाइट एवं मार्बल-स्लैब्स, टाइल्स और सामग्री	प्राथमिक	विनिर्माण
2.	अलवर	अभियांत्रिकी उत्पाद (ऑटोमोबाइल पार्ट्स)	प्राथमिक	विनिर्माण
		भारतीय मिष्ठान (अलवर मावा/मिल्क केक आदि)	द्वितीयक	खाद्य प्रसंस्करण
3.	बालोतरा	वस्त्र	प्राथमिक	वस्त्र
4.	बांसवाड़ा	ग्रेनाइट एवं मार्बल-स्लैब्स और टाइल्स	प्राथमिक	विनिर्माण
		सिंथेटिक यार्न और फेब्रिक	द्वितीयक	वस्त्र
5.	बारां	कृषि उत्पाद (सोयाबीन आदि)	प्राथमिक	कृषि
6.	बाड़मेर	कशीदाकारी	प्राथमिक	हथकरघा
		ब्लॉक प्रिंटिंग वस्तुएं	द्वितीयक	हस्तकला
7.	ब्यावर	क्वार्ट्ज एवं फेल्सपार पाउडर	प्राथमिक	विनिर्माण
8.	भरतपुर	कृषि और प्रसंस्करण उत्पाद (खाद्य तेल, शहद आदि)	प्राथमिक	कृषि, कृषि प्रसंस्करण और खाद्य
9.	भीलवाड़ा	वस्त्र	प्राथमिक	वस्त्र
10.	बीकानेर	बीकानेरी नमकीन	प्राथमिक	खाद्य प्रसंस्करण
		ऊनी कारपेट यार्न,	द्वितीयक	वस्त्र
		सिरेमिक उत्पाद	तृतीयक	विनिर्माण
11.	बूंदी	चावल	प्राथमिक	कृषि
12.	चित्तौड़गढ़	ग्रेनाइट एवं मार्बल-स्लैब्स और टाइल्स	प्राथमिक	विनिर्माण
13.	चूरू	काष्ठ उत्पाद	प्राथमिक	विनिर्माण
14.	दौसा	दरी (गलीचे)	प्राथमिक	वस्त्र
		पत्थर उत्पाद	द्वितीयक	विनिर्माण
15.	डीडवाना-कुचामन	मकराना मार्बल एवं ग्रेनाइट	प्राथमिक	विनिर्माण
16.	डीग	पत्थर संबंधी उत्पाद	प्राथमिक	विनिर्माण

- हस्तशिल्प डिजाइन व शोध संस्थान—जयपुर
- नेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर वुड टेक्नोलॉजी एवं डिजाइन—जोधपुर

नोट—जोधपुर में सौर ऊर्जा पर आधारित वुड सीजनिंग प्लांट तथा कॉमन फेसिलिटी सेन्टर की स्थापना वर्ष 1999 में की गई थी। अब इसे राजसीको द्वारा 'नेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर वुड टेक्नोलॉजी एवं डिजाइन' के रूप से संचालित किया जा रहा है।

- मयूर बीड़ी कारखाना, टोंक भी **राजसीको** द्वारा संचालित किया जा रहा है।
- **गुरु-शिष्य परम्परा योजना**—राज्य की लुप्त हो रही हस्तकलाओं के पुनरुत्थान हेतु यह योजना संचालित की जा रही है।

उद्देश्य—

- राज्य में औद्योगिक संरचना विकास व औद्योगिक क्षेत्र विकसित करना, मध्यम व वृहद् उद्योगों को सावधि ऋण उपलब्ध कराना तथा उन्हें तकनीकी सलाह, मर्चेंट बैंकिंग गतिविधियों व इक्विटी सहभागिता द्वारा औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करना आदि हैं।

मुख्य कार्य—

- वृहद्, मध्यम व लघु उद्योगों को आर्थिक सहायता व संसाधन उपलब्ध कराना, राज्य में औद्योगिक क्षेत्रों को विकसित करना, औद्योगिक आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- यह राज्य में औद्योगिक विकास को गति देने वाली शीर्ष संस्था है। यह राज्य में निवेश को आकर्षित करने के लिए औद्योगिक आधारभूत सुविधाओं को विकसित करने में भी मदद करती है।

राजस्थान में औद्योगिक विकास को समर्पित संस्थाएँ

1.	**राजस्थान वित्त नियम (RFC), जयपुर**	❖ **स्थापना**— 17 जनवरी, 1955। ❖ **उद्देश्य**—लघु, मध्यम, वृहत् उद्योगों को दीर्घकालीन ऋण।
2.	**राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व विनियोग निगम लि. (RIICO), जयपुर**	❖ **स्थापना**—जनवरी, 1980। ❖ **उद्देश्य**—(i) औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना एवं विकास। (ii) औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत अवसंरचना का विकास। (iii) लघु, मध्यम, वृहत् उद्योगों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध करवाना।
3.	**राजस्थान लघु उद्योग निगम (RAJSICO), जयपुर**	❖ **स्थापना**—1961 ई.। ❖ **उद्देश्य**—लघु व कुटीर उद्योगों के लिए प्रशिक्षण, अवसंरचना, ऋण व हस्तशिल्पियों को विपणन सुविधा।
4.	**राजस्थान कन्सलटेंसी ऑर्गेनाइजेशन लि. (RAJCON), जयपुर**	❖ **स्थापना**—1978 ई.। ❖ **उद्देश्य**—छोटे व मध्यम उद्योगों को सभी प्रकार की परामर्श सेवाएँ प्रदान करना।
5.	**ग्रामीण गैर कृषि विकास एजेंसी (RUDA), जयपुर**	❖ **स्थापना**—1995 ई.। ❖ **उद्देश्य**—राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में हस्तशिल्प आधारित गैर कृषि आजीविका के साधनों का विकास।
	... राज्य हथकरघा विकास निगम लि.	❖ **स्थापना**—1984 ई.। ❖ **उद्देश्य**—बुनकरों को प्रशिक्षण, कच्चा माल व विपणन सुविधा।

- इस योजना में राज्य के सभी जनाधार कार्ड धारक पशुपालक पात्र होंगे तथा ऑनलाइन आवेदन करने पर लॉटरी द्वारा चयन किया जायेगा।
- इस योजना में राज्य के समस्त गोपाल क्रेडिट कार्ड धारक पशुपालक, समस्त लखपति दीदी पशुपालकों को प्रथम प्राथमिकता से लाभान्वित किया जायेगा।

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (RIPS)-2024

- **प्रारम्भ:**- 8 अक्टूबर, 2024
- **विभाग:**- उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
- **मुख्य प्रावधान:**-
  - यह योजना विनिर्माण सेवाएँ, एम.एस.एम.ई, स्टार्ट-अप, अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी), ग्लोबल कैपेबिलिटी सेन्टर्स (जी.सी.सी.), औद्योगिक अवसंरचना एवं निर्यात संवर्द्धन जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर केन्द्रित है, जिससे राजस्थान को औद्योगीकरण में अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया जा सके।
- **उद्देश्य:**-इस योजना का उद्देश्य राज्य में सतत आर्थिक विकास और रोजगार को बढ़ावा देना है तथा औद्योगिक विकास नवाचार, पर्यावरणीय स्थिरता और हरित विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित।

श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (ग्रामीण)

- **प्रारम्भ:**- 6 जनवरी, 2024
- **पूर्व नाम:**- इन्दिरा रसोई योजना (ग्रामीण) (10 सितम्बर,2023 से लागू की गई थी)
- **विभाग:**- पंचायती राज विभाग
- **मुख्य प्रावधान:**-इस योजना का संचालन चिह्नित ग्रामीण कस्बों में राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद् (राजीविका) के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह के द्वारा किया जा रहा है।
- इस योजना के अन्तर्गत लाभार्थी को **8 रुपये** प्रति थाली भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है तथा शेष **22 रुपये** प्रति थाली राज्य सरकार द्वारा भुगतान किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री विश्वकर्मा पेंशन योजना

- **प्रारम्भ:**- 16 दिसम्बर, 2024
- **विभाग:**-राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग
- **पात्र व्यक्ति:**-18 से 45 वर्ष आयु वर्ग के असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, स्ट्रीट वेंडर्स (पथ व्यापारी) तथा लोक कलाकार।
- **लाभ:**- इस योजना में 60 से 100 रुपये मासिक प्रीमियम देने पर 60 वर्ष के बाद **3,000 रुपये** प्रतिमाह पेंशन मिलेगी। प्रीमियम में से शेष 400 रुपये प्रतिमाह राज्य सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

- **प्रारम्भ :- 30 जून 2024** (इसका शुभारम्भ मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा द्वारा 30 जून को टोंक से प्रथम किस्त 1000 रुपए प्रति कृषक 65 लाख से अधिक कृषकों के बैंक खातों में (डीबीटी के माध्यम से कुल 653 करोड़ 40 लाख रुपए) हस्तान्तरित कर किया गया।)
- **लाभ—2000 रुपये** (प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अतिरिक्त)
- मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना प्रदेश के किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसमें पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थी किसानों को दो हजार रुपए की अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

एकीकृत क्लस्टर विकास योजना

- **प्रारम्भ :-** 8 दिसम्बर, 2024
- **उद्देश्य:**-राजस्थान में हस्तशिल्प, हथकरघा और एम.एस.एम.ई. क्लस्टरों की उत्पादकता, गुणवत्ता और दक्षता को बढ़ाना है।

पंचगौरव योजना

- **विभाग :-** आयोजना विभाग
- **प्रारम्भ :-** 17 दिसम्बर, 2024
  राज्य सरकार के कार्यकाल की पहली वर्षगांठ पर प्रदेश के सभी जिलों में पंच-मुखी विकास को बढ़ावा देने के लिए पंच-गौरव कार्यक्रम का शुभारंभ किया है।
- पंचगौरव योजना में एक जिले के लिए पाँच तत्वों (एक उपज, एक वानस्पतिक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल व एक खेल) पर विशेष फोकस करते हुए पाँच गौरव कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। जिसके राज्य स्तर पर नोडल विभाग निम्नानुसार है—

कार्यक्रम	नोडल विभाग
एक जिला - एक उपज	कृषि विभाग
एक जिला - एक प्रजाति	वन विभाग
एक जिला - एक उत्पाद	उद्योग विभाग
एक जिला - एक पर्यटन स्थल	पर्यटन विभाग
एक जिला - एक खेल	खेल विभाग

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

- प्रधानमंत्री द्वारा 13 फरवरी, 2024 को पीएम सूर्य घर योजना के अन्तर्गत हर महीने 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली उपलब्ध कराने के लिए एक करोड़ घरों पर सौर संयंत्र स्थापित करने की घोषणा की गई।

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना

- **प्रारम्भ :- 19 फरवरी, 2024**
  (पूर्व नाम:- मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना), यह योजना 1 मई 2021 को प्रारम्भ हुई थी।
- विभाग :- चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग

महत्त्वपूर्ण योजनाएँ

योजना का नाम	प्रारम्भ करने की तिथि	विभाग का नाम
मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना	13 दिसम्बर, 2024	पशुपालन विभाग
मुख्यमंत्री विश्वकर्मा पेंशन योजना	16 दिसम्बर, 2024	राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग
मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल योजना	16 दिसम्बर, 2024	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
आयुष्मान वय वंदन योजना	29 अक्टूबर, 2024	चिकित्सा विभाग
राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना	08 अक्टूबर, 2024	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड ऋण योजना	28 अगस्त, 2024	सहकारिता विभाग
मुख्यमंत्री आयुष्मान जीवन रक्षा योजना	21 अगस्त, 2024	चिकित्सा विभाग
मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना	07 मार्च, 2024	राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग
मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना	19 फरवरी, 2024	चिकित्सा विभाग
श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (ग्रामीण)	06 जनवरी, 2024	पंचायती राज विभाग
श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (शहरी)	06 जनवरी, 2024	स्वायत शासन विभाग
कामधेनु बीमा योजना	06 सितम्बर, 2023	पशुपालन विभाग
विश्वकर्मा कामगार कल्याण योजना	07 जुलाई, 2023	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
मुख्यमंत्री लघु वाणिज्यक वाहन स्वरोजगार योजना	11 अक्टूबर, 2022	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
डॉ. भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना	08 सितम्बर, 2022	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
मुख्यमंत्री शहरी रोजगार गारंटी योजना (पूर्व नाम – इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना)	09 सितम्बर, 2022	स्थानीय निकाय विभाग
मुख्यमंत्री वर्क फ्रॉम होम एण्ड जॉब वर्क योजना	26 अगस्त, 2022	महिला एवं बाल विकास विभाग
राजस्थान निक्षय संबल योजना	16 मई, 2022	चिकित्सा विभाग
मुख्यमंत्री नि:शुल्क निरोगी राजस्थान योजना	01 अप्रैल, 2022	चिकित्सा विभाग
जागृत बैक टू वर्क योजना	04 जनवरी, 2022	महिला एवं बाल विकास विभाग
काली बाई भील उड़ान योजना	19 दिसम्बर, 2021	महिला एवं बाल विकास विभाग
मिशन निर्यातक बनो	29 जुलाई, 2021	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
भिक्षुक अभिविन्यास एवं पुनर्वास (भोर) कार्यक्रम	जनवरी, 2021	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
इंदिरा महिला शक्ति प्रशिक्षण एवं कौशल संवर्धन योजना	09 दिसम्बर, 2020	महिला एवं बाल विकास विभाग
शुद्ध के लिए युद्ध	26 अक्टूबर, 2020	चिकित्सा विभाग
मुख्यमंत्री कन्यादान/हथलेवा योजना	12 अक्टूबर, 2020	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
इंदिरा गाँधी मातृत्व पोषण योजना	19 नवम्बर, 2020	महिला एवं बाल विकास विभाग
महात्मा गाँधी जनभागीदारी विकास योजना	फरवरी, 2020	ग्रामीण विकास विभाग
निरोगी राजस्थान अभियान	18 दिसम्बर, 2019	चिकित्सा विभाग
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना (MLUPY)	13 दिसम्बर, 2019	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
एक रुपये किलो गेहूँ योजना	01 मार्च, 2019	खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग
उज्ज्वला योजना	2016-2017	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
स्वाधार गृह योजना	2016-2017	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग

पारित किया गया।

- ❖ राष्ट्रपति डॉ. **शंकर दयाल शर्मा** ने इस अधिनियम को **20 अप्रैल, 1993** को अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा एक अधिसूचना द्वारा **24 अप्रैल, 1993** को यह अधिनियम देश में लागू हो गया। इसलिए **24 अप्रैल** को **''पंचायती राज दिवस''** मनाया जाता है।
- ❖ इस संशोधन अधिनियम के द्वारा संविधान के अनुच्छेद 243 को 9वें भाग के रूप में जोड़ा गया। इसे **'पंचायतें'** नाम से उल्लिखित किया गया और **अनुच्छेद 243** से **243ण** तक के प्रावधान सम्मिलित किए गए।
- ❖ इस अधिनियम से संविधान में **11वीं अनुसूची** जोड़ी गई है, जिसमें पंचायती राज संस्थाओं के **29 कार्यों** को सूचीबद्ध किया गया है। इस प्रकार इस अधिनियम के द्वारा पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई।
- ❖ इस अधिनियम द्वारा यह अपेक्षा की गई थी कि देश की सभी राज्य सरकारें इस अधिनियम के लागू होने की तिथि से एक वर्ष के भीतर अपने पुराने प्रचलित पंचायती राज अधिनियमों को निरस्त कर 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के परिपेक्ष्य में नए पंचायतीराज अधिनियम तैयार कर लागू करें।

नोट—नाथूराम मिर्धा समिति की सिफारिश के आधार पर 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1972 पारित किया गया था।

- ❖ इस संशोधन द्वारा संविधान के भाग-9 में अनुच्छेद 243-243ण तक पंचायती राज संबंधी उपबंधों को जोड़ा गया—

अनु. 243	परिभाषाएँ-जिला, ग्राम सभा, मध्यवर्ती स्तर, पंचायत, पंचायत क्षेत्र, जनसंख्या, ग्राम आदि।
अनु. 243क	ग्राम सभा
अनु. 243ख	पंचायतों का गठन
अनु. 243ग	पंचायतों की संरचना
अनु. 243घ	स्थानों का आरक्षण
अनु. 243ड	पंचायतों की अवधि
अनु. 243च	सदस्यता के लिए निरर्हताएँ
अनु. 243छ	पंचायतों की शक्तियाँ, प्राधिकार और उत्तरदायित्व
अनु. 243ज	पंचायतों द्वारा कर अधिरोपित करने की शक्तियाँ और उनकी विधियाँ
अनु. 243झ	वित्तीय स्थिति के पुनर्विलोकन के लिए वित्त आयोग का गठन
अनु. 243ज	पंचायतों के लेखाओं की संपरीक्षा (अंकेक्षण)
अनु. 243ट	पंचायतों के लिए निर्वाचन
अनु. 243ठ	संघ राज्य क्षेत्रों को लागू होना
अनु. 243ङ	इस भाग का कतिपय क्षेत्रों को लागू न होना
अनु. 243ढ	विद्यमान विधियों और पंचायतों का बना रहना

अनुसूची में जोड़ा गया।

- ❖ **ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज** संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु जयपुर में **'इंदिरा गाँधी पंचायतीराज संस्थान' 1984** ई. में स्थापित किया गया है।

राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994

- ❖ 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के अनुसरण में राजस्थान सरकार ने पुराने अधिनियमों (राजस्थान पंचायत अधिनियम, 1953 एवं राजस्थान पंचायत समिति ओर जिला परिषद अधिनियम-1959) को निरस्त कर एक नया पंचायती राज अधिनियम **'राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994'** के नाम से **23 अप्रैल, 1994** से लागू किया।
- ❖ इस अधिनियम के संदर्भ में बाद में 'राजस्थान पंचायती राज विस्तार नियम, 1996' बनाया। जो 30 दिसम्बर, 1996 से लागू किया गया।
- ❖ समय-समय पर 1994 के अधिनियम में संशोधन किए गए, लेकिन सन् 1999 एवं 2000 में इसमें सबसे ज्यादा परिवर्तन किए गए।
- ❖ वर्ष 2000 में राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 में संशोधन कर पंचायतों में स्थायी समितियों के गठन का प्रावधान किया गया।

पंचायतीराज के 29 विषय

(भारतीय संविधान की 11वीं अनुसूची, अनुच्छेद 243G)

1. कृषि एवं कृषि विस्तार
2. भूमि विकास, भूमि सुधार, चकबन्दी एवं भूमि संरक्षण
3. लघु सिंचाई, जल प्रबंध एवं जल विभाजक (वाटरशैड) क्षेत्र विकास
4. पशुपालन, डेयरी एवं कुक्कुट पालन
5. महिला एवं बाल विकास
6. सामाजिक वानिकी एवं फार्म वानिकी
7. गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम
8. लघु एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
9. खादी, ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योग
10. सार्वजनिक वितरण प्रणाली
11. सामुदायिक परिसंपत्तियों का अनुरक्षण
12. ईंधन एवं चारा
13. सड़कें, पुलिया, नौकायन
14. ग्रामीण विद्युतीकरण (वितरण)
15. ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत
16. अनु.जा.-अनु. जनजाति का कल्याण
17. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
18. तकनीकी प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक शिक्षा

राजस्थान में पंचायती राज का तुलनात्मक विवेचन

क्र.सं.	संस्था का नाम	जिला परिषद (शीर्षस्तर)	पंचायत समिति (खण्ड स्तर)	ग्राम पंचायत (निम्नतम स्तर)
1.	वर्तमान संख्या	41	379	11,218
2.	राजनीतिक प्रमुख	जिला प्रमुख	प्रधान	सरपंच
3.	प्रशासनिक प्रमुख	मुख्य कार्यकारी अधिकारी (C.E.O.)	विकास अधिकारी (B.D.O.)	ग्राम विकास अधिकारी (V.D.O.)
4.	निर्वाचन	जिले को विभिन्न वार्डों में बाँटकर प्रत्येक वार्ड के मतदाता **जिला परिषद सदस्य** चुनते हैं। ये सदस्य अपने में से एक को **जिला प्रमुख** व एक को **उप–जिला प्रमुख** चुनते हैं। (जिला प्रमुख **अप्रत्यक्ष** निर्वाचित)	पंचायत समितियों (खण्ड) को विभिन्न वार्डों में बाँटकर प्रत्येक वार्ड के मतदाता **पंचायत समिति सदस्य** चुनते हैं, जो अपने में से **प्रधान** व **उप–प्रधान** का चुनाव करते हैं। (प्रधान **अप्रत्यक्ष** निर्वाचित)	ग्राम पंचायत क्षेत्र (गाँव/गाँवों) को विभि वार्डों में बाँटकर प्रत्येक वार्ड के मतदा **वार्ड पंच** का चुनाव करते हैं, जो अपने मे एक को **उप–सरपंच** चुनते हैं। ग्राम पंचा क्षेत्र के मतदाता अपने में से ही किसी व्यक्ति को **प्रत्यक्ष** मतदान द्वारा **सरपंच** चुनते हैं (सरपंच प्रत्यक्ष निर्वाचित)
5.	बैठक में भाग लेने वाले सदस्य	(1) **जिला प्रमुख (अध्यक्ष)**	**प्रधान (अध्यक्ष)**	**सरपंच (अध्यक्ष)**
		(2) जिला परिषद सदस्य	पंचायत समिति सदस्य	समस्त वार्ड पंच
		(3) जिले की पंचायत समितियों के सभी प्रधान (विशेषत: राजस्थान में)	सरपंच (पंचायत समिति क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों के)	ग्राम पंचायत क्षेत्र के पंचायत समिति व जिला परिषद सदस्य
		(4) जिले के समस्त विधायक	विधायक (पंचायत समिति क्षेत्र का)	विधायक
		(5) जिले के समस्त लोकसभा सदस्य	जिला परिषद सदस्य (पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त)	**ग्राम विकास अधिकारी** (V.D.O.)
		(6) राज्य सभा सदस्य (यदि उसका नाम उस जिले की मतदाता सूची में है।)	विकास अधिकारी (B.D.O.)	ग्राम सभा की बैठक में ग्राम-पंचायत क्षेत्र की मतदाता सूची में पंजीकृत सभी मतदाता भाग लेते हैं। ग्राम सभा की गणपूर्ति हेतु कुल सदस्य संख्या का 10वाँ भाग उपस्थित होना अनिवार्य है।
		(7) जिला कलक्टर	अन्य नामित सदस्य (विधायक द्वारा)	
		(8) मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO)		
		(9) अन्य नामित सदस्य (सांसद द्वारा)		
6.	क्षेत्राधिकार व कार्य	(1) पंचायत समितियों व राज्य सरकार के मध्य कड़ी के रूप में कार्य करना।	पंचायत समिति स्तर पर शिक्षा (प्रारम्भिक), स्वास्थ्य, पेयजल, आँगनवाड़ी इत्यादि की व्यवस्था करना।	ग्राम पंचायत स्तर पर सफाई, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा आँगनबाड़ी इत्यादि सेवाएँ उपलब्ध कराना तथा गाँवों का समग्र विकास करना।
		(2) ग्राम पंचायतों व पंचायत समितियों द्वारा करवाए जाने वाले कार्यों का	पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायतों से विकास का कार्य	जन्म, मृत्यु एवं विवाह का पंजीकरण करना। **मनरेगा** कार्यक्रम का